प्रस्तावना

पहली आवृत्ति

भारतीय वीणाओं में सितार का स्थान अद्वितीय है। सितार का मूल चाहे सप्ततन्त्री वीणा माना जाय अथवा उसे अमीर खुसरू द्वारा आविष्कृत तीन तारों वाला नवीन वाद्य स्वीकार किया जाय, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि सितार वर्तमान प्रचलित सभी ततवाद्यों में अधिक लोकप्रिय है। इसका कारण है, इसकी संगीत क्षमता। परदे होने के कारण यह सरल वाद्य भी है। निश्चित स्वर के साथ-साथ ठोंक, मींड, सूत एवं गमकादि संगीत के सूक्ष्मतम रस-परिपोषक तत्त्वों के आविर्भाव के लिये इस वाद्य में अत्यधिक गुंजाइश है।

सितार की गत-बन्दिशों का प्रस्तुत सर्जन मरहूम उस्ताद भीकन खाँ ने किया है तथा उनके पुत्र अनवर खां ने गतों का सम्पादन एवं राग विवरण का समावेश किया है। सितार की शिक्षा के लिये गतों का अभ्यास आवश्यक है। पिछले कई वर्षों से इन गतों का अभ्यास हमारे कॉलिज ने अपनाया है, इतनी अनुभव सिद्धि के पश्चात् ही यह प्रकाशन प्रस्तुत किया गया है। यह कोई नवीन आधुनिक सर्जन नहीं है, बल्कि उ० भीकन खाँ ने अपनी कला और अभ्यास के परिपाक स्वरूप गतें सिद्धि कीं और सैकड़ों विद्यार्थियों को सिखाई, उन्हीं गतों का यह संग्रह है। रेडियो और बैठकों में भी यह गतें बजाई जाती हैं। उस्ताद भीकन खाँ के पारिवारिक शिष्यगण और शिष्य-अनुशिष्यगण सब ने इन गतों द्वारा अपनी संगीत-कला जगह-जगह बहाई है। यह प्रवाह भविष्य में भी बढ़ता ही रहेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

भारतीय-संगीत-नृत्य-नाट्य महाविद्यालय का यह नवाँ प्रकाशन है। यह प्रकाशन सितार वाद्य के समस्त प्रेमियों एवं साधकों के लिए उपयोगी बनेगा, ऐसी मुझे आशा है। उ० अनवर खाँ ने यह प्रकाशन करने की अनुमति दी है, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

भारतीय-संगीत-नृत्य-नाट्य
महाविद्यालय, म० स०
विश्वविद्यालय, वडौदा

रमणलाल महेता
आचार्य

दिनांक २०-१-६०

दुसरी आवृत्ति

थोडे ही वर्ष के बाद 'सितार दर्पण' की दुसरी आवृत्ति प्रसिद्ध हो रही है। इस पुस्तक की उपयोगिता और संगीत प्रेमियोंकी स्वीकृति का यह चिन्ह है। इस आवृत्ति को अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधार किया है। आशा है कि यह नवीन आवृत्ति संगीत और सितार शिक्षण के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनेगी।

दिनाक २०-७-६५

रमणलाल महेता
आचार्य

निवेदन—

मानव-जीवन में कला का स्थान अद्वितीय है। जीवन के झझटों से ऊबकर प्रत्येक मनुष्य सुख और आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करना चाहता है। यह शान्ति और आनन्द उसे साहित्य एव कला द्वारा ही मिल सकते हैं। कला के कई प्रकारों में सगीतकला अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। हमारे प्राचीन भारतीय आचार्यों ने सङ्गीतकला का सूक्ष्म अध्ययन किया था और मनुष्य की प्रत्येक अन्तरग भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिये भी सूक्ष्म विचार किया था। इसी कारण उन्होंने अपने शिष्यवर्ग के अध्ययन के लिये ग्रन्थों का निर्माण किया था। सगीत वह सागर है जिसमें अनेक ग्रन्थ रूपी रत्न सगीतप्रेमी जनता को मिलते हैं और भविष्य में भी मिलते रहेंगे। जिस प्रकार सागर की लहरों को कोई बाँध नहीं सकता, वैसे ही सगीतशास्त्र पर जितना साहित्य लिखा जाय उतना कम है।

भारतीय वाद्यों के क्षेत्र में सितार अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। वह एक ऐसा ततुवाद्य है कि यदि उसे कलात्मक ढग से बजाया जाय तो मनुष्य अपने आपको भूल सा जाता है। लेकिन कलात्मक ढग से बजाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को उसका प्रारम्भिक अध्ययन करना आवश्यक है। इसी हेतु को ध्यान मे रखकर, अपने स्नेही वर्ग के तकाजे पर मैंने थोडा सा प्रयत्न करने का विचार किया। मेरे स्व० पिता मीरन खाँ बन्नू खाँ साहब जो सितार वाद्य के प्रख्यात उस्ताद थे, उन्होंने अपने शिष्यवर्ग के लिए कई सुन्दर गतें बनायी थीं जो आज भी म्युजिक कॉलेज, बड़ौदा मे सितारवर्ग के छात्रों को सिखाई जाती हैं। उनकी गतो का अध्ययन और अभ्यास कर कई छात्रों ने नाम भी कमाया है। इतना होते हुए भी उनकी गतो की छपी हुई पुस्तक के रूप में प्रगट न हो सकना यह मेरे लिये दु ख की बात

थी। मैंने उन्हीं की हस्तलिखित गतों का संशोधन और अध्ययन कर 'सितार-दर्पण' पुस्तक के रूप में प्रगट करना चाहा। कई कठिनाइयां मेरे सामने थीं, लेकिन मेरे प्रयत्नों को प्रोत्साहित करना तथा मेरा हौसला बढ़ाने के लिये माननीय प्रिन्सिपल श्री आर० सी० मेहता साहब ने सहायता दी और मैं अपने कार्य में सफल हुआ। छात्रों के सामने सितार दर्पण रखते हुए मुझे आनन्द होता है। यह मेरा पहला प्रयत्न है। वास्तव में मेरा कार्य तो तभी सफल होगा जब कि "सितार दर्पण" का विशेष लाभ संगीत-प्रेमी उठायेंगे और सितार प्रेमी छात्र इसे अपनाकर मुझे आभारी करेंगे।

प्रथम संस्करण के प्रकाशन के बाद केवल तीन ही सालमें संगीत प्रेमीओंने उसे अपनाया और द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के समय योग्य सूचनाएं भी की, जिनके अनुसार इस द्वितीय सम्करणमें झाला-वादन के सरल प्रकार के बारेमें एक प्रकरण और कुछ बीस रागों की गतों के सरल तोड़ों का अन्तर्भाव हम कर सके हैं।

इस पुस्तक को तैयार करनेमें हमारे कॅलिज के सितार-विभाग के सीनियर प्राध्यापक श्री नरसिंहप्रसाद त्रिवाणी साहब द्वारा समग्र पुस्तक का आमूलाग्र निरीक्षण करने में और सब गतों को कु० इसुमति पटेल से लिखवाकर फिर से देख लेने मे जो सहयोग मिला हैं, यह उपकार मैं कभी नहीं भूल सकता।

संगीत-शास्त्र के विषय में ज्यादा विवेचन यहाँ पर अनुपयुक्त समझकर सिर्फ राग के स्वरूप ध्यान में आ जाय इसलिये राग का संक्षिप्त परिचय देने को सोचकर श्री मधुसूदन ठक्कर और श्री ज्योतिर्धर देसाई से मैंने काफी मदद ली, इनका भी मैं ऋणी हूँ।

मेरे छोटे भाई श्री सरवरखाँ पठान, गुरुबन्धु श्री बाबुराम कदम और श्री योगेन्द्र दवे तथा अन्य कई मित्रों जैसे की श्री प्रभाकर हर्डीकर जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में जो मदद की हैं, उनका मैं बेहद उपकार मानता हूँ।

मेरे पिता स्व० भीकनखाँ साहबका परिचय देना भी मेरा कर्तव्य है। "खाँ साहब भिक्नखा बन्नूखा का जन्म ई० सन १८८७ में भारत के बड़ौदा शहर में हुआ था। आप बड़ौदा शहर के मुख्य सितारवादक थे। आपके दादा खाँ साहब मीराबख्श खा जयपुर के रईस थे। मीराबख्श खाँ एक अच्छे गायक और सितारवादक थे। खाँ साहब के दो पुत्र थे। (१) बन्नूखाँ (२) अम्मूखाँ। मीराबख्श ने अपने दोनों पुत्रों को गायन की तालीम दी और सितारवादन का भी अच्छा ज्ञान कराया। तदुपरांत सितारनवाज उस्ताद वजीर खाँ के शिष्य बनाकर उनको सीतारवादन में कुशल बनाया। खाँ साहब मीराबख्श खाँ के स्वर्गवास के बाद खाँ साहब बन्नू खाँ और अम्मूखाँ बड़ौदा आये। बड़ौदा दरबार में श्री खंडेराव महाराज की सेवा का लाभ प्राप्त करके दोनों भाई राज्यगायक बने। खाँ साहब के दो पुत्र थे—(१) खा साहब भीकन खाँ, (२) वजीर खाँ साहब। खाँ साहब बन्नूखाँ ने भीकनखाँ साहब को १० वर्ष की आयु से ही गायन की तालीम देनी शुरू कर दी, लेकिन भीकन खाँ अचानक बीमार पड़ जाने के कारण गायन की तालीम बन्द करनी पड़ी। फिर स्वस्थ होने पर इन्हें सितारवादन की शिक्षा दी गयी। पिताजी के स्वर्गवास के बाद इन्हें राजदरबार में मुख्य सितारवादक का स्थान प्राप्त हुआ। हिन्दुस्तानी ऑरकेस्ट्रा में भी आपने अपनी कुशलता का परिचय दिया। उन्हीं दिनों आपकी नियुक्ति भारतीय संगीत विद्यालय में हुई। भीकनखा साहब एक अच्छे सितारवादक, बीनकार और दिलरुबा के साथ-साथ जलतरंग वादक भी थे। खाँ साहब भीकनखाँ की सितारवादन की शैली का जवाब नहीं था और उनकी सितार शिक्षण पद्धति उच्च प्रकार की थी।

आपने हिन्दुस्थान की अनेक संगीत कान्फ्रेंसो में भाग लिया था। ई० सन १९१९ में बनारस में ऑल इण्डिया म्यूजिक कान्फ्रेंस में आपने अपने कला कौशल द्वारा "सितारी विशारद" की पदवी प्राप्त की। आप बड़े नम्र और शांत स्वभाव के थे। आज भी आपके अनेक शिष्य बड़ौदा में मौजूद हैं। १२ जून १९४२ को आप स्वर्गवासी हुए। आपकी मृत्यु से संगीतप्रेमियों को एक उत्तम सितारनवाज़ से हमेशा के लिये वंचित होना पड़ा।

वर्तमान समय में आपके दो सुपुत्र उस्ताद अनवरखाँ और उस्ताद मनवरखाँ म० स० विश्वविद्यालय बड़ौदा के संगीत-नृत्य-नाट्य महाविद्यालय में सितार-शिक्षा देनेका पवित्र कार्य कर रहे हैं।

आपके और रिश्तेदारों में स्व० उ० फतेमहम्मद खाँ, स्व० उ० गुलाम-मोहम्मदखाँ, स्व० प्रो० ईनायत हुसैनखाँ जिरारिये और स्व० उ० जमालुद्दीन खाँ बीनकार और स्व० उ० अमीरखाँ गुलामसागर भी थे।"

मेरे परम स्नेही, सेनीया घराना बाज के प्रसिद्ध सितारनवाज उस्ताद विलायत खाँ साहब ने यह सितार दर्पण पुस्तक पढ़कर एक पत्र में लिखा है—

"सितार और उसकी तालीम के बारे में शास्त्रीय दृष्टि से सुन्दर एवं असाधारण इस किताब को पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। इतना कहना काफी होगा की इस किताब की गतें बहुत ऊँचे प्रकार की हैं और जो विद्यार्थी इस वाद्य को बजाने की शुरूआत करते हैं उनको यह किताब बड़ी सहायता देगी। इसकी बंदीशें बहुत अच्छी हैं और तानें रागस्वरूप खड़ा करती हैं। मैं इस किताब की सफलता चाहता हूँ और विद्यार्थियों को इसे उपयोग में लाने की सलाह देता हूँ।"

उस्ताद विलायत खाँ के अतिरिक्त अन्य कई महानुभावों ने भी अपनी उदार सम्मति देकर मुझे कृतज्ञ किया है, उन सब का आभार मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

अन्त में इस पुस्तक को प्रकाशित कराने में बड़ौदा म्यूज़िक कॉलेज के प्रिंसिपल, श्री आर० सी० महेता साहब ने जो सहायता दी है उनका मैं विशेष ऋणी हूँ।

अनवर खाँ भीकन खाँ

सम्पादक

अनुक्रमणिका

राग-परिचय और गत-बंदिश

प्रथम विभाग : ११ राग

द्वितीय विभाग : ११ राग

तृतीय विभाग : ११ राग

चतुर्थ विभाग : १५ राग

परिशिष्ट

रागों की अकारादि सूचिका

भारतीय संगीत-नृत्य-नाट्य महाविद्यालय ग्रन्थ श्रेणी

		कींमत
(१)	एकांकी-स्वरूप अने साहित्य (१९५६) लेखक:—श्री नन्दकुमार पाठक	२–५०
(२)	नाट्य शिक्षणनां मूलतत्त्वो (१९५६) लेखक:—श्री जशवन्त ठाकर	३–५०
(३)	गुजराती धंधादारी रंगभूमिनो इतिहास (१९५६) लेखक:—श्री धनसुखलाल महेता	२–५०
(४)	नाट्यशास्त्र अने आचार्य अभिनवगुप्ताचार्य (१९५६) लेखक:—प्रो. श्री के. के. शास्त्री	२–७५
(५)	भरतानाट्यम् एन्ड अदर डान्सेज़ ऑफ तामिलनाड (१९५७) लेखक:—श्री ई. कृष्ण आयर	१–७५
(६)	अभिनेय नाटको (१९५८) लेखक:—श्री धीरुभाई ठाकर	४–०
(७)	संक्षिप्त भरत नाट्यशास्त्र (१९५८) लेखक:—श्री के. के. शास्त्री	३–०
(८)	गुलाब (१९५८) लेखक:— स्व० श्री नगीनदास मारफतिया	२–०

युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स सेल्स युनिट
युनिवर्सिटी प्रेस प्रेमिसिज़–राजमहल रोड, वडौदा
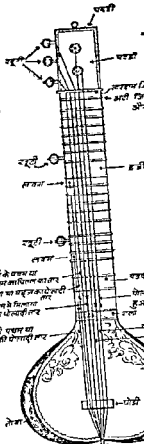
सितार-१
खूँटी
पोड़ी
तारदान
लकड़ी हड्डी या
पितल की इसमें
सब तार बन्धे होते हैं।
दूसरा तार
तार

सितार-२
(सा)
(प)
(प)
(सा)
(म)
(सा)
(सा)
मध्य सप्तक
तार सप्तक
परदे
मिजराब

तरफ़दार सितार – ३

सुरबहार

मिजराब के नकशे

१ २ ३ ४ ५ ६

दोरा

दोरा
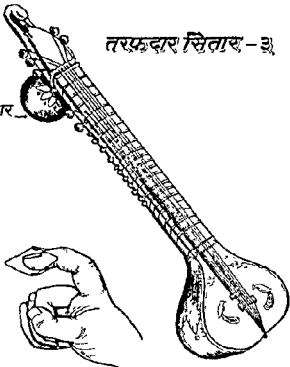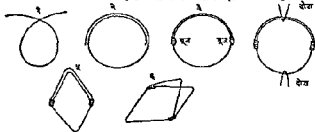
सितार वाद्य का परिचय

सितार के प्रकार—

सितार के दो प्रकार प्रचलित हैं—(१) चल ठाठ वाला और (२) अचल ठाठ वाला। चल ठाठ वाले मे सत्रह पर्दे और अचल ठाठ वाले मे उन्नीस पर्दे होते हैं। प्रथम तरबदार सितार होता है और दूसरा बगैर-तरब का। मीड का काम दिखाने के लिए बगैर तरब का सितार अच्छा होता है, जो कि मूल्य मे भी सस्ता होता है। अचल ठाठ वाले सितार की आवाज तेज होती है। पर्दे पर तार खींचने से कम-से कम चार स्वर की मीड निकलनी चाहिए। इस कारण दाडी ज्यादा चौडी होनी आवश्यक है।

बाज—

मिजराब के बोलो मे अलग अलग स्वर-रचना करके तालबद्ध बजाने को "बाज" कहते हैं।

सितार के लिए दो प्रकार के बाज प्रसिद्ध हैं—(१) मसीतखानी बाज, (२) पूरब बाज या रजाखानी बाज।

मसीतखानी बाज मसीतखाँ के नाम मे और रजाखानी बाज गुलामरजा के नाम मे प्रचार मे आए हैं।

मसीतखानी दिल्ली बाज मे गायकी के ढङ्ग से मीड, गमक इत्यादि का उपयोग होता है। इस बाज की गतें हमेशा विलम्बित या मध्यलय की होती हैं।

पूरब (लखनवी) बाज में मसीतखानी बाज जैसी गम्भीरता नही होती और द्रुतलय का प्राधान्य होता है। इस बाज मे मिजराब का काम ज्यादा होता है।

तरबें—

सितार के पर्दे के नीचे जो तार लगे रहते हैं, उन्हें 'तरबें' कहते हैं। तरबों के सितार में तरबों की संख्या ११ से १४ तक होती है।

सितार मे जो राग बजाना हो, उस राग के स्वर के अनुसार मन्द्र सप्तक के पंचम से शुरू होकर अनुक्रम मे राग में आने वाले हरेक स्वर की नीचे की तरबें मिलाई जाती हैं।

कुछ सितार की तरबें बाहर से होती हैं और कुछ की तरबें दंडी के अन्दर से होती हैं। अन्दर की तरबें वाला सितार ज्यादा अच्छा होता है और ऐसे सितार की तरबें मंद्र सप्तक के निषाद से शुरू करके, जो राग बजाना हो, उस राग के स्वरों मे अनुक्रम से मिलायी जाती हैं।

तरबों के तार अन्दर से बराबर स्वर मे मिलने चाहिए और जब तार बराबर मिल जाएँगे तब ऊपर के स्वर बजाने से नीचे के स्वरो के तार काँपने लगेंगे, फलतः उन्हीं स्वरों की प्रतिध्वनि (आवाज) निकलेगी।

सितार की लकड़ी—

सितार तीन प्रकार की लकड़ी से बनाया जाता है। तून, सेवन और सागवान। तून की लकड़ी का सितार अच्छी आवाज देता है। तून पंजाब में ही मिलता है। सेवन महाराष्ट्र और कोंकण में प्राप्त होती है। इस लकड़ी के सितार की आवाज अच्छी होती है, किन्तु तून की लकड़ी जैसी नहीं। सागवान हर जगह मिलता है। इस लकड़ी का साज सबसे घटिया प्रकार का होता है। अगर सागवान की लकड़ी पर नक्काशी का

काम अच्छा होने की वजह से अधिकाश कारीगर इसी लकड़ी को पसंद करते हैं और सितार बनाते हैं।

सितार के तार—

सितार मे सात तार होते हैं। पहला, पाँचवा, छठवां और सातवां तार लोहे (स्टील) का होता है। दूसरा, तीसरा और चौथा तार पीतल का, तांबे का अथवा पश्चरसी का होता है।

दूसरे और तीसरे तार से चौथा तार कुछ मोटा होता है। छठवां और सातवां तार एक ही प्रकार का होता है। पहला तार पाँचवे, छठवें और सातवें तार से कुछ मोटा होता है।

सितार मिलाने का तरीका—

पहले कोई भी एक षड्ज निश्चित करें। बाद मे नं० २ और नं० ३ को निश्चित षड्ज स्वर मे मिलाएँ। पहले तार को दूसरे और तीसरे तार के षड्ज स्वर के मध्यम स्वर मे मिलाएँ। चौथे तार को अणु मद्र सप्तक के पंचम स्वर मे मिलाएँ। पाँचवें तार को मद्र सप्तक के पंचम स्वर मे मिलाएँ और छठवें तथा सातवें को मध्य और तार षड्ज स्वर मे मिलाएँ।

पर्दे—

सितार की दण्डी पर स्वरो की जगह निश्चित करने के लिए जो पीतल या जर्मनसिल्वर के टुकड़े लगाए जाते हैं उन्हें "पर्दे" या "सुन्दरी" कहते हैं।

ताँत—

"चमड़े की जिस डोरी से पर्दे बाँधे जाते हैं उसे तांत कहते हैं। यह तांत बकरे की आँतों की बनी हुई होती है।

तूँबा

सितार के तूँबे में कद्दू की लौकी (तुंबी) का उपयोग होता है। लकड़ी के तूँबे भी बनते हैं मगर वे महँगे होते हैं। कद्दू की लौकी (तुंबी) के तूँबे महाराष्ट्र में ज्यादा होते हैं। सबसे अच्छी लौकी (तुंबी) अमरीका के जंजीबार से आती है, किन्तु वह महँगी होती है। महाराष्ट्र के तूँबे ज्यादा पतले और मूल्य में बहुत सस्ते होते हैं।

मेरु—

खूँटियों की तरफ सितार की दण्डी के ऊपर सफेद सींग की या हाथी दाँत की दो पट्टियाँ होती हैं। एक छिद्र वाली और दूसरी तार लगाने के लिए। जिस पट्टी में तार लगाए जाते हैं, उसे "मेरु" कहते हैं। उसे "अटी" भी कहते हैं। यह अटी सितार की पहली पट्टी कहलाती है। दूसरी पट्टी जो सूराख वाली होती है उसे "तारदान" कहते हैं।

घोड़ी घुरच—

तूँबे के ऊपर लकड़ी की एक तबली होती है। तबली के ऊपर मध्य में हड्डी की या हाथी दाँत की १ से १॥ इंच ऊँचाई की एक छोटी सी चौकी होती है। उस पर तार लगाए जाते हैं। उसे "घोड़ी" या "घुरच" या "ब्रिज" कहते हैं।

तारदान या लँगोटी—

तूँबे के नीचे के भाग में एक छोटा सा टुकड़ा होता है, जिसमें सब तार गाँठ लगाकर बाँधे जाते हैं उसे "तारदान" या "तार गहन" या लँगोटी कहते हैं।

सितार के ठाठ—

सितार के दो ठाठ होते हैं—चल और अचल। जिस सितार के मध्य सप्तक में कोमल गांधार और कोमल निषाद के पर्दे होते हैं, उसको.

अचल ठाठ का सितार कहते हैं और जिस सितार में यह दो पर्दे नहीं होते, उसको चल ठाठ का सितार कहते हैं। उत्तर भारत में चल ठाठ के सितार ज्यादा देखने में आते हैं। कुछ प्रकार के सितारों में मद्र सप्तक में कोमल धैवत का पर्दा भी नहीं होता।

कड़जुला (चिकारी)

सितार के दाएँ तरफ के दो अन्तिम तारों को "कड़जुला" या "पपैया" या चिकारी कहते हैं।

गत—

सितार वादन में आने वाली तालबद्ध स्वर-रचना को "गत" कहते हैं। उसके बोल दा दिर दा रा होते हैं।

तोड़ा—

सितार में अलंकारयुक्त तान या टुकड़ों को "तोड़ा" बोलते हैं।

झाला—

विशिष्ट लयकारी के साथ मिजराब वाली उङ्गली से या उसी हाथ की छोटी उङ्गली से कड़जुला तारों को बजाने के कार्य को "झाला" कहते हैं। सितार के चिकारी के आखिर के दो तारों पर मिजराब से "रा" प्रहार करके झाला बजाया जाता है। झाला कोई भी एक स्वर को ज्यादा मात्रा तक लम्बाने का एक प्रकार है और वह सितार के बाज का मुख्य अङ्ग है।

मींडकाम (जोड़काम)

एक ही पर्दे पर कुछ स्वरों को अलग अलग गमक के साथ बजाने की क्रिया को "मींडकाम" या "जोड़काम" या "आलाप" कहते हैं।

जोड़ का अर्थ है जोड़ना। जब हम मद्र, मध्य या तार सप्तक में आलाप करते हैं, तब बाद में उसकी गति ज्यादा करते हैं। जोड़ में मींड का प्रयोग बहुत कम होता है। मगर कम्पन और गमक का प्रयोग ज्यादा होता है। स्वरों के समूह को आपस में अच्छी तरह से जोड़ने की क्रिया को "जोड़" कहते हैं।

मींड—

एक स्वर से दूसरे स्वर पर लगातार जाने की क्रिया को "मींड" कहते हैं। सितार पर मींड दो तरह से बजायी जाती है —

(१) सीधी मींड—"सा" के पर्दे पर तर्जनी और "रे" के पर्दे पर मध्यमा रखकर, "रा" बजाकर तार को खींचकर "ग", "म" और "प" तक ले जाने से तीन स्वरों की 'मींड' निकलती है।

(२) पहले तार को खींचकर "प", "म", "ग" और "रे" पर वापिस आने की क्रिया को "उल्टी मींड" कहते हैं।

बोल—

मिजराब के आघात से निकलने वाली आवाज को "बोल" कहते हैं। "बोल" तीन प्रकार के होते हैं—दा, रा और दिर। अपनी ओर की मिजराब से होने वाली चोट से जो आवाज निकलेगी, उसे 'दा' कहते हैं और बाहर की ओर चोट करने की क्रिया को 'रा' कहते है। 'दा' और 'रा' की एक एक मात्रा निश्चित है। दिर की भी एक मात्रा होती है, जिसमे 'दा' और 'रा' अनुक्रम से एक साथ आधी आधी मात्रा मे बजाए जाते हैं।

मिजराब—

सितार बजाने की टोपी को मिजराब कहते हैं। यह पीतल की या लोहे की बनी हुई होती है। यह दाहिने हाथ की पहली अंगुली पर इस प्रकार पहनी जाती है कि तार नाखून के ऊपर रहे।

सूत और घसीट—

सूत और मीड में इतना अन्तर है कि मीड का उपयोग गाने में या मिजराब वाले वाद्यों में होता है (सितार में), और सूत का उपयोग गज से बजाने वाले साजों में, जैसे कि सारंगी, दिलरुबा में होता है और उसकी रीति मीड-जैसी ही होती है।

सितार या पर्दे वाले बाजों में जिस पर्दे पर उँगली रखी हो, वहाँ से जिस पर्दे तक घसीट बजाना हो, वहाँ तक उँगली को घिसकर ले जाने की क्रिया को "घसीट" बोलते हैं।

कण—

किसी स्वर का उच्चारण करते या बजाते समय उसके आगे-पीछे के स्वर को सहज स्पर्श करके उस मुख्य स्वर को लेने की क्रिया का "कण" कहते हैं।

जैसे कि—"नि सा", यहाँ निषाद का सहज स्पर्श करके 'सा' पर आने से, 'सा' के ऊपर निषाद का कण है, ऐसा कहा जाता है।

जमजमा—

सितार में दो स्वरों को एक के बाद एक, कुछ तेजी से बजाने की क्रिया को जमजमा कहते हैं, जैसे कि सा रे, रे ग, ग म, ग म और दा रा दा रा दा रा दा रा।

कृन्तन—

कृन्तन का प्रयोग सितार में ऊँचे स्वर से नीचे स्वर पर आने के समय इस प्रकार होता है—बाएँ हाथ की उँगलियों से झटके के साथ तार को दबाकर एकदम छोड़ने से दो या अधिक स्वर जल्दी से दिखाये जाते हैं, मगर एक स्वर के साथ दूसरे का सम्बन्ध कायम रहना चाहिए। इस कार्य में आवाज अटूट होनी चाहिए। इस कार्य को कृन्तन कहते हैं।

कम्पन—

सितार के पर्दे पर धीरे-धीरे उँगली हिलाकर तार को कम्पित करने की क्रिया को "कंपन" कहते हैं।

मुरकी—

मिजराब से एक ही झटके से तीन-तीन स्वरों को बजाने की क्रिया को "मुरकी" कहते हैं। जैसे नि—सरेसा, मगरे।

गिटकरी—

एक पर्दे पर उँगली रखकर, दूसरे हाथ से मिजराब से टकोर लगाकर चार स्वरों को एक साथ बजाने की क्रिया को "गिटकरी" कहते हैं। जैसे—सानिसारे, रेसारेग।

सुरबहार—

सितार का एक बड़ा स्वरूप सुरबहार है। लम्बा और विशाल स्वरूप, चौड़ी डंडी, बड़ा तूँबा तथा ऊपर के भाग में एक छोटा तूँबा भी होता है, उसे "सुरबहार" कहते हैं।

सुरबहार खासतौर पर जोड़ और आलाप के लिए है। इसमें गत-तोड़े अच्छे नहीं बजते। इसमें मींडकारी, जमजमा, गमक और तरह-तरह की ततकारी का काम बज सकता है। रहीमखाँ, इमदादखाँ के शिष्य आसानी से सात स्वरों की मींड लेते थे, यह कार्य कठिन साधना से प्राप्त होता है।

गमक—

स्वर को इस प्रकार हिलाकर बजाया जाय, जिससे सुनने वालों को आनन्द हो, उसे "गमक" कहते हैं। गमक के कई प्रकार हैं, जैसे—कंपित, जमजमा, मुरकी, गिटकरी, घसीट, मींड इत्यादि। सितार में आलाप और गत-तोड़ा बजाने में गमक का उपयोग होता है।

पर्दे में स्वर—

१	मं॒	मध्यम तीव्र	—	मंद्र सप्तक
२	प॒	पंचम	—	,, ,,
३	ध॒	कोमल धैवत	—	,, ,,
४	ध॒	शुद्ध ,,	—	,, ,,
५	नि॒	कोमल निषाद	—	,, ,,
६	नि॒	शुद्ध ,,	—	,, ,,
७	सा	षड्ज	—	मध्य सप्तक
८	रे	ऋषभ	—	,, ,,
९	ग॒	कोमल गांधार	—	,, ,,
१०	ग	शुद्ध गांधार	—	,, ,,
११	म	शुद्ध मध्यम	—	,, ,,
१२	मं	तीव्र मध्यम	—	,, ,,
१३	प	पंचम	—	,, ,,
१४	ध	धैवत	—	,, ,,
१५	नि॒	कोमल निषाद	—	,, ,,
१६	नि	शुद्ध निषाद	—	,, ,,
१७	सां	तार षड्ज	—	तार सप्तक
१८	रें	ऋषभ	—	,, ,,
१९	गं	गांधार	—	,, ,,
२०	मं	शुद्ध मध्यम	—	,, ,,

बीस पर्दे वाला यह प्रकार "अचल ठाठ" का है।

बैठक—

सितार बजाने के लिए पांव की चौकड़ी या पालती लगाकर बैठना चाहिए। कुछ लोग उल्टी चौकड़ी लगाकर भी बैठते हैं। इस बात

का ध्यान रहे कि पैर तुंबे की तरफ न हो। बायाँ घुटना दाबकर और दायाँ घुटना खड़ा रखकर भी लोग बैठते हैं। उल्टी पोस्ती की बैठक देवियों के लिए अच्छी है।

बजाने की रीति—

सितार बाएँ हाथ से बजाया जाता है। सितार के गले में जो सफेद पट्टी लगी रहती है उसकी खूटियों की ओर किनार पर दाएं हाथ का अंगूठा रखना चाहिए और मिजराब का आघात सफेद पट्टी तथा घोड़ी के बीच की जगह पर करना चाहिए।

विशेष सूचनाएँ—

बजाते समय तार को बराबर पर्दे के ऊपर न दबाएँ। इस तरह दबाने से आवाज धीमी निकलती है। पर्दे पर उङ्गली इस प्रकार रखनी चाहिए कि पर्दे का स्पर्श न होने पाए। इस तरह बजाने से आवाज साफ और सुरीली निकलती है।

सितार बजाते समय पर्दे की ओर न देखें, तांत की ओर देखें। सितार की सुरक्षा के लिए कपड़े का खोल (गिलाफ) बनाएँ। लकड़ी की पेटी सबसे अच्छी रहती है। सितार पर हवा का प्रभाव बहुत जल्द होता है। हवा लगने से मिलाया हुआ सितार बेसुरा हो जाता है। इसलिए उसे हमेशा गिलाफ में ही रखें। कपड़े के गिलाफ में रुई भरी हुई हो तो अच्छा है। खोल चढ़ा रहने से हवा के प्रभाव से सितार बच जाता है। सितार ऐसी जगह रखा जाय, जहाँ तांत में जन्तु न लगें और चूहे काटने न पाएँ।

स्वरलिपि चिह्न परिचय

म़ यह चिह्न मन्द्र सप्तक का है।

मं यह चिह्न तीव्र स्वर का है।

ग॒ यह चिह्न कोमल स्वर का है।

सां यह चिह्न तार सप्तक का है।

⌣ सारे इस चिह्न में जितने स्वर लिखे जाएँगे एक मात्रा में माने जाएँगे।

– यह चिह्न एक मात्रा रुकने का है।

ताल चिह्न

× यह निशान सम का यानी पहली ताल का है।

२ यह निशान दूसरी ताल का माना जाएगा।

० यह निशान खाली यानी जहाँ ताल नहीं है वहाँ का है, अर्थात् खाली का है।

३ यह निशान तीसरी ताली का है।

प्राथमिक अलङ्कार या पलटे

प्रथम १२, अलंकार (पलटे) प्रथम वर्ष

१—सा रे ग म	प ध नि सां	सां नि ध प	म ग रे सा
१ दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा
२ दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा
३ दिर दिर दा रा	दा रा दा रा	दिर दिर दा रा	दा रा दा रा
४ दा दिर दा दा	दिर दा दा रा	दा दिर दा दा	दिर दा दा रा

२—सा सा रे रे	ग ग म म	प प ध ध	नि नि सां सां
सां सां नि नि	ध ध प प	म म ग ग	रे रे सा सा
१ दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा
२ दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दा दा	दा रा दा रा
३ दिर दिर दा रा	दा रा दा रा	दिर दिर दा रा	दा रा दा रा
४ दा दिर दा दा	दिर दा दा रा	दा दिर दा दा	दिर दा दा रा

३—सा सा सा सा	रे रे रे रे	ग ग ग ग	म म म म
प प प प	ध ध ध ध	नि नि नि नि	सां सां सां सां

सां सां सा सां	नि नि नि नि	ध ध ध ध	प प प प
म म म म	ग ग ग ग	रे रे रे रे	सा सा सा सा
१ दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा	दा रा दा रा
२ दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा
३ दिर दिर दा रा	दा रा दा रा	दिर दिर दा रा	दा रा दा रा
४ दा दिर दा दा	दिर दा दा रा	दा दिर दा दा	दिर दा दा रा

४-सा रे ग	रे ग म	ग म प	म प ध	प ध नि	ध नि सां
सां नि ध	नि ध प	ध प म	प म ग	म ग रे	ग रे सा
दा रा-दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा

५-सा रे	सा रे ग	रे ग	रे ग म
ग म	ग म प	म प	म प ध
प ध	प ध नि	ध नि	ध नि सां
सां नि	सां नि ध	नि ध	नि ध प
ध प	ध प म	प म	प म ग
म ग	म ग रे	ग रे	ग रे सा
दा रा	दा रा दा	दा रा	दा रा दा

ताल त्रिताल, मात्रा १६

ताल के चिह्न	×				२				०				३			
मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
तबले के बोल	ना	धी	धीं	ना	ना	धी	धी	ना	ना	ती	तीं	ना	ना	धीं	धी	ना
स्वर—	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
सितारके बोल	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

ताल एकताल, मात्रा १२

	×		०		२		०		३		४	
मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तबले के बोल	धी	धी	धागे	तृक	तू	ना	क	ता	धागे	तृक	धी	ना

ताल झपताल, मात्रा १०

×		२			०		३		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

ताल दादरा, मात्रा ६

×			०		
१	२	३	४	५	६
धा	धी	ना	धा	तू	ना

———

सितार के मुख्य बोल

दा रा दिर

← → ↔

सितार बजाने के मुख्य ४ प्रकार:—

१ दारा दारा दारा दारा

२ दादिरदारा दारा दारा

३ दिर दिर दारा दारा दारा

४ दादिर दादा दिर दादारा

६—सा ग | रे म | ग प | ग ध | प नि | ध सां
सां ध | नि प | ध म | प ग | म रे | ग सा
दा रा | दा रा | दा रा | दा रा | दा रा | दा रा

७—सा सा | सा रे ग | रे रे | रे ग म
ग ग | ग म प | म म | म प ध
प प | प प नि | ध ध | ध नि सां
सां सां | सां नि ध | नि नि | नि ध प
ध ध | ध प म | प प | प म ग
म म | म ग रे | ग ग | ग रे सा
दा रा | दा रा दा | दा रा | दा रा दा

८—सा रेरे ग म | रे गग म प
ग मम प ध | म पप ध नि
प धध नि सां | सां निनि ध प
नि धध प म | ध पप म ग
प मम ग रे | म गग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा

९—सा रेरे सा ग | रे गग रे म
ग मम ग प | म पप म ध
प धध प नि | ध निनि ध सा
सा निनि सा ध | नि धध नि प
ध पप ध म | प मम प ग
म गग म रे | ग रेरे ग सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा

१०—सा रेरे सारेरे गम | रे गग रेगग मप
ग मम गमम पध | म पप मपप धनि
प धध पधध निसा | सा निनि सांनिनि धप
नि धध निधध पम | ध पप धपप मग
प मम पमम गरे | म गग मगग रेसा
दा दिर दादिर दारा | दा दिर दादिर दारा

११—सारेरे गसा रेरेग मम | रेगग मरे गगम पप
गमम पग ममप धध | मपप धम पपध निनि
पधध निप पधनि सांसां | सांनिनि धसां निनिध पप

राग—यमनकल्याण

मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

		गग	रे सासा नि़ सा
		दिर	दा दिर दा रा
रे रे ग रेरे	ग मंमं प मं	ग रे सा रेरे	ग मंमं प ध
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
नि धध प मं	ग मंमं प मं	ग रे सा	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

अन्तरा—

		गग	रे सासा नि़ सा
		दिर	दा दिर दा रा
प़ धध़ नि़ रे	नि़ रेरे ग मं	गम गरे सा	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दिर दा	

राग यमन कल्याण

यह राग कल्याण थाट से निकलता है। इस राग में मध्यम तीव्र तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह और अवरोह में सब स्वर लगते हैं, इसलिए राग की जाति सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। इस राग का वादी स्वर गांधार और सम्वादी स्वर निषाद है। यह राग पूर्वाङ्ग प्रधान है, राग विस्तार पूर्वाङ्ग में ज्यादातर वैचित्र्यपूर्ण रहता है। यह आसान और एक मधुर आलाप प्रधान राग है। आरोह में कुछ लोग षड्ज और पंचम का अल्प प्रयोग करते हैं। यह राग रात्रि में पहले प्रहर में गाया-बजाया जाता है।

आरोह —सा रे ग, मं प, ध, नि सां।

अवरोह —सां नि ध, प, मं ग, रे सा।

पकड़ —नि रे ग रे, सा, प मं ग, रे, सा।

स्थायी का स्वरूप —ग, रे सा, नि रे, सा, नि ध, प, प ध नि, ध नि, रे, सा ग, रे ग, मं प, प मं प, ध, प मं प, नि ध प, प मं ग, रे ग, रे, नि रे सा, नि रे ग मं प, नि ध प, मं ध नि, ध सां, नि रें सा नि ध प मं ग रे, ग रे, नि रे सा।

अन्तरा का स्वरूप —प ग, प ध प, सां, नि रें सां, नि रें गं रें सां, रें सां, नि ध, प, मं प, नि ध प, ध प मं ग रे, प मं ग रे, नि ध प, मं ग, रे, नि रे सा।

सितार-दर्पण
२१
राग—यमनकल्याण
मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
गग । रे साসा नि सा
दिर । दा दिर दा रा
रे रे ग रेरे । ग मंमं प मं । ग रे सा रेरे । ग मंमं प प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
नि धध प मं । ग मंमं प मं । ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा
अन्तरा—
गग । रे सासा नि सा
दिर । दा दिर दा रा
प धध नि रे । नि रेरे ग मं । गम गरे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दिर दा

राग – यमनकल्याण

मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

तोड़े—

गग रे सासा नि सा

१—रे रे ग रेरे | ग मंमं प मं | मंधप निध निरे गग | रे सासा नि सा

२—रे रे ग रेरे | ग मंमं प मं | निरेरे गमं गरे गग | रे सासा नि सा

३—रे रे ग रेरे | ग मंमं प मं | गरेरे निरे गरे गग | रे सासा नि सा

४—रे रे ग रेरे | ग मंमं प मं | गमंमं पमं गरे गग | रे सासा नि सा

५—रे रे ग रेरे | ग मंमं प मं | निपध पमं गरे गग | रे सासा नि सा

६—रे रे ग रेरे | निरेरे गरे निध निरे | निरेरे गमं गरे गग | रे सासा नि सा

७—रे रे ग रेरे | धनिनि रेग रेनि रेसा | मंधध निध निरे गग | रे सासा नि सा

८—रे रे ग रेरे | निरेरे गरे निरे सासा | निधध निरे गर गग | रे सासा नि सा

९—रे रे ग रेरे | निरेरे गमं पध पमं | गमंमं पमं गरे गग | रे सासा नि सा

१०—रे रे ग रेरे | गमंमं पध निध पप | पमंमं गमं गरे गग | रे सासा नि सा

×
११—मंधध निध निरे सासा | २ निरेरे गमं गरे गमं | ० पधप पमं गरे गग

३
रे सासा नि सा |

×
१२—पनिनि रेग रेनि रेसा | २ निरेरे गध निरे गमं | ० पमंमं पमं गरे गग

३
रे सासा नि सा |

×
१३—गरेरे निरे गरे सासा | २ निरेरे निध निध गग | ० मंधध निध निरे गग

३
रे सासा नि सा |

×
१४—गमंमं धनि रेंसं रेंसां | २ निधध निध पमं गरे | ० पमंमं गप रेसा गग

३
रे सासा नि सा |

१५-निरेरे गरे गग रेग | रेगग मंग मंमं गमं | गमंमं पमं पप मंग
निरेरे गरे ग- रेगग | मंग मं- गमंमं पप | निध -नि -रें ं
सांनिनि पप मंग रेसा | निसा रेनि सारे निसा | रे रे ग रे
ग मंमं प म | ग रे सा

राग—यमनकल्याण

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

म	रे	म	–	नि	सा	रे	–	ध	निनि	सासा	गग	रे–	रेनि	–नि	सा
दा	रा	दा	–	दा	रा	दा	–	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
प	धध	प	सा	नि	सा	ध	नि	सा	रेरे	सासा	गग	रे–	रेनि	–नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा

अन्तरा—

सा	पप	मं	प	मं	प	धध	पप	मं–	मंरे	–रे	गग	रे–	रेनि	–नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा–	रदा	–र	दा
सा	सासा	नि	सा	ध	निनि	धध	पप	मं–	मंरे	–रे	गग	रे–	रेनि	–नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा–	रदा	–र	दा

मसीतखानी गत के तोड़ों को रज़ाखानी गत के सांथ बजाने की विधि

यमनकल्याण राग की मसीतखानी गत के साथ दिए हुए १५ तोड़ो में १ से ५ तोड़े तीन मात्रा के, ६ से १० तोड़े सात मात्रा के और ११ से १४ तोड़े ग्यारह मात्रा के हैं। तोड़ों के वह समूह रज़ाखानी गत की लय में अनुक्रम से ६ मात्रा, १४ मात्रा और २२ मात्रा के बनेंगे। उनके पश्चात्—

		°				३			
धध	पप	मं-	मंरे	-रे	गग	रे-	रेनि़	-नि़	सा

यह १० मात्रा का गत का टुकड़ा जोड़ देने से तोड़ो के वह समूह अनुक्रम से १६ मात्रा, २४ मात्रा और ३२ मात्रा के बनेंगे। १ से ५ तोड़ो को सम से, ६ से १० तोड़ो का खाली से और ११ से १४ तोड़ों को सम से शुरू करके उपर्युक्त टुकड़े को साथ बजाकर १६ वीं मात्रा पर समाप्त करके सम से गत में मिलना होगा।

१५ वें तोड़े को सम से शुरू करके—

°				३				×
नि़	रे	ग	नि	रे	ग	नि	रे	ग

इस प्रकार ८ मात्रा की तिहाई का टुकड़ा लेकर सम से गत में मिलना होगा।

इस पुस्तक मे और भी कई रागो की मसीतखानी गतो के तोडे दिए हैं। उन रागो की रजाखानी गतों के पश्चात् आवश्यकतानुसार उपयोग करने के लिए गतो के यह टुकडे बताए गए हैं, जिनके उपयोग से मसीतखानी गतो के तोड़ो को रजाखानी गतो के साथ आसानी से बजाया जा सकेगा।

(मसीतखानी गतो की लय और रजाखानी गतो की लय अलग-अलग होने की वजह से तोडो की मात्राओ की संख्या मे होने वाला फरक आगे दिए हुए विवरण से स्पष्ट किया गया है। इसलिए अन्य रागो की रजाखानी गतो के पश्चात्, यह विवरण अनावश्यक समझकर किया नही है, किन्तु आवश्यकतानुसार गतो के टुकड़े और तिहाइयो के टुकड़े ही दिए गए हैं।)

राग—यमनकल्याण

झपताल — मात्रा १०

×	२			०		३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
				निनि	ध	पप	मं	प	प
				दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
नि	ध	प	प	मंमं	ग	रेरे	ग	ग	म
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	सा	रेरे	सा	निनि	ध	ध	नि
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
मं	धध	नि	नि	रे	नि	रेरे	ग	ग	मं
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा
सांनिनि	धप	मंग	रेसा						
सांदिर	दारा	दारा	दारा						

१ २ | ३ ४ ५ | ६ ७ | ८ ९ १०
अन्तरा—
| | मंमं | मं गग | मं प ध
| | दिर | दा दिर | दा रा दा
नि नि | सां रें सां | नि निनि | सां सां रेंरें
दा रा | दा रा दा | दा दिर | दा रा दिर
सां निनि | ध ध प | गं रेंरें | सां सां रेंरें
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दिर
सां निनि | ध ध प | सांरेंरें गमं | पध निसां गरेंरें
दा दिर | दा रा दा | दादिर दारा | दारा दारा दादिर
सांनि धप | मंग रेसा निनि | |
दारा दारा | दारा दारा दारा | |

राग अलैया बिलावल

बिलावल राग सब शुद्ध स्वरों का बना हुआ है। यह बिलावल थाट का आश्रय राग है। प्रचार में शुद्ध बिलावल को लोग कम गाते-बजाते हैं। इसी के नाम पर इसके जैसे ही अल्हैयाबिलावल है, उसको ज्यादा बजाते हैं। अल्हैयाबिलावल के आरोह में मध्यम वर्ज्य होता है और अवरोह में दोनों निषाद का प्रयोग होता है। यह शुद्ध बिलावल से आसान है। राग का वादी स्वर धैवत और सम्वादी स्वर गांधार है। बिलावल राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण मानी है और अल्हैया बिलावल राग की जाति षाडव-सम्पूर्ण मानी जाती है। इस राग के गाने का समय सुबह का दूसरा प्रहर है।

आरोह :— सा, रे, ग, रे, ग प, ध, नि सां।

अवरोह :—सां, नि, ध, प, ध, नि, ध, प, म ग, म रे सा।

पकड़ :— ग रे, ग प, ध, नि सां।

स्थायी का स्वरूप :—ग, रे सा, सा रे, ग रे, ग प, म ग म रे, ग प, ध, प, म ग म रे, ग प ध नि ध, ध ग, प, म ग म रे सा, ग प ध नि ध प, सां, नि ध, नि ध, प प, म ग, म रे, ग प ध नि सा, नि ध प म ग रे, ग प, म ग, म रे, सा।

अन्तरा का स्वरूप —प प, ध, नि सां, सा रें सां, ग मं रें रें सां नि ध, प, ध नि सा नि ध, प, ध, म ग म रे, ग प ध, नि, सा, सां रें, सा, नि ध, प, म ग म रे ग प ध म ग रे ग प म ग म रे सा।

राग—अलैयाबिलावल

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

स्थाई—															
X				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
											रेरे	ग	पप	निध	नि
											दिर	दा	दिर	बिर	दा
सां	सा	सां	निसां	धनि	पप	नि	ध	प	म	ग	मम	ग	रेरे	नि़	सा
दा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	सासा	ग	ग	प	पप	नि	ध	प	म	ग					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

अन्तरा—															
											पप	प	पप	निध	नि
											दिर	दा	दिर	दिर	दा
सां	सां	सां	सांनि	सां	गंरें	गं	मं	गं	रें	सा	गंगं	रें	सांनि	ध	प
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	निनि	सां	नि	ध	पप	नि	ध	प	म	ग					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

राग—अल्हैयाबिलावल

तोड़े—मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
			रेरे	ग पप निध नि
१—	सां सां सां निसां	धनि पप नि ध	धनिनि धप मग रेरे	ग पप निध नि
२—	सां सां सां निसां	धनि पप नि प	गपप धप मग रेरे	ग पप निध नि
३—	सां सां सा निसा	धनि पप नि ध	सारेरे गप मग रेरे	ग पप निध नि
४—	सा सां सा निसा	धनि पप नि ध	मगग रेग मग रेरे	ग पप निध नि
५—	सा सा सां निसां	धनि पप नि ध	रेगग रेग मग रेरे	ग पप निध नि
६—	सा सां सा निसा	सारेरे गरे गप मग	सारेरे गप मग रेरे	ग पप निध नि
७—	सा सा सानिसां	सारेरे गप मग रेग	मगग रेग मग रेरे	ग पप निध नि
८—	सां सा सां निसां	गपप मग गरे सासा	रेगग रेग मग रेरे	ग पप निध नि
९—	सा सां सा निसा	गपप धनि मप मग	मगग रेग रेग रेरे	ग पप निध नि

१०–सां सां सां निसां | धनिनि सांनि धनि धप | सांनिनि धप मग रेरे | ग पप निध नि

११–सांनिनि धनि धप मग | रेगग पम गरे सासा | सारेरे गरे मग रेरे | ग पप निध नि

१२–गपप धनि धप मग | मरेरे गप मग रेसा | सारेरे सारे गप रेरे | ग पप निध नि

१३–गपप धनि धनि सारें | सांनिनि धनि धप मग | मगग मरे गप रेरे | ग पप निध नि

१४–गपप धनि सांनि धनि | सारेंरें गरें सांनि धप | सांनिनि धप मग रेरे | ग पप निध नि

	×	२	०
१५-	सारेरे गरे गप मग	रेगग पप निनि धप	गपप धनि सारें सांनि
	३	×	२
	धनिनि धप मग रेसा	सारेरे गप -म गरे	गपप धनि -नि धप
	०	३	×
	धपप धनि -नि सारें	सांनिनि धप मग रेसा	सारेरे गरे ग- रेगग
	२	०	३
	पग ग- गपप धनि	सांनिनि धनि सां- सांनिनि	धनि सां- सांनिनि धनि
	×	२	०
	सां सां सां निसां	धनि पप नि ध	प म ग

राग—अल्हैया बिलावल

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—				ग पप ध नि
				दा दिर दा रा
	सां — सां सां	सां रेंरें सासा निनि	ध– धप –प म	ग गग ग म
	दा — दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा दिर दा रा
	ग — रे ग	म पप गग मम	ग– गरे –रे सा	सा सासा सासा ग
	दा — दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा दिर दिर दा
	— ग प प	प निनि धध पप	म– मग –ग रे	ग पप ध नि
	— रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा दिर दा रा
अन्तरा—				
	प पप पप प	— नि सा सा	सां रेंरें गंगं मंमं	गं– गरें –रें सां
	दा दिर दिर दा	— रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
	गं — मं रें	— सां सांसां निनि	ध– धप –प म	ग पप ध नि
	दा — रा दा	— रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा दिर दा रा

मसीतखानी गत के तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ाः—

		०				३			
धध	पप	म–	मग	–ग	रे	ग	पप	ध	नि

तोड़े शुरू करने के स्थान—१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वें तोड़े को सम से शुरू करके—

×				२				०				३			
सा	निनि	ध	नि	सां	–	सा	निनि	ध	नि	सां	–	सा	निनि	ध	नि
×															
सां	–														

इस प्रकार १६ मात्रा की तिहाई या टुकड़ा लेकर सम से गत मे मिलाना होगा।

(यह तोड़ा मसीतखानी गत के साथ बजाते समय उपर्युक्त तिहाई ८ मात्रा मे बजती हैं।)

राग—अल्हैया बिलावल

झपताल मात्रा १०

×		२		०		३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

				निनि	ध	धध	म	ग	ग
				दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
प	म	ग	ग	गम	रे	रेरे	ग	ग	म
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	मा	सा	सा	मासा	ग	ग	ग
दा	रा	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा
प	धध	नि	ध	निनि	ध	धध	म	ग	ग
दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

अन्तरा—

प	धध	नि	ध	नि	सां	सां	नि	रें	सां
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा

सां रेंरें | ग गं मं | गं रेंरें | सां नि ध
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
नि धध | प निध नि | सा रें | सां नि ध
दा दिर | दा दिर दा | दा रा | दा रा दा
सांनिनि धनिनि | धप मग निनि |
धादिर धादिर | दारा दारा दिर |

राग-खमाज

खमाज के आरोह में सब स्वर शुद्ध और अवरोह में निषाद कोमल तथा बाकी के सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह खमाज थाट का आश्रय राग है। इस राग में वादी स्वर गांधार और संवादी निषाद है। आरोह में ऋषभ वर्ज्य है और अवरोह में सब स्वर लगते हैं; इसलिए राग की जाति षाडव-सम्पूर्ण मानी गई है। आरोह में धैवत दुर्बल और अवरोह में पंचम वक्र होता है। इस राग की प्रकृति चंचल है अतः शृङ्गारिक भावों को अच्छी तरह से इस राग में प्रकट कर सकते हैं। इसमें ठुमरी बहुत गाई-बजाई जाती है, फिर भी ध्रुवपद के योग्य न हो, ऐसा नहीं है। राग का सम्पूर्ण वैचित्र्य गांधार, मध्यम, पंचम और निषाद पर अवलम्बित है। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोह :—सा, ग म, प, ध नि, सां।
अवरोह :—सां नि ध प, म ग, रे सा।
पकड़ :—नि ध, म प ध, म ग।

स्थायी का स्वरूप —नि सा ग, म ग, प, म ग, नि ध म ग, नि सा ग म प, ग म, नि ध, म प ध म ग, प म ग रे सा, ग ग सा ग म प ग म, ध नि सां, सां नि ध प, ध म, ग, ग म प, म ग रे सा, सां नि ध, म प ध, म ग, सा रें सा नि ध प, म ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप —ग म ध नि सां, नि सां, नि सा रें सां, नि ध, प ध नि सां, नि नि सां रें, सां नि ध, म ध नि सां, नि ध, म प ध, म ग, प, म ग रे सा।

राग—खमाज

मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×	२	०	३
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	६ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६

स्थाई—

ग सासा ग ग	म मम प ध	गं म प निनि	ध पप म ग
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
सा सासा नि सां	ध निनि प ध	ग म प निनि	ध पप म ग
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा

अन्तरा—

ग मम नि ध	नि नि सा सा	प नि सां रेंरें	सां निनि ध ध
दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
सां मंमं गं मं	रें गग सा रें	सा नि ध निनि	ध पप म ग
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा

राग—खमाज

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　मात्रा १६

×　　　　२　　　　०　　　　३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

१—ग सासा ग ग | म मम प ध | निसासा गग रेसा निनि | ध पप म ग

२—ग सासा ग ग | म मम प ध | सागग मग रेसा निनि | ध पप म ग

३—ग सासा ग ग | म मम प ध | गमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

४—ग सासा ग ग | म मम प ध | पमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

५—ग सासा ग ग | म मम प ध | धमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

६—ग सासा ग ग | निसासा गम पध निध | पमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

७—ग सासा ग ग | निसासा गम पध मग | सागग मग रेसा निनि | ध पप म ग

८—ग सासा ग ग | गमम पध निध पम | गमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

९—ग सासा ग ग | सागग मप धप मप | धमम गग रेसा निनि | ध पप म ग

१०–ग सासा ग ग | गमम पध निसा निध | ममम मग रेसा निनि | ध पप म ग

११–निसासा गम गरे निसा | गमम पम गरे निसा | पमम मग रेसा निनि | ध पप म ग

१२–गमम पध निध पध | निनिनि सारें सानि धप | पधध मग रेसा निनि | ध पप म ग

१३–गमम पध निसा रेंसा | निसासा रेसा निसा निध | निधध मग रेसा निनि | ध पप म ग

१४–गमम पध निसा मगं | रेंसासा निसा निध पध | पमम गरे निसा निनि | ध पप म ग

×	२	०
१५–निसासा गम गग रेसा	गमम पध निनि धप	गमम पध निसा गरें

३	×	२
सानिनि धप मग रेसा	निसासा गम ग– गमम	पध प– पध निसां

०	३	×
निधध धम गरे मिसा	ग– निसा ग– निसा	ग सासा ग ग

२	०	३
म मम प ध	ग म प निनि	ध पप म ग

×	
ग	

राग—खमाज

(रजाखानी गत)

सितार मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—							सा	नि॒	सा	ग	–	ग	म	प	–	म
							दा	रा	दा	रा	–	दा	रा	दा	–	रा
	ग	–	–	म	ग	रे	सा	नि॒	सा	ग	–	ग	म	प	–	म
	दा	–	–	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	–	दा	रा	दा	–	रा
	ग	–	–	म	ग	म	प	ध	नि	धध	निनि	पप	ध–	धप	–प	म
	दा	–	–	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
	म	धध	प	म	ग	रे	सा	नि॒								
	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा								
अन्तरा—	ग	मम	प	ध	नि	सां	रें	गं	गं	रेंरें	सांसां	नि	ध	प	म	ग
	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
	म	धध	प	म	ग	रे	सा	नि	सा	ग	–	ग	म	प	–	म
	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	–	दा	रा	दा	–	रा
	ग															
	दा															

यह रजाखानी गत सातवी मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोडे दिए गए हैं, उनके पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नही है। प्रत्येक तोडे को पूरा बजाने के बाद सातवी मात्रा से ही गत मे मिल जाना होगा।

तोड़े शुरू करने के स्थान—१ से ५ तोडे सम से, ६ से १० तोडे खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा—

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी:—

×	२	०	३
	नि सा	ग – नि़ सा	ग – नि़ सा
ग			

राग—खमाज

झपताल मात्रा १०

×		२			०		३		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

नि़	सासा	ग	ग	ग	म	मम	प	प	ध
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	म	प	ध	निनि	ध	पप	म	म	ग
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
प	निनि	नि	नि	सां	रें	निनि	ध	ध	प
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा
सां	निनि	ध	ध	निनि	ध	पप	म	म	ग
दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

अन्तरा—

ग	मम	नि	ध	निनि	सां	सां	नि	नि	सां
दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा

निनि	सा	सा	रेंरें	सा	निनि	ध	ध़	प
दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

रेंरें	नि	नि	सा	प	निनि	सा	रें	सा
दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा

ते	धध	म	प	धध	म	गग	रे -	नि	सा
रा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

राग भैरव

भैरव राग भैरव थाट से निकलता है। ऋषभ, धैवत कोमल हैं और बाकी के स्वर शुद्ध हैं। आरोहावरोह दोनों में सात सात स्वर होते हैं, इसलिए राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। विवादी के नियमों के आधार पर क्वचित् अवरोह में कोमल निषाद का उपयोग किया जाता है। यह राग उत्तराङ्गप्रधान है और धैवत स्वर बहुत आधारभूत है। धैवत तथा ऋषभ के ऊपर आंदोलन देने से राग का स्वरूप और गांभीर्य प्रकट होता है। इस राग की प्रकृति गम्भीर है, गाने का समय प्रातःकाल है।

आरोह—सा रे ग म, प धु, नि सां।

अवरोह—सां नि धु प म ग, रे, सा।

पकड़—सा, ग म, प, धु प।

स्थाई का स्वरूप —सा रे, रे, सा, धु धु, सा, रे, सा, म रे, म ग रे, रे, सा नि सा धु, नि धु प म धु, सा, ग म रे, रे, सा ग म प, म, ग, म रे रे सा, म, ग म, धु, प म प, ग म प म, ग म, रे रे सा सा, ग म धु, प, नि धु, प, सां नि धु, प म प म ग रे, ग म प म ग रे, रे सा ग म धु प।

अन्तरा का स्वरूप —ग म धु, सां, नि सां सां, नि सा, धु, प, म ग, म प, धु, प, ग ग, रे ग म प म ग, रे, रे, सा, ग, म प, धु, प, म ग, म रे, रे सा, ग म धु, धु, सा, ग म रें, रें, सा नि सा रें रें सां, नि सा धु धु प, म, प म ग म, रे रे सा।

राग—भैरव

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			गग	म धुधु धु प
			दिर	दा दिर दा रा
	प म ग गम	रे रेरे ग म	गम रे सा सासा	नि निनि धु प
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दिर दा रा दिर	दा दिर दा रा
	म पप धु नि	सा रेरे ग म	गम रे सा	
	दा रिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दा रा	
अन्तरा—			गग	म पप धु नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सां सां सां सांसां	नि निनि सा रें	सा नि धु रेंरें	सां निनि धु प
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	ग मम प धु	नि धुधु प म	गम रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दा रा	

राग—भैरव

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६

तोड़े—

गग | म धुधु धु प

१—प म ग गम | रे रेरे ग म | सारेरे गम रेसा गग | म धुधु धु प

२—प म ग गम | रे रेरे ग म | गमम गम रेसा गग | म धुधु धु प

३—प म ग गम | रे रेरे ग म | धुपप गम रेसा गग | म धुधु धु प

४—प म ग गम | रे रेरे ग म | पमम गम रेसा गग | म धुधु धु प

५—प म ग गम | रे रेरे ग म | मपप गम रेसा गग | म धुधु धु प

६—प म ग गम | सारेरे गम गम धुप | धुपप गम रेसा गग | म धुधु धु प

७—प म ग गम | धुपप गम रेसा निसा | गमम गम रेसा गग | म धुधु धु प

८—प म ग गम | गमम धुप गम रेसा | मपप गम रेसा गग | म धुधु धु प

९—प म ग गम | गमम धनि धप मप | पपप गम रेसा गग | म धध ध प

१०—प म ग गम | निसासा गम धनि धप | सानिनि धप मग गग | म धध ध प

११—निसासा गम गम रेसा | सागग मप धप मप | रेगग मम मरे गग | म धध ध प

१२—गमम धनि धप मप | गमम धनि सानि धप | पपप गम रेसा गग | म धध ध प

१३—धपप मप गम धनि | सा– सारें सानि धप | सानिनि धप मग गग | म धध ध प

१४—गमम धनि सारें गरें | सानिनि धप गम रेसा | धपप गम रेसा गग | म धध ध प

१५—सारेरे गम गम रेसा | रेगग मप मप मग | गमम पध पध पम | धपप मप गम रेसा

सारेरे गम ग– रेगग | मप म– गमम पध | पमम गम प– पमम गम प– पमम गग

प म ग गम | रे रेरे ग म | गम रे सा |

राग—भैरव

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

स्थाई—

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
						सा	नि	सा	गग	गग	गग	म–	मप	–प	ग
						दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
ध	–	–	प	म	प	ग	म	ग	मम	गग	मम	ग–	गरे	–रे	सा
दा	–	–	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
सा	निनि	निनि	ध	–	ध	प	प	म	पप	धध	निनि	सा–	सारे	–रे	ग
दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	रा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
म	ग	रे	ग	रे	सा	सा	नि								
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा								

अन्तरा—

×				२				०				३			
ग	मम	मम	ध	–	नि	सा	सा	नि	सासा	निनि	रेंरें	सां–	सानि	–नि	ध
दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
ध	–	प	ग	म	रे	सा	नि	सा	गग	गग	गग	म–	मप	–प	प
दा	–	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा

यह रजाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ों को इस गत के साथ बजाते समय तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़े शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी —

×				२				०				३			
ध़	पप	ग	प	ध़	–	ध़	पप	म	प	ध़	–	ध़	पप	म	प

ध़

५२
सितार-दर्पण
राग—भैरव
झपताल
मात्रा १०
× २ ० ३
१ २ । ३ ४ ५ । ६ ७ । ८ ९ १०
स्थाई—
| | मनि | म गग | म प प
| | दिर | दा दिर | दा रा दा
ध ध | प प गम | रे रेरे | ग ग ग
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
गम रे | सा सा सासा | नि निनि | ध ध प
दिर दा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
म पप | ध ध नि | सा गग | ग ग म
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
गम रे | सा — सानि |
दिर दा | दा — दिर |

अन्तरा—

| प ममं | ग ग ग
| दा दिर | दा रा दा
ग मम | ध नि सा | ध निनि | सा सा सा
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
रें रेंरें | रे रें सा | प पप | ग ग म
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
प धध | नि नि सा | नि धध | प म प
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
गम रे | सा - |
दिर दा | दा - |

राग पूर्वी

पूर्वी राग पूर्वी थाट से निकलता है। कोमल ऋषभ, कोमल धैवत, दोनों मध्यम और शेष शुद्ध स्वर लगते हैं। आरोहावरोह सम्पूर्ण है। इस राग में वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। शुद्ध मध्यम ज्यादातर दो शुद्ध गांधार के बीच में आता है। राग का गाने का समय शाम का है। राग-वैशिष्ट्य सा, ग, प और नि स्वरों पर अवलम्बित है। इस राग की प्रकृति गंभीर है।

आरोह—सा, रे॒ ग, म॑ प, ध॒, नि सां।

अवरोह—सां, नि ध॒ प, म॑, ग म ग, रे॒ सा।

पकड़— प ध॒, म॑, प म॑ ग, म ग।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि रे॒ ग, रे॒ ग, म॑ ग, रे॒ ग, रे॒ सा, नि॒ रे॒ ग, म ग, प, म॑ प, म॑, ग, म ग, रे॒ ग, म॑ ग, रे॒ ग, रे॒ सा, प ध॒, प, म॑ प नि, ध॒ प (प) म॑ ग, म ग, म॑ प म॑, ग रे॒, सा म॑ ध॒ नि, सां, नि ध॒, प म॑ प ध॒ म॑, प म॑, ग, म ग, म॑ ग, रे॒ ग, रे॒ सा।

अन्तरा का स्वरूप—म॑ ग, म॑ ध॒, प, सां, नि रें॒ सां, नि रें॒ ग रें॒ सां, नि रें॒ ग रें॒ ग, रें॒ सां, नि ध॒, प, म॑ प ध॒, म॑ प, म॑ ग, म ग, म॑ ध॒, नि ध॒, सां, नि रें॒ ग, म॑ ग, रें॒ ग, सां, नि ध॒ प, म॑ प ध॒ प, म॑ ग, म ग, म॑ ग रे॒ सा।

राग—पूर्वी
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सासा । नि रेरे ग मं
दिर । दा दिर दा रा
प प प पप । मं पप मं प । गम ग ग धध । मं गग रे सा
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दिर दा रा दिर । दा दिर दा रा
नि सासा रे ग । मं पप मं प । गम ग ग
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दा रा
अन्तरा—
गग । मं मंमं ध मंध
दिर । दा दिर दा दिर
सा सा सा सासा । नि निनि सा रे । सा नि ध रेरे । सा निनि ध प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
ग मंमं प ध । नि धध प मं । गम ग ग
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दा रा

५६ सितार-दर्पण
राग—पूर्वी (रज़ाख़ानी गत)
त्रिताल मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
नि रेरे ग मं
दा दिर दा रा
प – प प | मं पप मंमं पप | मं– मंग –म ग | नि रेरे ग मं
दा – दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दा रा
प – प धु | मं प ग मं | प धुधु निनि सासा | नि– निधु –धु प
दा – दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
नि धु प धु | प मं धुधु पप | मं– मंग –म ग | नि रेरे ग मं
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दा रा
अन्तरा—
ग मंमं मंमं धु | – नि सां सां | नि सांसां निनि रेंरें | सां– सांनि –नि धु
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
रें – नि धु | – प धुधु पप | मं– मंग –म ग | नि रेरे ग मं
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दा रा

राग—पूर्वी

झपताल मात्रा १०

×		२			०	३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

नि	रेरे	ग	रे	ग	मं	प	मं	मं	प
दा .	. दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा

ग	म	ग	ग	मंमं	ग	रेरे	नि	नि	सा
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

नि	सासा	रे	ग	रे	ग	मं	प	प	प
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा

मं	म	ग	ग	मंमं	ग	रेरे	नि	नि	सा
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा

अन्तरा—
मं गग | मं प ध | नि नि | सां सां सांसां
दा दिर | दा रा दा | दा रा | दा रा दिर
नि रेंरें | गं रें सां | रें सांसां | नि ध प
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
नि धध | प प मंमं | ग रेरे | नि नि सा
दा दिर | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा

राग काफी

काफी राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार-निषाद कोमल, बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड्ज माना गया है। आरोहावरोह में सात-सात स्वर होने के कारण राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-समय मध्यरात्रि है, फिर भी इसे किसी भी समय बजाया जा सकता है। इस राग में, आरोह में अनेक बार शुद्धगांधार और निषाद का प्रयोग देखने को मिलता है। राग-स्वरूप अधिकतर गांधार, पंचम, निषाद और षड्ज पर आधारित है।

आरोह—सा, रे ग, म, प, ध नि सां।

अवरोह—सां नि ध, प, म ग, रे, सा।

पकड़—सा सा, रे रे, ग ग, म म, प।

स्थाई का स्वरूप.—सा, रे रे ग, रे सा, रे रे, ग म प, ध प, म ग रे, ग रे सा, म प ध म प, ग, रे, रे ग, रे म ग रे सा रे रे ग, म म प, म प ग, रे ध प म प ग रे, नि ध नि ध प, ध म ग रे, रे ग म प, म ग रे सा, रे ग म ग, रे सा, नि ध प, ध म ग रे, प म ग रे सा, रे रे, ग ग म म, प।

अन्तरा का स्वरूप—म प ध नि, सां, नि नि सां रें सां नि, ध, सां रें सां नि ध, म प, नि ध प म ग रे, रे ग म प, म ग रे सा, ग, रें सां, रें सां नि, सां, नि ध, नि, ध प, ध, म ग, रे सा, रे रे, ग, म, म प।

राग—काफ़ी
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× | २ | ० | ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई—
| | सासा | रे गग म म
| | दिर | दा दिर दा रा
प प प मम | प सासा नि ध | प म ग पप | म गग रेग रे
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दिर दा
रे निनि ध नि | प धध म प | नि सा रेग |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा रा दिर |
अन्तरा—
| | रेंरें | रें रेंरें रें गं
| | दिर | दा दिर दा रा
रें सा नि रेंरें | सा निनि म प | सा नि सा मम | म निनि ध नि
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
प धध म प | रे गग म म | प प प |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा |

राग—काफी

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	X				२				०				३			
												सासा	रे	गग	म	म
१—	प	प	प	मम	प	सासा	नि	ध	मपप	धप	गरे	सासा	रे	गग	म	म
२—	प	प	प	मम	प	सासा	नि	ध	सारेरे	गम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
३—	प	प	प	मम	प	सासा	नि	ध	रेगग	रेम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
४—	प	प	प	मम	प	सासा	नि	ध	पमम	गम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
५—	प	प	प	मम	प	सासा	नि	ध	निधध	पम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
६—	प	प	प	मम	सारेरे	गम	पप	मप	सानिनि	धप	गरे	सासा	रे	गग	म	म
७—	प	प	प	मम	रेगग	रेम	गरे	निसा	रेगग	रेम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
८—	प	प	प	मम	निसासा	रेग	रेसा	निसा	निसासा	रेम	गरे	सासा	रे	गग	म	म
९—	प	प	प	मम	सारेरे	गम	पम	गरे	सारेरे	गम	गरे	सासा	रे	गग	म	म

१०–प प प गम | मपप पनि धप मप | धपप मप गुरे गागा | रे गुग म म

११–निसासा रेग मप पनि | धपप मप गुग रेगा | रेगुग रेम गुरे गागा | रे गुग म म

१२–रेगुग मप धप मप | रेगुग रेम गुरे निगा | सागरे पम गुरे गागा | रे गुग म म

१३–मपप धनि सारं सानि | धनिनि पप गुग रेगा | गारेरे गारें गुरे मागा | रे गुग म म

१४–मपप धनि सारें गुरें | सानिनि धनि धप मप | निधध पम गुरे मामा | रे गुग म म

१५–सारेरे गुम पप गुम | पप गुम पप मप | रेगुग मप धध मग | धध मप धध पध

गुमम पध निनि पध | निनि पध निनि धनि | गारेरे गुम पम पप | रेगुग मप धप धध

गुमम पध निध निनि | सारेरे गुम प– रेगुग | मप ध– गुमम पध | नि– गमप धनि स

सानि धनि धप धप | मप मग मग रेगा | पमम गुम प– पमम | गुम प– पमम गुम

प प प गम | प सामा नि ध | प म गु |

राग—काफी

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| मा नि | सा रेरे रेरे ग | — म प म

| दा रा | दा दिर दिर दा | — रा दा रा

प — प म | ग रे सा नि | सा रेरे रेरे ग | — म प म

दा — दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दा | — रा दा रा

प — प म | प ध नि सा | नि धध पप मम | ग— गरे —रे रे

दा — दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा

रे निनि ध नि | प धध ग प | म ग म प | म — मा नि

दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा — दा रा

मा ग रे म | ग रे मा नि

दा रा दा रा | दा रा दा रा |

अन्तरा—
प पप प प | म प नि सा
दा दिर दा रा | दा रा दा रा
रें गंगं रें सां | रें नि सा — | गं मं — नि | — प म प
दा दिर दा रा | दा रा दा — | दा रा — दा | — दा रा दा
रे गग रे म | ग रे सा नि | सा रेरे रेरे ग | — म प म
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दा | — रा दा रा
प
दा

यह रजाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ो को इस गत के साथ बजाते समय तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़े शुरू करने के स्थान— १ से ५ तोडे सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से। १५ वाँ तोड़ा:—

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी:—

×				२				०				३			
प	मम	ग॒	म	प	–	प	मम	ग॒	म	प	–	प	मम	ग	म
प															

राग—काफी

झपताल मात्रा १०

×		२			०		३		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

				गप	ग	गग	रे	सा	रे
				दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
प	प	प	प	मम	ग	मम	ग	ग	म
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
म	ग	रे	रे	गग	रे	सासा	नि	नि	सा
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
नि	सासा	रे	ग	मम	प	पप	म	ध	प
दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	रे						
दा	रा	दा	रा						

अन्तरा—
पध | म पप | नि सा रे
दारा | दा दिर | दा रा दा
र्ध रे | सा सा निनि | सां रेरे | सा नि ध
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
नि ध | प प पध | म पप | रे ग नि
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
ग रे | ग म मप |
दा रा | दा रा दिर |

राग-भूपाली

राग भूपाली में केवल सा, रे, ग, प, ध इस प्रकार आरोह और अवरोह दोनों में पाँच-पाँच स्वर होते हैं। 'म नि' ये दो स्वर वर्ज्य हैं। इसमें सब स्वर शुद्ध लगते है। यह राग कल्याण थाट से निकलता है। वादी स्वर गांधार होने के कारण यह पूर्वांग वादी राग कहा जाता है। इस राग का विस्तार भी पूर्वांग में ही ज्यादा होता है। सवादी स्वर धैवत है। राग की जाति पाँच-पाँच स्वर होने से औडव-औडव है। गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

आरोह—सा रे, ग प, ध सा।

अवरोह—सा ध प, ग, रे सा।

पकड़—ग, रे, सा ध, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा ध, सा रे ग, रे ग, रे सा, रे ग, प ग, ध प ग, रे ग, रे सा, ग, रे ग, ध, सा रे ग, प ग, ध प ग, सा रे ग, ध प ग, रे ग रे सा, ध सा रे ग।

अन्तरा का स्वरूप—ग ग, प, ध प सां, ध ध सां, रें रें, सां रें सां, ध प, सां सां ध, प ध सां, ग ग प ध सां, रें रें सां, गं रें सां, रें सां ध, प, ग, ध प, सा, ध, प, ग ध प ग, रे प, रे सा, ध, सा रे ग।

राग—भूपाली

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

×	२	०	३
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६

स्थाई—

		पप	ग रेरे सा रे
		दिर	दा दिर दा रा
प ग ग ग	ग गग रे गग	ग रे सा सासा	सा रेरे सा ध
दा दा रा दा	दा दिर दा दिर	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
प धध सा रे	सा रेरे ग प	ग रे सा	
दा दिर दा ग	दा दिर दा रा	दा दा रा	

अन्तरा—

		रेरे	ग पप ध सा
		दिर	दा दिर दा रा
ध ध सा सासा	ध धध सा रे	सा ध प गग	रे सासा ध प
दा दा ग दिर	दा दिर दा रा	दा दा ग दिर	दा दिर दा रा
रे गग प ध	सा धध ध प	ग रे सा	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

राग—भूपाली

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
												पप	ग	रेरे	सा	रे
१—	प	ग	ग	ग	ग	गग	रे	गग	पधध	सारे	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे
२—	प	ग	गं	ग	ग	गग	रे	गग	सारेरे	गप	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रें
३—	प	ग	ग	ग	ग	गग	रे	गग	गरेरे	सारे	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे
४—	प	ग	ग	ग	ग	गग	रे	गग	पधप	गप	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे
५—	प	ग	ग	ग	ग	गग	रे	गग	साधध	पग	रेसा	पप	ग	रेरे	सा	रे
६—	प	ग	ग	ग	पधध	सारे	गप	गरे	गरेरे	सारे	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे
७—	प	ग	ग	ग	पधध	सारे	गरे	गग	गरेरे	गरे	सारे	पप	ग	रेरे	सा	रे
८—	प	ग	ग	ग	गरेरे	सारे	साध	पध	पधध	सारे	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे
९—	प	ग	ग	ग	धसासा	रेग	रेसा	धसा	सारेरे	गरे	गरे	पप	ग	रेरे	सा	रे

१०–प ग ग ग | सारेरे गप गरे गप | गरेरे गप गरे पप | ग रेरे सा रे

११–गरेरे सारे साध पध | सारेरे गरे गप धसां | साधध पग रेसा पप | ग रेरे मा रे

१२–मारेरे गरे माध पध | सारेरे सारे गरे गप | पपप गप गरे पप | ग रेरे सा रे

१३–गपप धसा धप गरे | गरेरे गप गग सारे | सारेरे सारे गरे पग | ग रेरे सा रे

१४–गपप धसा रेग रेसा | सारेरे साध पध पग | गरेरे सारे प– गरेरे | सारे प- गरेरे सारे
प ग ग ग | ग गग रे गग | ग रे सा पप | ग रेरे सा रे

१५–गग रेग गरे सारे | गग रेग गरे साध | रेरे मारे रेमा धमा | रेरे सारे माध पध
गग रेग रेमा रेरे | सारे माध मासा धप | पध मारे गरे गग | धमा रेग पगं गग
प– पध सारे ध– | धसा रेग रेमा –रे | प– –ग –रे मारे | प– –ग –रे सारे
प ग ग ग | ग गग रे गग | ग रे सा

राग—भूपाली

(रज़ाखानी गत)

ग – ग रे	ग धध पप पप	ग– गरे –रे सा	ग प ध सां
दा – दा र	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा रा दा रा
ध मामा धध रेंरें	सां– सांध –ध प	सा ध – ग	– मा ध सां
दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा रा – दा	– रा दा रा
प धध प ग	– धध पप पप	ग– गरे –रे सा	प धृ सा रे
दा दिर दा रा	– दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा रा दा रा

अन्तरा—

ग पप पप ध | – ध सा सा | ध सासा धध रेंरें | सा– साध –ध प
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

सा ध – ग | – ग ध सा सा ध – ग – सा ध सा
दा रा – दा | – रा दा रा | दा रा – दा | – रा दा रा

प धध प ग | – धध पप पप | ग– गरे –रे मा | प ध सा रे
दा दिर दा रा | – दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा रा दा रा

ग
दा

मसीतखानी गत के साथ दिए गए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा

						३			
धध	पप	गं–	गरे	–रे	मा	प़	ध़	सा़	रे

तोड़े शुरू करने के स्थान:—१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १३ तोड़े सम से। १४ वाँ तोड़ा मम से शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×				२				०				३			
ग	रेरे	मा	रे	ग	–	ग	रेरे	मा	रे	ग	–	ग	रेरे	मा	रे
ग															

१५ वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा। अन्तिम पंक्तियाँ तिहाई के साथ इस प्रकार बजेंगी —

×				२				०				३			
प	–	प	ध	मा	रे	ध	–	ध	मा	रे	ग	रे	मा	–	रे
ग	–	–	ग	–	रे	मा	रे	ग	–	–	ग	–	रे	मा	रे
ग															

राग आसावरी

आसावरी राग आसावरी थाट का आश्रय राग है। इस राग में गांधार, धैवत और निषाद कोमल और सब शुद्ध स्वर लगते हैं। राग का वादी स्वर धैवत और सवादी स्वर गांधार है। वादी स्वर राग के उत्तराग मे होने से राग का विस्तार उत्तराग मे मधुर लगता है। यह राग बहुत लोकप्रिय है और सुबह के दूसरे प्रहर मे गाया जाता है। आरोह मे गांधार-निषाद ये दो स्वर वर्ज्य होते हैं, इसलिए राग की जाति औडव-सम्पूर्ण है। राग की मधुरता गांधार, पचम और धैवत पर आधारित है।

आरोह—सा, रे, म, प, ध, सां।

अवरोह—सां, नि ध, प, म ग, रे, सा।

पकड़— रे, म, प, नि ध, प।

स्थाई का स्वरूपः—सा, रे म, प, ग, रे, सा, रे, म, प, ध, प, ध ध प म प, म प ध, म प, ग, रे सा, रे म, प, नि ध, प, म प ध, ध, सां, सां, रें, मं, गं, रें, सां, रें, नि ध, प, म प ध, म प, ग, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—म, प, ध, ध, सां, रें नि सां, ध, प, म प, नि ध, प, म, म प, ध, ध, सां, गं, रें, सां सां रें, सां, नि ध, प, ध म, प ध, सां, नि ध, प, म प, ग, रे, सा।

राग—आसावरी

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× ₂ ० ३

१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६

स्थाई—

सासा | रे मम प प

दिर | दा दिर दा रा

नि ध प पध | म पप मपध मप | ग रे सा सासा | नि निनि ध प

दा दा रा दिर | दा दिर दादिर दिर | दा दा ग दिर | दा दिर दा रा

म पप ध मा | रे मम पध मप | ग रे |

दा दिर दा रा | दा दिर दिर दिर | दा दा रा |

अन्तरा—

मम | म पप ध सां

दिर | दा दिर दा रा

ध ध सां सांसां | ध धध सां रें | सां नि ध रेंरें | सां निनि ध प

दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा ग

रे मम प प | नि धध प म | ग रे सा |

दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा |

राग—आसावरी

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

सासा | रे मम प प

१—नि ध प पध | म पप मपध मप | मपप धप गरे सासा | रे मम प प

२—नि ध प पध | म पप मपध मप | सारेरे मप गरे सासा | रे मम प प

३—नि ध प पध | म पप मपध मप | धपप मप गरे सासा | रे मम प प

४—नि ध प पध | म पप मपध मप | धपप धप गरे सासा | रे मम प प

५—नि ध प पध | म पप मपध मप | निधध पम गरे सासा | रे मम प प

६—नि ध प पध | रेमम पनि धप मप | मपप धप गरे सासा | रे मम प प

७—नि ध प पध | सारेरे मप निध पप | पधध मप गरे सासा | रे मम प प

८—नि ध प पध | सारेरे मप धप मप | पनिनि धप गरे सासा | रे मम प प

९—नि ध प पध | रेनिनि धप मप धमा | सारेरे मप गरे सासा | रे मम प प

१०–नि ध प पध | रेगग पगा धध पनि | धपप गप गुरे सागा | रे मम प प

११–गुरेरे गारे सानि धप | मपप धसा रेग पध | पनिनि धप गुरे सागा | रे मम प प

१२–सारेरे मप गुग रेसा | रेगम पनि धध पप | धपप धप गुरे साहा | रे मम प प

१३–मपप धसा रेनि धप | मपप धप गुग रेसा | सारेरे मप गुरे साहा | रे मम प प

१४–मपप धसा रेंगं रेंसा | रेंनिनि धप मप धप | निधध पम गुरे साहा | रे मम प प

१५–सारेरे गप धध मप | धध मप गुग रेसा | रेमम पप निनि मप | निनि मप निनि धप
मपप धसां गुंगुं रेंसां | रेमम पप निनि धप | गं– गुरें सानि रें– | रेंसा निध सा– सानि

धप नि– निध पम | गुरे सा– –रे मप | नि– –सा –रे मप | नि– –सा –रे मप
नि ध प पध | म पप मपध मप | गु रे सा |

राग—आसावरी
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई—
म | म प – सां
दा | रा दा – रा
ध – – निनि | ध पप म प | रे गग रेरे मम | ग– गरे –रे सा
दा – – दिर | दा दिर दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
ध – प ग | – ग रेंरें रेंरें | सा– सानि –नि म | म प – सां
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा
अन्तरा—
म पप धध ध | – ध सां सां | ध सांसां धध रेंरें | सां– सांनि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
गं – गं रें | – सां रेंरें रेंरें | सां– सांनि –नि म | म प – सां
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा
ध
दा

मसीतखानी गत के साथ दिए गए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा :—

×				२				०				३			
						धुधु	पप	गु–	गुरे	–रे	ग	म	प	–	सां

तोड़े शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा —

सा	रेरे	म	प	धु	धु	म	प	धु	धु	म	प	गु	गु	रे	सा
रे	मम	प	प	नि	नि	म	प	नि	नि	म	प	नि	नि	धु	प
म	पप	धु	सा	गु	गुं	रे	सा	रे	गम	प	प	नि	नि	ध	प
गुं	–	गु	रें	सा	नि	रें	–	रे	सा	नि	धु	सा	–	सा	नि
धु	पं	नि	–	नि	धु	प	म	गु	रे	सा	–	–	रे	म	प
धु	–	–	सा	–	रे	म	प	धु	–	–	सा	–	रे	म	प
धु															

सितार-दर्पण
८१
राग—आसावरी
झपताल
मात्रा १०
× २ ० ३
१ २ । ३ ४ ५ । ६ ७ । ८ ९ १०
स्थाई—
मम । प निनि । ध ध प
दिर । दा दिर । दा रा दा
ग रे । सा सा सासा । रे मम । प प ध
दा रा । दा रा दिर । दा दिर । दा रा दा
नि ध । प प मम । प धध । सां रें गं
दा रा । दा रा दिर । दा दिर । दा रा दा
रें सांसां । ध ध प । नि धध । प म प
दा दिर । दा रा दा । दा दिर । दा रा दा
ग रे । सा सा
दा रा । दा रा

अन्तरा—

पप | प मम | प प ध
दिर | दा दिर | दा रा दा
सां सां | सां सां पंप | गं रेंरें | रें सां ध
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
सा निनि | ध ध रेंरें | सा निनि | ध ध प
दा दिर | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
रे मम | प प ध | नि धध | प म प
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
ग रे | सा सा |
दा रा दा रा

राग भैरवी

यह राग भैरवी थाट से निकलता है। इस राग मे सब कोमल स्वर लगते हैं। आरोहावरोह सम्पूर्ण है। राग का वादी स्वर मध्यम और सम्वादी स्वर षड्ज मानते हैं, फिर भी कुछ गायक धैवत–गांधार को भी वादी-सम्वादी मानते है। यह राग बहुत मधुर व लोकप्रिय है और किसी भी समय पर इस राग को गाते बजाते हैं। ख्याल इस राग मे बहुत कम गाया जाता है। राग की प्रकृति चपल होने की वजह से इस राग मे ठुमरी, गज़ल, टप्पा इत्यादि ज्यादा गाए जाते हैं। इस राग मे गांधार, पचम, धैवत और षड्ज मुकाम-स्वर है।

आरोह—सा, रे ग म, प ध, नि सा।

अवरोह– सा, नि ध प, म ग, रे सा।

पकड—म, ग, सा रे सा, ध नि सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, ग रे सा, नि सा, ध, नि सा, ग, म ग, प म ग, रे सा, नि सा ग म प, ध प, नि ध प, ध म प ग, रे सा, रे ग, रे सा, नि ध प ग, नि सा ग म प ध नि ध प, ग, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—ग म ध नि सां, नि सां, गं रें सां, नि सां गं मं गं रें सां, गं म प, गं मं गं रें सां, नि रें सां नि ध प, ध म, प ग, ग म प, ग म ग रे सा। म ध नि सां, रें सां, मं गं रें सां, रें नि ध म, ग रे सा।

राग—भैरवी

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

सा	धुधु	प	धु	म	पप	गु	म	नि	सा	रे	मम	गु	रेरे	नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पप	धु	नि	सा	सा	नि	सा	नि	सा	रे	मम	गु	रेरे	नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा

अन्तरा—

म	मम	धु	नि	सां	सां	नि	सां	नि	निनि	सां	रेंरें	सां	निनि	धु	प
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
गु	धुधु	प	धु	म	पप	गु	म	नि	सा	रे	मम	गु	रेरे	नि	सा
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा

राग—भैरवी
तोडे : मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
X २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
१—सा धध प ध | म पप ग म | सारेरे गम गरे मम | ग रेरे नि सा
२—सा धध प ध | म पप ग म | पमम गम गरे मम | ग रेरे नि सा
३—सा धध प ध | म पप ग म | ममम गम गरे मम | ग रेरे नि सा
४—सा धध प ध | म पप ग म | पधध पम गरे मम | ग रेरे नि सा
५—सा धध प ध | म पप ग म | निधध पम गरे मम | ग रेरे नि सा
६—सा धध प ध | सारेरे गम पध पम | पधध पम गरे मम | ग रेरे नि सा
७—सा धध प ध | सारेरे गम गम रेसा | सारेरे गम गरे मम | ग रेरे नि सा
८—सा धध प ध | गमम पध निध पप | धपप धम गरे मम | ग रेरे नि सा
९—सा धध प ध | गमम पम गम गरे | पमम पम गरे मम | ग रेरे नि सा

८६
सितार-दर्पण
१०–सा धध प ध | गमम धनि धप मप | निधध पम गरे मम | ग रेरे नि सा
११–धनिनि सारे गम रेसा | गमम पध निध पम | पमग गम गरे मम | ग रेरे नि सा
१२–निसासा रेग मग रेसा | सारेरे गम पम गरे | गमग पम गरे मम | ग रेरे नि सा
१३–निसासा गम पध पग | –म धनि सानिनि धनि | धपप मग रेसा मम | ग रेरे नि सा
१४–गमम धनि सारें गरें | सानिनि धप मग रेसा | सानिनि धनि सा– सानिनि
धनि सा– सानिनि धनि | सा धध प ध | म पप ग म
नि सा रे मम | ग रेरे नि सा |
१५–सारेरे गम मग मम | सारेरे गम मग मम | रेगग मप पम पप
रेगग मप पम पप | गमम पध धप धध | गमम पध धप धध

राग—भैरवी (रजाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

× १ २ ३ ४	२ ५ ६ ७ ८	० ९ १० ११ १२	३ १३ १४ १५ १६
स्थाई— त्रि	मा रे गुग मप	ग– गरे –रे सा	– धु – त्रि
दा	दा रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	– दा – रा
सा – – रेंरे	सा त्रित्रि धु प	म पप पप धु	– त्रि मा सा
दा – – दिर	दा दिर दा रा	दा दिर दिर दा	– रा दा रा
सारे गु रे सा	त्रि मा मम मम	ग– गरे –रे सा	– धु – त्रि
दिर दा दा रा	दा रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	– दा – रा

अन्तरा—

गु मम मम धु	– नि मा मा	नि सासा निनि रेंरें	सा– सानि –नि धु
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
गु – गु रे	– मा रेंरें रेंरें	सा– सानि –नि सासा	नि– निधु –धु प
दा – रा दा	– रा दिर दिर	दा– रदा –र दिर	दा– रदा –र दा
सा नि धु नि	धु प मम मम	ग– गरे –रे सा	– धु – त्रि
दा रा दा रा	दा रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	– दा – रा

मसीतखानी गत के साथ दिए गए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा

×	२	०	३
	मम मम	ग– गरे –रे सा	– ध – नि
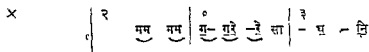
तोडे शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोडे सम मे, ६ से १० तोडे खाली से, ११ से १३ तोडे सम से और १४ वाँ तोडा सम से शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी —

×	२	०	३
सा निनि ध नि	सा – मा निनि	ध नि सा –	सा निनि ध नि
मा			

१५ वाँ तोडा सम से शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×	२	०	३
गा निनि ध प	म ग रे नि	मा – – –	सा निनि ध प
म ग रे नि	सा – – –	सा निनि ध प	म ग रे नि
मा			

६०
सितार-वर्पण
राग—भैरवी
झपताल
मात्रा १०
× २ ० ३
१ २ । ३ ४ ५ । ६ ७ । ८ ९ १०
स्थाई—
निनि । ध पप । ग ग म
दिर । दा दिर । दा रा दा
नि ध । प प मम । ग रेरे । ग ग म
दा रा । दा रा दिर । दा दिर । दा रा दा
ग रे । सा सा रेरे । सा निनि । ध ध प
दा रा । दा रा दिर । दा दिर । दा रा दा
म पप । ध ध सा । नि सासा । रे ग म
दा दिर । दा रा दा । दा दिर । दा रा दा
ग रे । सा सा
दा रा । दा रा

अन्तरा—

पप | ध मम | ग ग म
दिर | दा दिर | दा रा दा
प धध | नि नि सां | ध निनि | सां सां रेंरें
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दिर
सां निनि | ध ध प | गं रेंरें | सां सां निनि
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दिर
ध पप | ग ग म | नि धध | प म प
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
ग रे | सा सा
दा रा | दा रा

राग विहाग

विहाग राग बिलावल थाट में निकलता है। आरोह में ऋषभ, धैवत वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पूर्ण है। इसलिए राग की जाति औडव–सम्पूर्ण है। यह राग पूर्वाङ्गवादी है। वादी गांधार और संवादी निषाद है। 'नि प' और 'ग सा' इन स्वर-संगतियों से राग पहचाना जाता है। गांधार, पंचम, निषाद और षड्ज इस राग के विश्रान्ति-स्थान हैं। यह राग रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। इस राग में क्वचित् तीव्र मध्यम का प्रयोग भी हो जाता है।

आरोह—सा ग, म प, नि, सां।

अवरोह—सां, नि ध प, म ग, रे सा।

पकड़— नि सा, ग म प, म ग, रे सा।

स्थाई का स्वरूप —नि सा, ग म ग, प, ग म ग, सा,
ग म प, नि प, ग म ग, सा ग म प, म ग, सा, नि, प
मंप ग म ग, ग म प ध, ग म ग, सा, म ग, प, नि, प
सा, नि, प, ग म ग, प म ग म ग, सा।

अन्तरा का स्वरूप—ग म प नि, सां, सां रें सां नि प, प सां,
ग म ग, प मं ग म ग, सा नि सा, रे रें सां नि प, ध प मं प,
ग म ग, प, ग म ग, रे सा।

राग—विहाग
(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—											निसा	ग-	मम	प	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	नि	प	पप	ग	गम	प	मं	गम	ग	सा	सासा	नि	पप	नि	सा
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	मम	ग	म	ग	मम	प	मं	गम	ग	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					
अन्तरा—											मम	ग	मम	प	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
प	नि	सा	सांसां	नि	निनि	सा	ग	रें	सा	नि	रेंरें	सा	निनि	ध	प
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	मम	प	नि	सा	निनि	ध	प	गम	ग	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					

राग—बिहाग
तोड़े . मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
निसा ग मम प नि
१—सा नि प पप | ग गम प मं | पमंमं गम गरे निसा | ग मम प नि
२—सां नि प पप | ग गम प मं | गमम पम गरे निसा | ग मम प नि
३—सां नि प पप | ग गम प मं | पनिनि साम गरे निसा | ग मम प नि
४—सा नि प पप | ग गम प मं | गमम गम गरे निसा | ग मम प नि
५—सा नि प पप | ग गम प मं | निधध पम गरे निसा | ग मम प नि
६—सा नि प पप | पनिनि साम गरे निसा | सामम गम गरे निसा | ग मम प नि
७—सा नि प पप | निसासा गम गरे निसा | पमंमं गम गरे निसा | ग मम प नि
८—सा नि प पप | गमम गम गरे निसा | गमम पम गरे निसा | ग मम प नि
९—सा नि प पप | गमम पनि धप मंप | पमंमं गम गरे निसा | ग मम प नि

१—सा नि प पप | गमम पनि सानि मप | निधध पम गरे निसा | ग मम प नि
—पनिनि साम गरे निसा | गमम पनि धप मंप | पमंगं गम गरे निसा
ग मम प नि
—गमम गम गरे निसा | पमंगं गम गरे निसा | गमम पम गरे निसा
ग मम प नि
३—गमम पनि सारे सानि | धपप मंप मग रेसा | निसासा गम गरे निसा
ग मम प नि
४—गमम पनि धप मंप | गमम पनि सानि धप | निधध पम गरे निसा
ग मम प नि

×   २   ०
१५—पनिनि साम गरे निसा | गमम पसा निध पर्मं | पनिनि सार्मं गरें निसा

३   ×   २
गमम पसा निध पर्मं | पर्मर्मं गम गरे निसा | पनिनि साम ग— गमम

०   ३   ×
पसा नि— पनिनि साम | ग— रेंसां निध पर्मं | गमम पनि सां— पनि

२   ०   ३
सा— सां— गमम पनि | सां— पनि सा- सा- | गमम पनि सा— पनि

×   २   ०
सा नि प पप | ग गम प र्मं | गम ग सा निसा

३   ×
ग मम प नि | सा

———

राग—विहाग

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

	सा नि़	सा मम ग	— नि ध सां
	दा रा	दा दिर दा रा	— दा रा दा

नि — — प	मं प गम ग	म पप ध म	ग रे सा नि़
दा — — रा	दा रा दिर दा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा

प़ प़प़ नि़ सा	रे सा नि़ सा	सा गग गग मम	ग— गरे —रे सा
दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा— रदा —र दा

गम पध ग म	ग रे सा नि़
दिर दिर दा रा	दा रा दा रा

अन्तरा—
ग मम पप नि | – नि सां सां | सां गंगं मंमं मंमं | गं– गंरें –रें सां
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
ग मम पप नि | – ध प मं | ग मम गग मम | ग– गरे –रे सा
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
गम पध ग म | ग रे सा नि |
दिर दिर दा रा | दा रा दा रा |

यह रजाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के साथ जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा —

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी —

×				२				०				३			
ग	मम	प	सां	नि	–	प	सा	नि	–	–	–	ग	मम	प	सां
नि	–	प	सा	नि	–	–	–	ग	मम	प	सा	नि	–	प	सां
नि															

राग दुर्गा

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में गान्धार और निषाद आरोह एवं अवरोह में वर्ज्य होते हैं, तदर्थ इसकी जाति औडुव-औडुव है। इस राग को रात्रि के दूसरे प्रहर में गाने का व्यवहार है। वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर षड्ज है।

आरोह—सा रे म प ध सां।

अवरोह—सां ध प म रे सा।

पकड़—सा ध सा रे प, म प ध, म रे, ध सा।

स्थाई का स्वरूप—सा रे ध, सा, रे, सा, सा ध, सा रे प, म प ध, म रे सा रे, ध सा।

रे म प, ध, म प ध, सा रे म प, ध, म रे, म, रे, सा सा, ध सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प ध ध सां, रें सां, ध म रें, प, म प ध, सां, रें सां, ध, प, म रे प, म प ध, म रे, सा रे ध सा।

म प ध ध सां, रें सां, मं रें सां, प मं रें सां, रें सां ध प, ध म रे, सा रे प, म प ध, प ध, म, रे, सा रे ध सा।

राग—दुर्गा

(मसीतखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—											पप	म	मम	प	ध
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म	रे	प	मम	प	धध	सा	ध	म	रे	सा	सासा	रे	सासा	ध़	प़
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ध़	सा	रे	मम	प	ध	म	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा—											मम	म	पप	ध	म
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	रें	सा	सासा	ध	मम	सा	रें	सा	ध	म	मम	रें	सासा	ध	प
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	धध	म	प	म	पप	ध	म	म	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

राग—दुर्गा

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
												पप	म	मम	प	ध
१—	म	रे	प	गम	प	धप	सां	ध	मपप	धप	मरे	पप	म	गम	प	ध
२—	म	रे	प	मम	प	धप	सां	ध	गारेरे	मप	मरे	पप	म	मम	प	ध
३—	म	रे	प	मग	प	धप	सां	ध	गारेरे	गाप	सारे	पग	म	मम	प	ध
४—	म	रे	प	मम	प	धप	सां	ध	पमम	पप	मरे	पप	म	मम	प	ध
५—	म	रे	प	मम	प	धध	सा	ध	सांधध	मप	मरे	पप	म	मम	प	ध
६—	म	रे	प	मम	गारेरे	धसा	रेम	पध	मपप	धप	मरे	पप	म	मम	प	ध
७—	म	रे	प	मम	मपप	धसा	रेम	पध	पमम	पध	मरे	पप	म	मम	प	ध
८—	म	रे	प	मम	सारेरे	मप	मरे	धसा	सारेरे	साध	सारे	पप	म	मम	प	ध
९—	म	रे	प	मम	मपप	धप	मरे	सासा	गारेरे	मप	मरे	पप	म	मम	प	ध

१०–म रे प मम | मपप धसां धम पध | मरेरे सारे धसा पम | म मम प ध

× २ ० ३

११–सारेरे मप धध मप | धसांसां धप मरे पप | मपप धप मरे पप | म मम प ध |

१२–सारेरे साध सारे मप | मपप धसां धप मप | धपप धम रेसा पप | म मम प ध |

१३–मपप धसा रेंसां धसां | धसासा रेंसां धम पप | सांरेंरें सांध मरे धप | म मम प ध |

१४–मपप धसां रेंमं रेंसां | सांरेंरें साध पध मप | सांधध पम रेसा पप | म मम प ध |

×				२				०			
१५–सारेरे	गग	मम	गग	रेमम	पप	धप	पप	मगग	पध	सांप	सारें
३				×				२			
सांधप	मग	मरे	धगा	सारेरे	गग	मम	रेगग	पध	धप	मगग	धसां
०				३				×			
धध	मप	गम	रेगा	सारे	मगा	रेम	सारे	म	रे	ग	मग
२				०							
प	धप	सां	ध	म	रे	गा					

———

राग—दुर्गा

(रजाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—									ध	सासा	धध	पप	म–	मरे	–रे	सारे
									दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर
	प	–	प	म	प	ध	म	प	रे	मम	रेरे	पप	म–	मरे	–रे	सा
	दा	–	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
	ध	सासा	धध	रेंरें	सा–	साध	–ध	मप	ध	सासा	धध	पप	म–	मरे	–रे	सारे
	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर
अन्तरा—	म	पप	पप	ध	–	ध	सा	सा	ध	सांसा	धध	रेंरें	सां–	सांध	–ध	म
	दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
	म	पप	ध	प	ध	म	धध	पप	म–	मरे	–रे	धप	म–	मरे	–रे	सा
	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा–	रदा	–र	दा
	म	पप	ध	प	म	म	रे	सा								
	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा								

राग—दुर्गा

तोड़े : रज़ाखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

—प – प म | प ध म प | सा रेरे म प | म रे ध सा
सा रेरे सा ध | सा रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
—प – प म | प ध म प | म पप ध प | म रे ध सा
सा रेरे म प | म रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
१०–प – प म | प ध म प | म पप ध सा | ध म प ध
म रेरे सा रे | ध ध सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
११–सा रेरे म प | ध ध म प | ध सासा ध प | म रे प ग
म पप ध प | म रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
१२–सा रेरे सा ध | सा रे म प | म पप ध सा | ध प म प
ध पप ध म | रे रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
१३–म पप सा ध | रें सा ध सा | ध सासा रें सा | ध म प प
सा रेंरें सा ध | म रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे
१४–म पप ध सा | रे म रें सा | सा रेंरें सा ध | प ध प म
सा धध प म | रे रे सा सा | ध सासा धध पप | म– मरे –रे सारे

१५-सा रेरे म म	प म प प	रे मम प प	ध प ध प
म पप ध ध	सा ध सा रें	सां धध म प	म रे ध सां
सा रेरे म प	म म रे मम	प ध प प	म पप ध सा
ध ध ध प	म म रे सा	सा रेरे म म	प — रे म
प प ध —	म पप ध ध	सां ध — सां	— रें सा
प म — रे	— म रे सा	सा रे प सा	रे प सा
प — प म	प ध म प	ध,, सासा धध पप	म— मरे —रे सा
प			

विभाग दूसरा

११ राग

१. भीमपलासी
२. हमीर
३. केदार
४. जौनपुरी
५. देस
६. तिलककामोद
७. कालिंगड़ा
८. ब्रिन्दावनी सारंग
९. सोहिनी
१०. बागेश्री
११. तिलंग

राग भीमपलासी

यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है। इस राग में गांधार, निषाद कोमल, और सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ, धैवत वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पूर्ण है, इसलिए राग की जाति औडव-सम्पूर्ण है। राग का वादी स्वर मध्यम व संवादी स्वर षड्ज है। यह राग दिन के तीसरे प्रहर में गाया जाता है।

आरोह—नि सा, ग म, प नि, सां।

अवरोह– सां, नि ध प म, ग, रे, सा।

पकड़—नि सा म, म ग, प म, ग, म ग, रे, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, प़ नि सा, म प़ नि सा, सा म ग, म प ग, ध ग रे सा, नि सा, म ग, म प ग, ग म प नि ध प, म प नि ध प, म प ग, प ग, म ग रे सा, सा म, ग म, प, ध प, म प ग, ग प सां नि ध प, म प ग, म प, ध प, म ग, म ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प, नि नि सां, नि सां गं रें सां, रें सां, नि ध प, प ग, म गं, रें सां, रें सां, नि ध, प म, प ग, म, प ग, म ग रे सा। म प नि, प नि सां, सां नि ध प, म प नि ध प, गं रें सां, नि ध प, म प ग, सा ग म प ग, रे सा।

राग—भीमपलासी
(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

		निनि	प पप ग म
		दिर	दा दिर दा रा
प प प मम	ग मम ग म	ग रे सा सासा	नि निनि ध प
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
म पप नि सा	सा मम ग म	ग रे सा	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

अन्तरा—

		पप	म पप ग म
		दिर	दा दिर दा रा
प नि सा सासा	नि निनि सा ग	रे सा नि रेंरें	सा निनि ध प
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
ग मम प नि	नि धध प म	ग रे सा	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

राग—भीमपलासी
तोड़े (मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
निनि ध पप ग म
१—प प प मम ग मम ग म पनिनि सानि धप निनि ध पप ग म
२—प प प मम ग मम ग म गमम पनि धप निनि ध पप ग म
३—प प प मम ग मम ग म पमम पनि धप निनि ध पप ग म
४—प प प मम ग मम ग म सानिनि धप मप निनि ध पप ग म
५—प प प मम ग मम ग म सारेंरें सानि धप निनि ध पप ग म
६—प प प मम निसासा मग रेसा निसा गमम पनि धप निनि ध पप ग म
७—प प प मम गमम पनि धप मप पमम गम मग निनि ध पप ग म
८—प प प मम मपप निसा मग रेसा निसासा गम मप निनि ध पप ग म

९—प प प मम | गुमम पनि सानि धप | पमम पनि धप निनि | ध पप गु म
×
१०-प प प मम | २ गुमम पनि सारे सानि | ० पनिनि धप मप निनि
३
ध पप गु म |
×
११-मपप निगा मगु रेसा | २ गुमम पनि धप मप | ० सारेंरें सानि धप निनि
३
ध पप गु म |
×
२-निसासा गुम पप गुम | २ पनिनि सानि धध पप | ० सानिनि धनि धप निनि
३
ध पप गु म |
×
३-गुमम पनि सागु रेंसा | २ सारेंरें सानि धप मप | ० सानिनि धप मप निनि
३
ध पप गु म |

१४-मपप निसा मंगं रेंसा | पनिनि धप मग रेमा | निगागा मग मप निनि
पं पप ग म
१५-निसासा मग मम मग | मम सागग पम पप | पम पप मपप निप
निनि निप निनि पनिनि | सानि सासां सानि सासा | निसासा मग म- सागग
पम प- मपप निप | नि- पनिनि सानि सा- | सानिनि धप मप गम
प- प- सानिनि धप | मप गम प- प- | सानिनि धप मप गम
प प प मम | ग मम ग म | ग रे सा

राग—भीमपलासी

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

											नि	ध	प	ग	म
											दा	दा	रा	दा	रा
प	–	प	–	ग	ग	मम	गग	रे–	रेसा	–सा	निनि	नि	निनि	नि	नि
दा	–	रा	–	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	निनि	प	सा	–	सा	रेंरें	रेंरें	सा–	सानि	–नि	नि	ध	प	ग	म
दा	दिर	दा	रा	–	दा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	रा	दा	रा

अन्तरा—

ग	मम	पप	नि	–	नि	सां	सां	नि	सांसां	निनि	रेंरें	सां-	सांनि	-नि	धप
दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	–र	दिर
ग	–	ग	ग	–	ग	मग	गग	रे–	रेसा	–सा	नि	ध	प	ग	म
दा	–	रा	दा	–	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	रा	दा	रा

मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा :—

		०				३			
मम	गुगु	रे–	रेसा	–सा	नि	ध	प	ग	म

तोड़े शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा —

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी —

×				२				०				३			
सा	निनि	ध	प	म	प	ग	म	प	–	प	–	सा	निनि	ध	प
म	प	ग	म	प	–	प	–	सा	निनि	ध	प	म	प	ग	म
प															

———

राग हमीर

राग हमीर मे दोनो मध्यम और सब स्वर शुद्ध हैं। तीव्र मध्यम केदार की तरह आरोह मे लिया जाता है। इस राग मे धैवत–गांधार

नि

वादी-सवादी हैं और 'ग म प' यह स्वर-समूह राग का प्राण है। धैवत पर ठहराव भी बहुत होता है। आरोह मे निषाद वक्र और अवरोह मे गांधार वक्र है। कुछ गुणी लोग वादी पचम मानते हैं। इस राग को कल्याण थाट मे रखा है। यह राग रात के पहले प्रहर मे गाया जाता है। राग की जाति वक्र सम्पूर्ण-सम्पूर्ण मानी गई है।

आरोह—सा, रे सा, ग म ध, नि ध सा।

अवरोह– सा नि ध प, मं प ध प, ग म रे सा।

पकड—सा रे सा ग म ध।

. स्थाई का स्वरूप—सा, रेसा, ग म ध, ध प, ग, म रे, ग म ध प, ग, म रे, सा, रे सा, ग म ध। सा, रे सा, ग म ध नि ध, सा नि ध प, मं प ध, मं प, ग म ध, प, ग म रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं प ध प, सा नि ध, प, ध मं प, ग म ध, मं प, सा, सा रे सा नि ध, सा, नि रें, सा नि ध प, मं प ध प, ग म ध, सा ग म, रें, सा सा रे सा, नि ध प मं प, ग म ध, ग म रे सा।

राग—हमीर
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
पप | मं पप ग म
दिर | दा दिर दा रा
ध ध नि पप | ध निध नि सा | नि ध प पप | मं पप प ग
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
ग गग गम रे | ग धप मं प | गम रे सा |
दा दिर दिर दा | दा दिर दा रा | दिर दा रा |
अन्तरा—
गग | रे सासा प़ प़
दिर | दा दिर दा रा
प़ प़प़ सा सा | रे गम ध प | गम रे सा |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा |

राग—हमीर

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			
												पप	मं	पप	ग	म
१—	ध	ध	नि	पप	ध	निध	नि	सा	मंपप	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
२—	ध	प	नि	पप	ध	निध	नि	सा	धपप	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
—३—	ध	ध	नि	पप	ध	निध	नि	सां	गमम	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
४—	ध	ध	नि	पप	ध	निध	नि	सा	पपप	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
५—	ध	ध	नि	पप	ध	निध	नि	सा	रेंसासां	निध	मंप	पप	मं	पप	ग	म
६—	ध	ध	नि	पप	सारेरे	साग	मध	मंप	मंपप	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
७—	ध	ध	नि	पप	गमम	धप	गम	रेसा	धपप	गम	रेसा	धप	मं	पप	ग	म
८—	ध	ध	नि	पप	सारेरे	सासा	गम	धप	पपप	गम	रेसा	पप	मं	पप	ग	म
९—	ध	ध	नि	पप	गमम	धनि	धप	मंप	सानिनि	धप	मंप	पप	मं	पप	ग	म

१०–प प नि पप | मंपप धनि पप मंप | रेंसांसां निध मंप पप | मं पप ग म
× २ ० ३
११–गमम धनि धप मंप | गमम धनि सांनि धप | सांरेंरें सांनि धप पप | मं पप ग म |
× २ ० ३
१२–गमग धग मग रेसा | सारेरे साग मध निध | रेंसांसां निध मंप पप | मं पप ग म |
× २ ० ३
१३–गमम गम रेसा निसा | मंपप गम रेसा निसा | धपप गम रेसा पप | मं ग म |
× २ ० ३
१४–गमम धनि सांरें सांनि | सांनिनि धनि धप मंप | पपप गम रेसा पप | मं पप ग म |

×				२				०			
१५–सारेरे	साग	मध	निध	सानिनि	सारें	सानि	धप	सानिनि	पप	मंप	धप
३				×				२			
मंपप	पप	गम	रेसा	धपप	गम	रेसा	–रे	सा–	गम	ध–	धनि
०				३				×			
सा–	सारें	सानि	धप	मंपप	गम	रेगा	निसा	सारेरे	सासा	रेरेसा	गम
२				०				३			
ध–	–	सारेरे	सासा	रेरेसा	गम	ध–	–	सारेरे	सासा	रेरेसा	गम
×				२				०			
ध	ध	नि	पप	ध	निध	नि	सा	नि	ध	प	

१२२
सितार-दर्पण
राग—हमीर
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
प प | मं पप मं प | – ग – म
दा रा | दा दिर दा रा | – दा – रा
ध – – म | ध नि सां रें | रें सांसां निनि धध | प– पमं –मं प
दा – – रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
रे रेरे रेरे ग | – म धध धध | प– पमं –मं पप | ग– मरे –रे सा
दा दिर दिर दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
रें – सां – | प –
दा – रा – | दा –

अन्तरा—
ग मम मम ध | नि ध सां सां | सा गंगं गंगं मंमं | गं– गंरें –रें सां
दा दिर दिर दा | रा दा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
गंगं गंगं मंमं रें | – सा रेंरें रेंरें | सा– सानि –नि सासा | नि– निध –ध प
दिर दिर दिर दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
रें – सा – | प –
दा – रा – | दा –

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े ख़ाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा—

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×				२				०				३			
सा	रेरे	सा	सा	रेरे	सा	ग	म	ध	–	–	–	सा	रेरे	सा	सा
रेरे	सा	ग	म	ध	–	–	–	सा	रेरे	सा	सा	रेरे	सा	ग	म
ध															

राग-केदार

राग केदार कल्याण थाट का दो मध्यम लगने वाला राग है । तीव्र मध्यम का प्रयोग सिर्फ आरोह में 'मं प ध प', 'मं ग प', 'प मं प', इसी तरह किया जाता है । लेकिन 'ग मं प' अथवा 'प मं ग' इस तरह नहीं हो सकता । क्वचित् दोनों मध्यम का एक साथ प्रयोग भी कुशल गायक करते हैं । इस राग का वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज माना गया है । आरोह में निषाद और गांधार वर्ज्य होते हैं । गांधार स्वर को अल्प या दुर्बल स्वर माना गया है । आरोह में ऋषभ और गांधार दोनों वर्ज्य होने से राग की जाति औडव-षाडव मानी गई है । रात्रि के प्रथम प्रहर में गुणी लोग चाव से इस राग को गाते-बजाते हैं । विवादी होने पर भी कोमल निषाद कुशलता से लिया जाता है।

आरोह —सा म, म प, ध प, नि ध सां ।

अवरोह —सां नि ध प, मं प ध प, म, ग म रे सा ।

पकड़ —सा म, म प, ध प म, प म, रे सा ।

स्थायी का स्वरूप—सा रे, सा, सा म, म प, ध प म, प म, रे, सा, सा म, प म, प ध प म, ध प म, सा म प ध प म, प म, रे, सा, नि ध प, मं प ध प, म मं प ध, नि ध प, मं प ध, मं प म, रे रे सा, सा रें, सा नि ध प, ध मं प, मं प ध प म, प म सा रे सा ।

अन्तरा का स्वरूप—प प, सां, सां, सां, सां रें, सां, सां ध, सां रें, सां नि ध, प, रें सां नि ध प, ध मं प सां, प ध प मं प, सां रें रें, सां नि ध, प, मं प ध मं प म प म, म, रे रे सा ।

राग—केदार
(मसीतखानी गत)
त्रिताल मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई— पप । गम रेरे सारे सा
दिर । दिर दिर दिर दा
सा म म म । म मम प प । ध ध प पप । म गम प प
दा दा रा दा । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
सा धध ध प । म मम प प । गम रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दा रा
अन्तरा— पप । मम मम प प
दिर । दिर दिर दा रा
सां सा सां सांसां । ध धध सा रें । सांनि ध प मंमं । रें सांनि ध प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दिर दा रा दिर । दा दिर दा रा
म मम प प । सा निनि ध प । गम रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दा रा

राग—केदार

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल — मात्रा १६

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			
												पप	गम	रेरे	सारे	सा
१—	सा	म	म	म	म	मम	प	प	सासासा	मम	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
२—	सा	म	म	म	म	मम	प	प	मंपप	धप	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
३—	सा	म	म	म	म	मम	प	प	धपप	मंप	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
४—	सा	म	म	म	म	मम	प	प	निनिनि	धप	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
५—	सा	म	म	म	म	मम	प	प	सानिनि	धप	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
६—	सा	म	म	म	सासासा	मम	ममम	पप	मंपप	धप	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
७—	सा	म	म	म	ममम	गम	रेसा	निसा	सासासा	मम	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
८—	सा	म	म	म	मंपप	धप	मम	रेसा	सासासा	मम	मम	पप	गम	रेरे	सारे	सा
९—	सा	म	म	म	सांनिनि	धप	मंप	धप	ममम	गम	रेसा	पप	गम	रेरे	सारे	सा

१०—गा म म म | मेंगा धप पप मम | मेंगा मम रेगा पप | गम रेरे सारे सा
× २ ०
११—मेंगा पनि पप मेंग | गागागा मम मम पप | मेंगा पप मम पप
३
गम रेरे सारे सा |
× २ ०
१२—पपप गागा रेंगा निगा | गागागा गम ममम पप | ममम गम रेंसा पप
३
गम रेरे सारे सा |
× २ ०
१३—पपप सांसां सांगांसां रेंसां | निधप सांरें सांनि धप | सांनिनि धप मम धप
३
गम रेरे सारे सा |
× २ ०
१४—सांरेंरें सांनि धप मेंप | मेंपप धप मम रेगा | मेंपप धप म— मेंपप
३ × २
धप म— मेंपप धप | गा म म म | म मम प प
० ३
ध ध प पप | गम रेरे सारे सा |

× | २ | ०
१५–सारेरे साम मम गम | गमम गप पप मंप | मंरप धध पप मम

३ | × | २
धपप मंर मम रेसा | सारेरे साम –म गम | गमम गप –प मंप

० | ३ | ×
मंपप धध –प मंप | धपप मम –म रेसा | सारेरे साम मंपप धप

२ | ० | ३
म– –सा रेसा –सा | म– –सा रेसा –सा | म– –सा रेसा –सा

× | २ | ०
सा म म म | म मम प प | ध ध ध

१३०
सितार-दर्पण
राग—केदार
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई— म | ग 'म धप पप | म– मरे –रे नि | रे सा – सा
दा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा
म – – म | म मम म म | म मम मम प | – प मं प
दा – – रा | दा दिर दा रा | दा दिर दिर दा | – रा दा रा
नि ध प ध | प म धध पप | म– मरे –रे नि | रे सा – सा
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा
अन्तरा—
प पप पप सां | – सा सा सा | सा सासा धासा सांसा | रें– रेंनि –नि सां
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
म मम मम प | – प मं प | ध निनि धध पप | म– मरे –रे सा
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
मं पप ध प | म म
दा दिर दा रा | दा रा

मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा :—

	०	३
धध पप	म- मरे -रे नि़	रे सा - सा

तोड़े शुरू करने के स्थान:—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १३ तोड़े सम से और १४ वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी:—

×	२	०	३
मं पप ध प	म - मं पप	ध प म -	मं पप ध प
म			

१५ वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा। अन्तिम पंक्तियाँ तिहाई के साथ इस प्रकार बजेंगी :—

×	२	०	३
सा रेरे सा म	मं पप ध प	म - - सा	रे सा - सा
म - - सा	रे सा - सा	म - - सा	रे सा - सा
म			

राग-जौनपुरी

आसावरी थाट से राग जौनपुरी उत्पन्न होता है। इसके आरोह में सिर्फ गांधार वर्ज्य है। इसलिए राग की जाति षाडव-सम्पूर्ण है। राग का वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर गांधार है। यह राग दिन के दूसरे प्रहर में गाया जाता है।

आरोह —सा, रे म, प, धु, नि सां।

अवरोह —सां, नि धु प, म गु, रे सा।

पकड़ —म प, नि धु प, धु म, प गु, रे म, प।

स्थायी का स्वरूप—सा, रे सा, गु रे सा, रें म प धु गु, रे सा, रे म प, नि धु, प, म प धु प गु, रे सा, म प नि धु प, प गु, रे सा, म प धु प, धु गु, रे म प नि धु प, धु गु, रे रे सा, रे म प नि धु प, सां नि धु प गु, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प, गु रे म प, नि धु, प, गु रे म प, सा नि धु प, रें सा नि धु प, गुं रें सा, रें नि धु प, म प धु, नि सां, धु, सा गुं, रें सा, म गुं रें सा, रे नि धु प, म प सा नि धु प, म प धु म प गु, रे सा।

सितार-दर्पण
१३३
राग—जौनपुरी
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
मम | प निनि मपध मप
दिर | दा दिर दिरदा दिर
ग॒ रे सा सासा | रे मम प ध॒ | नि॒ ध॒ प मम | प ध॒ध॒ नि॒ सा
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
गं रेंरें सा नि॒ | रें सांसां नि॒ सा | नि॒ ध॒ प |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा |
अन्तरा—
मम | म पप ध॒ नि॒
दिर | दा दिर दा रा
सा सा सा पप | ग॒ रेंरें रे सा | नि॒ ध॒ प रेंरें | सा निनि ध॒ प
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
गं रेंरें सा नि॒ | रें सांसां नि॒ सा | नि॒ ध॒ प |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा |

१६४
सितार-दर्पण
राग—जौनपुरी
तोड़े : मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
मम प निनि मपधु म
१—गु रे सा सासा रे मम प धु मपप धुप गुरे मम प निनि मपधु म
२—गु रे सा सासा रे मम प धु सारेरे मप गुरे मम प निनि मपधु म
३—गु रे सा सासा रे मम प धु धुपप मप गुरे मम प निनि मपधु मप
४—गु रे सा सासा रे मम प धु धुपप धुप गुरे मम प निनि मपधु मप
५—गु रे सा सासा रे मम प धु सानिनि धुप गुरे मम प निनि मपधु मप
६—गु रे सा सासा सारेरे मप धुनि धुप मपप धुप गुरे मम प निनि मपधु मप
७—गु रे सा सासा मपप धुनि धुप मप मपप धुप गुरे मम प निनि मपधु मप
८—गु रे सा सासा मपप धुनि सानि धुप मपप धुप गुरे मम प निनि मपधु मप
९—गु रे सा सासा सारेरे मप गुम रेसा सारेरे मप गुरे मम प निनि मपधु मप

× २ ० ३
१०–ग रे सा सासा | मपप धनि धनि धप | धपप मप गरे मग | प निनि मपध मप |
× २ ० ३
११–सारेरे मप धप मप | रेमम पध निध पध | मपप धप गरे मम | प निनि मपध मप |
× २ ० ३
१२–मपप धनि धनि धप | मपप धनि सानि धप | सानिनि धप गरे मम | प निनि मपध मप |
× २ ० ३
१३–मपप धनि धप मप | मपप धप गग रेसा | सारेरे मप गरे मम | प निनि मपध मप |

× | २ | ० |
१४–सारेरे मप धनि धप | मपप धनि सानि धप | धपप धग गरे मग |

३ |
प निनि मपध मप |

× | २ | ० |
१५–सारेरे मप धनि धप | रेमम पध निसां निध | मपप धनि सारें सांनि |

३ | × | २ |
धपप मप गग रेसा | मपप धनि ध– पधध | निसा नि– सानिनि धप |

० | ३ | × |
मपप धग ग– गपप | धप ग– मपप धप | ग रे सा सासा |

२ | ० |
रे मम प ध | नि ध प |

सितार-दर्पण
१३७
राग—जौनपुरी
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
प म | प निनि धध धध | प– पम –म प
दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
ध – – प | ध प म प | रे गग रेरे मम | ग– गरे –रे सा
दा – – रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
रे मम गग प | – ध नि सा | नि सासा निनि रेंरें | सा– सानि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
रें सा नि सा | नि ध
दा रा दा रा | दा रा

अन्तरा—
रे मम मम प | — ध नि सा | नि सासा निनि रेंरें | सा— सानि —नि ध
दा दिर दिर दा | — रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा
गं — गं रें | — सा रेंरें रेंरें | सा— सांनि —नि सासा | नि— निध —ध प
दा — रा दा | — रा दिर दिर | दा— रदा —र दिर | दा— रदा —र दा
रें सां नि सा नि ध |
दा रा दा रा दा रा |

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के साथ जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई भी टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० खाली से, ११ से १४ सम से।

१५-वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×				२				०				३			
ध़	पप	म	प	ध़	–	ध़	पप	म	प	ध़	–	ध़	पप	म	प
ध़															

राग देस

देस राग समाज थाट के अन्तर्गत आता है। इस राग के आरोह में सा, रे, म, प, नि यह पाँच शुद्ध स्वर होते हैं, किन्तु अवरोह कोमल निषाद के साथ सम्पूर्ण होता है। आरोह की तानों में सम्पूर्ण आरोह वक्र रीति से बताने में आता है। इसलिए सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति भी इस राग की मानी जाती है। इस राग में वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। यह बहुत प्रचलित व लोकप्रिय राग है। आरोह में गांधार-धैवत वर्ज्य होते हैं, परन्तु कभी-कभी दुर्बल रीति से प्रयुक्त होते हैं। अवरोह में ऋषभ स्वर वक्र होता है। राग का गाने का समय रात का दूसरा प्रहर सर्वमान्य है।

आरोह—सा, रे, म प, नि सा।

अवरोह—सा नि॒ ध प, म ग, रे ग सा।

पकड़—रे, म प, नि॒ ध प, प ध प म, ग रे, ग, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे रे, म ग रे, रे ग रे म ग रे, ग सा, नि सा, रे म प, नि॒ ध प, म प ध म ग रे, प म ग रे, म ग रे, ग सा, रे रे म प, नि॒ ध प, ध म ग रे, म प नि सा, रें नि॒ ध प, ध म ग रे, ग रे, नि सा।

अन्तरा का स्वरूप—म, म प, नि सा, प नि सा, रें, ग रें, मं ग रें, प म ग रें, ग रें, नि सा, रें सा, नि॒ ध प, रे रे म प, सा, नि॒ ध प, म प ध म ग रे, नि़ सा।

राग—देस

(मसीतखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			सासा	रे मम प नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सा नि सा निसा	नि पध म प	म ग रेग मम	ग रेरे नि सा
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा रा दिर दिर	दा दिर दा रा
	नि मासा नि सा	रे मम प ध	म ग रेग	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दिर	
अन्तरा—			मम	म पप नि नि
			दिर	दा दिर दा रा
	प नि सा सासा	नि निनि सा रें	सा नि ध रेंरें	सा निनि
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर रा
	रे मम प नि	सा निसा नि पध	म ग रेग सासा	रे मम प नि
	दा दिर दा रा	दा दिर दा दिर	दा दा दिर दिर	दा दिर दा रा

राग—देस

तोडे : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			
												सासा	रे	मम	प	नि
१—	सा	नि	सा	निसा	नि	पध	म	प	निसासा	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
२—	सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	रेगग	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
३—	सा	नि	सां	निसा	नि	पध	म	प	पमम	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
४—	सा	नि	सा	निसा	नि	पध	म	प	पधध	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
५—	सा	नि	सा	निसा	नि	पध	म	प	मपप	गम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
६—	सा	नि	सा	निसा	रेमम	गम	गरे	मप	पधध	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
७—	सा	नि	सां	निसां	रेमम	पनि	धप	मप	पमम	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
८—	सा	नि	सा	निसा	निसासा	रेम	गरे	मप	निसासा	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
९—	सां	नि	सां	निसां	मपप	धम	गरे	मप	रेगग	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि

०—सां नि सां निसा | ममप निधपध मप | पधध पम गरे गसा | रे मम प नि

×
११—निसासा रेम गम गरे | २ सारेरे मप मम गरे | ० मपप धम गरे गसा

३
रे मम प नि |

×
१२—रेमम पनि धप धप | २ मपप धम गरे गसा | ० रेगग रेम गरे गसा

३
रे मम प नि |

×
१३—मपप निसा रेम गरे | २ रेमम पनि धप मप | ० पमम गम गरे गसा

३
रे मम प नि |

×
१४—रेमम पनि सारें सांनि | २ धपप मग रेग सासा | ० रेगग रेम गरे गसा

३
रे मम प नि |

राग—देस

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
.											सासा	रे	मम	प	नि
१—सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	निसासा	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
२—सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	रेगग	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
३—सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	पमम	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
४—सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	पधध	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
५—सां	नि	सां	निसां	नि	पध	म	प	मपप	मम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
६—सां	नि	सां	निसां	रेमम	गम	गरे	मप	पधध	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
७—सां	नि	सां	निसां	रेमम	पनि	धप	मप	पमम	पम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
८—सां	नि	सां	निसां	निसासा	रेम	गरे	मप	निसासा	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि
९—सां	नि	सां	निसां	मपप	मम	गरे	मप	रेगग	रेम	गरे	गसा	रे	मम	प	नि

सितार-दर्पण
१४३
१०–सां नि सां निसां | मपप निध पध मप | पधध पम गरे गसा | रे मम प नि
× २ ०
११–निसासा रेम गम गरे | सारेरे मप धम गरे | मपप धम गरे गसा
३
रे मम प नि |
× २ ०
१२–रेमम पनि धप धप | मपप धम गरे गसा | रेमग रेम गरे गसा
३
रे मम प नि |
× २ ०
१३–मपप निसा रेम गरे | रेमग पनि धप मप | पमम गम गरे गसा
३
रे मम प नि |
× २ ०
१४–रेमम पनि सारें सांनि | धपप मग रेग सासा | रेगग रेम गरे गसा
३
रे मम प नि |

× | २ | ०
१५–निसासा रेम गरे रेम | गरे –रेम –गरे –गसा | –रेमम –पनि धप पनि

३ | × | २
धपप मग रेग सासा | निसासा रेम –म गरे | –सारेरे मप –प मग

० | ३ | ×
रेमम पनि –नि धप | मपप निसां –सां रेंसां | रेमम पनि –नि धप

२ | ० | ३
मपप धम –म –गरे | रेमम पनि –सां– रेमम | –पनि –सां– –रेमम पनि

× | २ | ०
सा नि सां निसां | नि पध म प | ग ग रेग सासा

३ | ×
रे मम प नि | सा

सितार-दर्पण
१४५
राग-देस
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
नि सा | रे मम मम प | — नि — नि
दा रा | दा दिर दिर दा | — दा — रा
सा — — नि | ध नि प म | ग पप नि सा | सां रेंरें सासा निनि
दा — — रा | दा रा दा रा | दा दिर दा रा | दा दिर दिर दिर
ध— धप —प म | ग रे ग सा
दा— रदा —र दा | दा रा दा रा
अन्तरा—
नि सासा नि सा | रे — रे म
दा दिर दा रा | दा — दा रा

म पप ध म | ग रे ग सा | नि़ सासा नि़ सा | रे – रे ग
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर रा रा | दा – दा रा
ग पप ध म | ग रे म प | नि सांसां नि सां | – ध म प
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दा रा | – दा रा दा
नि सांसां नि सां | – ध म प | नि सांसां नि सां | – ध म प
दा दिर दा रा | – दा रा दा | दा दिर दा रा | – दा रा दा
नि धध प म | ग रे ग सा | रे मम गग प | – नि – नि
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दां | – दा – रा
सा |
दा |

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के साथ जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा —

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी —

×				२				०				३			
रे	मम	प	नि	सा	–	रे	मम	प	नि	सा	–	रे	मम	प	नि
सा															

राग तिलककामोद

यह राग भी खमाज थाट का ही जन्य राग है। आरोह में धैवत वर्ज्य गिनने में आता है, इसलिए इस राग की जाति षाडव-सम्पूर्ण मानी जाती है। इसकी प्रकृति क्षुद्र मानी गई है। राग का चलन वक्र और मधुर है। राग का वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। निषाद, षड्ज और पंचम इस राग में विश्रांति-स्थान हैं। 'प नि सा रे ग सा, ग, सा नि' इस स्वर-समूह के आते ही राग का स्वरूप श्रोताओं पर स्पष्ट हो जाता है। गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है।

आरोह—सा रे ग, सा, रे म प ध म प, सां।

अवरोह—सां प ध म ग, सा रे ग, सा नि।

पकड़—प नि सा रे ग, सा, रे प म ग, सा नि।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, रे, रे प, म ग, सा, प नि सा रे ग, सा, रे ग, म प ध म ग, सा, रे म रे, म ग, सा, प नि सा रे प, म ग, सा, रे ग, सा रे म प, ध म प, सां, प, ध म ग रे, ग सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प सां प, प नि सां रें गं सां रें पं मं गं, सां रें ग, सां प, म प सां प, ध म ग रे, रे प, म ग, सा रे ग सा। नि सा, रें, प म ग, सां, रें गं सां, म प सां, प ध, म ग, सा रे प म ग, सा रे ग सा।

राग-तिलककामोद
(मसीतखानी गत)
त्रिताल मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई—
प़ निनि सा रे | ग सा रे म | प ध म मग | ग रेग सा नि़
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
रे मम प सां | - नि ध प | म ग ग मम | ग रेग सा नि़
दा दिर दा रा | - दा रा दा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
अन्तरा—
रे मग प सां | - प सां सां | प सां सां रेंरें | सां निनि ध प
दा दिर दा रा | - दा रा दा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
रे मम प सां | - नि ध प | म ग ग मम | ग रेग सा नि़
दा दिर दा रा | - दा रा दा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा

१५०
सितार-दर्पण
राग—तिलककामोद
तोड़े मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
१—प निनि सा रे | ग सा रे म | साप पम गरे मम | ग रेग सा नि
२—प निनि सा रे | ग सा रे म | पनिनि सारे गमा मम | ग रेग सा नि
३—प निनि सा रे | ग सा रे म | सारेरे पम गरे मम | ग रेग सा नि
४—प निनि सा रे | ग सा रे म | पपप सामा रेसा मम | ग रेग सा नि
५—प निनि सा रे | ग सा रे म | सारेरे सारे गमा मम | ग रेग सा नि
६—प निनि सा रे | पनिनि सारे गमा रेम | पमम गम गरे म
ग रेग सा नि |

	×				२				०			
७—	प़	नि़नि़	सा	रे	सारेरे	गसा	रेग	पध	सांप	धम	गरे	मम
	३											
	ग	रेग	सा	नि़								
	×				२				०			
८—	प़	नि़नि़	सा	रे	सारेरे	गसा	रेरेग	सानि़	पनि़नि़	सारे	गसा	मम
	०											
	ग	रेग	सा	नि़								
	×				२				०			
९—	प़	नि़नि़	सा	रे	सारेरे	सारे	गसा	रेग	पधध	मम	गरे	मम
	३											
	ग	रेग	सा	नि़								
	×				२				०			
१०—	प़	नि़नि़	सा	रे	पपप़	सासा	रेग	सासा	सारेरे	पम	गरे	मम
	३											
	ग	रेग	सा	नि								

० प ध म मम | ३ ग रेग सा नि |

× १४–सा– रेंसा –सां प– | २ धम –म ग– रेमम | ० गरेरे सानि पमम गरेरे

३ सानि पमम गरेरे सानि | × प निनि गा रे | २ ग सा रे म
० प ध म मम | ३ ग रेग सा नि |
× :-सारेरे गसा रेरेग सानि | २ मपप धम पपध मग | ० सारेरें गसा रेरेगं सानि
३ मपप धम पपध मग | × सारेरे गसा रेरेग सानि | २ सा- -मम गरेरे सानि
० प- -मम गरेरे सानि | ३ प- -मम गरेरे सानि | × प निनि सा रे
२ ग सा रे म | ० प ध म मम | ३ ग रेग सा नि

राग—तिलककामोद
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
प़ पप नि सा | रे ग नि़ सा | रे पप मम मम | ग- गसा -सा नि
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा
रे मम मम प | - प सा सा | प धध मम मम | ग- गसा -सा नि़
दा दिर दिर दा | - रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा
अन्तरा—
म मम मम प | - प सां सां | प निनि सांसां मगं | रें- रेंनि -नि सां
दा दिर दिर दा | - रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा
प पप पप सां | - सा पध मम | ग- गरे -रे मम | ग- गसा -सा नि़
दा दिर दिर दा | - रा दिर दिर | दा- रदा -र दिर | दा- रदा -र दा

मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए का टुकड़ा :—

	धध मम	ग— गरे —रे मम	ग— गसा —सा नि़

(मात्रा-चिह्न: ० — ग— गरे —रे मम ; ३ — ग— गसा —सा नि़)

तोड़े शुरु करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ और १२ सम से और वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी —

	२	०	३
रेरे सा नि	प — ग रेरे	सा नि प —	ग रेरे सा नि़

१४ वाँ तोड़ा —

	२	०	३
ग — रे सा	— सा प —	ध म — म	ग — रे मम
ग रेरे सा नि़	प़ मम ग रेरे	सा नि प मम	ग रेरे सा नि
प़			

राग—झालिंगड़ा
(मसीतखानी गत)
सितार
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
गारे | नि़ गागा रे म
दिर | दा दिर दा रा
रे ग ग मम | ग रेरे सा नि़ | गा सा गा मम | ग मम प ध
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
प म ग मम | ग रेरे सा नि़ | सा सा सा |
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा |
अन्तरा—
मम | ग मम ग म
दिर | दा दिर दा रा
प ध प पप | ध धध प ध | नि ध प सांसां | नि रेंरें सां नि
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
ध प ग मम | ग रेरे सा नि | सा सा सा |
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा |

राग—कालिंगड़ा

तोड़े : मसीतखानी गत

ताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

| | | सारे | नि सासा रे ग

१-रे ग ग मम | ग रेरे सा नि | सारेरे गम गरे सारे | नि सासा रे ग

२-रे ग ग मम | ग रेरे सा नि | पधध पम गरे सारे | नि सासा रे ग

३-रे ग ग मम | ग रेरे सा नि | गरेरे सारे गरे सारे | नि सासा रे ग

४-रे ग ग मम | ग रेरे सा नि | पमम गम गरे सारे | नि सासा रे ग

५-रे ग ग मम | ग रेरे सा नि | निधध पम गरे सारे | नि सासा रे ग

१५ वाँ तोड़ा —

×				२				०				३			
गा	रेरे	ग	मा	रेरे	ग	सा	नि	म	पप	ध	म	पप	ध	म	
गा	रेरे	ग	सा	रेरे	गं	सां	नि़	म	पप	ध	म	पप	ध	म	
सा	रेरे	ग	मा	रेरे	ग	सा	नि	गा	–	–	मम	ग	रेरे	सा	नि
प़	–	–	मम	ग	रेरे	सा	नि	प	–	–	मम	ग	रेरे	सा	नि
प															

राग कालिंगड़ा

यह राग भैरव थाट से निकलता है। यह सम्पूर्ण-सम्पूर्ण राग है। वादी
प और संवादी षड्ज है।

इस राग का गाने का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। राग की मधुरता
वार, पंचम और धैवत पर अवलम्बित है।

आरोह:—सा रे ग म, प, ध, नि, सां।

अवरोह:—सां नि ध प, म ग रे सा।

पकड़:—ध प, ग म ग, नि, सा रे ग, म।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, ध नि सा, सा रे ग, रे ग, ग म ग,
रे ग म रे ग, नि, सा रे ग, रे ग, म ग, रे सा, म प ध नि सा, ध नि सा,
रे गा, ग म ध, प, ग म प, ग म रे ग, ध ध प म ग, सा नि ध प म प
ध प म ग, म, ध म, ग, म, प, ग म, रे ग, म ग रे सा, नि सा रे ग।

अन्तरा का स्वरूप—ग म प, ध, प, नि ध प, म प सां, नि ध प, रें सां,
नि ध, प, गं मं गं रें सां, रें सां, नि ध, प, प प ध, प ध नि सां, सां रें सां,
रें गं रें सां, ध नि सां रें सां नि ध प, रें सां, नि ध, प, ध प, ग, म ग,
प म ग रे सा।

६—रे ग ग गग | सारेरे गग गम गरे | सारेरे गम गरे सारे
नि सागा रे ग
७—रे ग ग मम | गगम पध पम गरे | पधध पम गरे सारे
नि सासा रे ग
८—रे ग ग मम | गमम पध निध पप | धपप धम गरे सारे
नि सासा रे ग
९—रे ग ग मम | धपप गम गग रेग | ममम गम गरे सारे
नि सासा रे ग
१०—रे ग ग मम | धपप गम पध निसा | निधध पम गरे सारे

३
नि़ सासा रे॒ ग |

× २ ०
११–सारे॒रे॒ गम गम गरे॒ | गमम पध॒ पध॒ पम | पध॒ध॒ पम गरे॒ सारे॒

३
नि़ सासा रे॒ ग |

× २ ०
१२–नि़सासा रे॒ग मग रे॒सा | सारे॒रे॒ गम पम गरे॒ | गमम पम गरे॒ सारे॒

३
नि़ सासा रे॒ ग |

× २ ०
१३–सारे॒रे॒ गम पध॒ निध॒ | पध॒ध॒ पम गरे॒ गम | पमम गम गरे॒ सारे॒

३
नि़ सासा रे॒ ग |

× २ ०
१४–गमम पध॒ निसां रे॒ं | रे॒ंसांसा निसां निध॒ पध॒ | निध॒ध॒ पम गरे॒ सारे॒

३
नि़ सासा रे॒ ग |

१५–मपप धुनि धुनि धुप | गमम पधु पधु धन | रेगग नप मप मग
सारेरे गम गम गरे | मपप धुनि धुप गमप | पधु पम रेगग मग
मग सारेरे गम गरे | मपप धुनि धु– गमम | पधु प– रेगग मप
म– सारेरे गम ग– | मपप धुनि गमम पधु | रेगग मप सारेरे गम
मपप धुनि सारें सानि | धुपप धुप मग रेसा | धुपप मग रे– धुपप
मग रे– धुपप मग | रे ग ग मम | ग रेरे सा नि
सा सा सा

राग—कालिंगड़ा

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

											म	ग	रे	—	नि
											दा	रा	दा	—	रा
सा	—	सा	—	ग	मम	पप	धध	म—	मग	—ग	म	ग	रे	—	नि
दा	—	रा	—	दा	दिर	दिर	दिर	दा—	रदा	—र	दा	रा	दा	—	रा
सा	—	सा	—	ग	मम	पप	धध	म—	मग	—ग	निनि	ध	पप	म	प
दा	—	रा	—	दा	दिर	दिर	दिर	दा—	रदा	—र	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	मम	पप	ध	—	नि	सा	सा	सा	रेंरें	सासा	रेंरें	सा—	सानि	—नि	ध
दा	दिर	दिर	दा	—	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा—	रदा	—र	दा
नि	ध	प	ध	प	म	मध	पप	म—	मग	—ग	म	ग	रे	—	नि
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा—	रदा	—र	दा	रा	दा	—	रा

अन्तरा—
ग मम ग प | — प म प | म पप मम धुधु | नि— निधु —धु प
दा दिर दा रा | — दा रा दा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा
गं मम पप' धु | — धु निनि सांसां | नि— निधु —धु सांसां | नि— निधु —धु प
दा दिर दिर दा | — दा दिर दिर | दा— रदा —र दिर | दा— रदा —र दा
सां — धु — | ग — धुधु पप | म— मग —ग म | ग रे — नि
दा — रा — | दा — दिर दिर | दा— रदा —र दा | रा दा — रा
सा |
दा |

मसीतखानी गत के साथ दिए हुए तोड़ों के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा :—

		०				३			
धुधु	पप	म–	मग	–ग	ग	ग	रे	–	नि

तोड़े शुरू करने के स्थान:—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोडे खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से व १५ वाँ तोड़ा सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी:—

×			२				०				३			
मम	ग	रे	सा	–	प	मम	ग	रे	सा	–	प	मम	ग	रे

॥

राग-विंद्रावनी सारंग

यह राग काफी थाट के अन्तर्गत लिया गया है। इस राग के आरोह-अवरोह दोनों में गाधार और धैवत वर्ज्य हैं। आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद लगता है। राग का वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। इसकी जाति औडव-औडव है। यह एक सरल और मधुर राग है, इसे दोपहर को गाते-बजाते हैं।

आरोह —नि सा, रे, म प, नि सा।

अवरोह —सा, <u>नि</u> प, म रे, सा।

पकड —नि, सा रे, म रे, प म रे, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, ग रे, सा, रे, म रे, रे प, म प म रे, प म रे, सा, रे म रे सा, रे म प म रे सा, नि सा, प नि सा, ग प नि सा, म र, प रे, रे म प, <u>नि</u> प म रे, म प <u>नि</u> <u>नि</u> प म रे, म रे, सा रे म प नि सा, <u>नि</u> <u>नि</u> प, सा, रें सां, <u>नि</u> <u>नि</u> प, म प नि सा रें सा <u>नि</u> प म रे, सा म रे, सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प नि सा, रे रें सा, रें म रें सा, <u>नि</u> प, रें म प ग रे, सा, नि सा रें सा, <u>नि</u> प, म प नि सा, रें म रें सा, रे म प नि सा रें प म रें, सा, रें सा, <u>नि</u> प, म रे, रे म प म रे, <u>नि</u> <u>नि</u> प ग रे, सा।

राग—वृन्दावनी सारंग

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	X	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			रेम	रे सासा नि़ सां
			दिर	दा दिर दा रा
	रेम रे रे रे	रे रेरे म प	म रे सा सासा	नि॒ नि॒नि॒ नि॒ प़
	दिर दा रा दा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	म़ पप़ नि़ सा	सा रेरे म प	म रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा	
अन्तरा—			रेरे	रे मम प नि
			दिर	दा दिर दा रा
	प नि सा निनि	नि निनि सा रें	सा नि॒ प मम	रें सासा नि॒ प
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	रे मम प नि	सां नि॒नि॒ प म	म रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

राग—वृन्दावनी सारंग

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
											रेम	रे	सासा	नि़	सा
१—रेम	रे	रे	रे	रे	रेरे	म	प	नि़सासा	रेम	रेसा	रेम	रे	सासा	नि़	सा
२—रेम	रे	रे	रे	रे	रेरे	म	प	रेमम	पम	रेसा	रेम	रे	सासा	नि़	सा
३—रेम	रे	रे	रे	रे	रेरे	म	प	पमम	रेम	रेसा	रेम	रे	सासा	नि़	सा
४—रेम	रे	रे	रे	रे	रेरे	म	प	पनिनि	पम	रेसा	रेम	रे	सासा	नि़	सा
५—रेम	रे	रे	रे	रे	रेरे	म	प	सांनिनि	पम	रेसा	रेम	रे	सासा	नि़	सा

× २ ० ३
-रेम रे रे रे | निसासा रेम रेसा निसा | रेमम पम रेसा रेम
रे सासा नि सा |
-रेम रे रे रे | रेमम पनि पनि पम | पमम रेम रेसा रेम
रे सासा नि सा |
-रेम रे रे रे | निसासा रेम रेम रेसा | निसासा रेम रेसा रेम
रे सासा नि सा |
-रेम रे रे रे | रेमम पम रेम रेसा | पनिनि पम रेसा रेम
रे सासा नि सा |
०-रेम रे रे रे | मपप निसा रेंम रेंसां | सानिनि पम रेसा रेम

३
रे सासा नि़ सा
×
११–नि़सासा रेम रेम रेसा
२
सारेरे मप मप मरे
०
पमम रेम रेसा रेम
३
रे सासा नि़ सा
×
१२–रेमम रेम रेसा नि़सा
२
रेमम पनि पम रेम
०
पमम पम रेसा रेम
३
रे सासा नि़ सा
×
१३–मपप नि़सा रेंसा निसा
२
सारेंरें सानि पनि पम
०
रेमम रेम रेसा रेम
३
रे सासा नि़ सा
×
१४–नि़सासा रेम पम रेसा
२
रेमम पनि सानि पम
०
निनिनि पम रेसा रेम
३
रे सासा नि़ सा

× १५-सारेंरें सानि सारेंरें सानि | २ सारेरे सानि पनि पम | ० पनिनि पम पनिनि पम
३ पनिनि पम रेम पम | × सारेंरें सानि सारेंरें सानि | २ सा- सा- पनिनि पम
० पनिनि पम प- प- | ३ ममम रेम रेसा निसा | × सारेंरें सानि सा- पनिनि
२ पम प- पम रेसा | ० रेसासा निसा रे- रेसासा | ३ निसारे रे- रेसासा निसा
× रेम रे रे रे | २ रे रेरे म प | ० ग रे सा

राग-वृन्दावनी सारंग

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

		नि सा	रे मम रे म	प निनि म प
		दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा

सा – – नि	प नि म प	रे मम रेरे पप	म– मरे –रे सा
दा – – रा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
सा निनि निनि प	– नि सा सा	रे मम रेरे पप	म– मरे –रे सा
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
प म रे म	रे सा नि सा		
दा रा दा रा	दा रा दा रा		

अन्तरा—

म पप पप नि	– नि सां सां	नि सांसां निनि रेंरें	सां– सांनि –नि प
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
म मम मम रें	– रें सां सां	रें सांसां निनि सांसां	सां– सांनि –नि प
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
प म रे म	रे सा		
दा रा दा रा	दा रा		

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई भी टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५-वाँ तोड़ा :—

यह तोड़ा भी सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×				२				०				३			
रे	मम	प	नि	सा	–	रे	मम	प	नि	सां	–	रे	मम	प	नि
सा															

राग सोहनी

यह राग मारवा थाट का है। इसमें पंचम हमेशा वर्ज्य रहता है। आरोह में ऋषभ भी वर्ज्य है। इसलिए राग की जाति ओडव-षाडव है। वादी धैवत तथा संवादी गांधार माना जाता है। यह उत्तराग वादी राग है, इसलिए राग का स्वरूप उत्तराग में ही ज्यादा व्यक्त होता है। तार षड्ज चमकता रहता है। राग का गाने का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है।

आरोह:—सा ग, मं ध नि, सां।

अवरोह:—सां रें सां, नि ध, ग, मं ध, मं ग, रे सा।

पकड़:—सां, नि ध, नि ध, ग, मं ध नि सां।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि़ सा ग, मं ग, ध मं ग, नि ध मं ग, मं ध नि ध, मं ग, मं ग, रे सा, सा ग, मं ध नि सां, रें सां, नि ध, मं नि ध, मं ध, मं नि ध, मं ध नि सां, रें सां, नि ध, मं ग, मं ध ग, मं ग रे सा, सा ग, रे ग, रे सा, नि ध, ग, मं मं ग, मं ध नि ध मं ग, मं ध नि सां, रें सां, नि ध मं ग, मं ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं ध नि सां रें सां, नि सां, ध नि सां, मं ध नि सां, रें रें सां, गं रें सां, मं ग रें सां, रें सां नि ध, मं ध नि ध मं ग, नि मं ग, मं ग रे सा।

१७६
सितार-दर्पण
राग—सोहनी
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सासां | नि धध मंधध निसां
दिर | दा दिर दादिर दारा
रें सां सा सासां | नि धध मं मंनि | ध मं ग मंमं | ग रेरे नि सा
दा दा रा दिर | दा दिर दा दिर | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
सा गग मं ध | नि सासां रें सां | नि ध ग
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा
अन्तरा—
गग | ग मंमं ध नि
दिर | दा दिर दा रा
सां रें गं सांसां | नि धध मं ग | नि ध मं गंगं | रें सांसां नि ध
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
ग मंमं ध नि | सा निनि ध मं | ग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा

सितार-दर्पण
-१७७
राग—सोहनी
तोड़े : मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
सासा | नि धध मंधध निसा
१—रें सा सा सासा | नि धध मं मंनि | मंधध निसा रेंसा सासा
नि धध मंधध निसा |
२—रें सा सा सासा | नि धध मं मंनि | मंधध निध निसा सासा
नि धध मंधध निसां |
३—रें सा सा सासां | नि धध मं मंनि | निधध निसा रेंसां सांसां
नि धध मंधध-निसा |

× २ ० ३

४—रें सां सां सांसां | नि धध मं मंनि | रेंसांसां निसां रेंसां सांसां | नि धध मंधध निसा |

५—रें सा सा सांसा | नि धध मं मंनि | निधध मंग रेंसा सांसां | नि धध मंधध निसां |

६—रें सा सा सासा | गमंमं धनि धमं गमं | धनिनि सारें निसा सासा | नि धध मंधध निसा |

७—रें सा सा सासा | गमंमं धनि सानि धनि | धमंमं धनि सारें सासा | नि धध मंधध निसा |

८—रें सा सा सांसा | गमंमं निध निसा निध | मंधग निसां रेंसां सांसां

	३ नि धध मंधध निसां		
९—	× रें सा सा सासा	२ धनिनि सारें सानि धमं	० गमंमं गग रेंसा सासा
	३ नि धध मंधध निसा		
१०—	× रें सां सां सांसा	२ मंधध निसा मंग रेंसा	० निधध मंध निसा सासा
	३ नि धध मंधध निसा		
११—	× निसासा गमं गग रेंसा	२ गमंमं धनि धध मंमं	० मंनिनि धमं धनि सासा
	३ नि धध मंधध निसा		
१२—	× गमंमं धनि सानि धनि	२ सानिनि धमं गग रेंसा	० निसासा गमं धनि सासा
	३ नि धध मंधध निसा		
१३—	× मंधध निसा मंग रेंसा	२ निधध मंग मंग रेंसा	० मंगग मंग रेंसा सासा

३
नि धप मंधप निसां |

×
१४—सांरेंरें निसांसां धनिनि मंधध | २ गमम रेगग सारेंरें निसां | ० मंधप निसां रें— मंधध

३
निसां रें— मंधप निसां | × रें सां सां सांसां | २ नि धध मं मंनि

०
ध मं ग सांसां | ३ नि धध मंधध निसा |

×
१५—सारेंरें सासां रेंरेंसां निसां | २ निगासां निनि सांसांनि धनि | ० धनिनि धध निनिध मंध

३
मंधप मंमं धधमं गमं | × ग —मं गरे सा— | २ सा —नि —सा गमं

०
ग —ग —मं धनि | ३ ध —मं —ध निसा | × रें सा सा सासां

२
नि धध मं मंनि | ० ध मं ग

राग–सोहनी
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
| धनि सां | नि ध मं ग | मं धध नि सां
| दिर दा | दा रा दा रा | दा दिर दा रा
रें सां नि सां | नि ध धनि सां | नि ध मं ग | मं ग रे सा
दा रा दा रा | दा रा दिर दा | दा रा दा रा | दा रा दा रा
नि़ सासा सासा ग | – ग मं ध | नि सांसां निनि रेंरें | सां– सांनि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
रें सां नि सां | नि ध |
दा रा दा रा | दा रा |

३
नि धध मंधप निसां |

×
१४–सारेंरें निसांसां धनिनि मंधध | २ गमम रेंगग सारेंरें निसां | ० मंधप निसां रें– मंरेंध

३
निसा रें– मंधध निसां | × रें सां सां सांसां, | २ नि धध मं मंनि

०
ध मं ग सासा | ३ नि धध मंधध निसा |

×
१५–सारेंरें सासां रेंरेंसां निसां | २ निसासा निनि सांसानि धनि | ० धनिनि धध निनिध मंध

३
मंधध मंमं धधमं गमं | × ग –मं गरे सा– | २ सा –नि –सा गमं

०
ग –ग –मं धनि | ३ ध –मं –ध निसा | × रें सा सा सासा

२
नि धध मं मंनि | ० ध मं ग

राग-सोहनी

(रज़ाखानी गत)

तिताल मात्रा १६

× २ ० ३

२ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| पनि सां | नि ध मं ग | मं धध नि सां

| दिर दा | दा रा दा रा | दा दिर दा रा

रें सां नि सां | नि ध पनि सां | नि ध मं ग | मं ग रे सा

दा रा दा रा | दा रा दिर दा | दा रा दा रा | दा रा दा रा

नि़ सासा सासा ग | – ग मं ध | नि सांसां निनि रेंरें | सां– सांनि –नि ध

दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

रें सां नि सां | नि ध |

दा रा दा रा | दा रा |

अन्तरा—
ग मंमं मंमं प | – नि सां सां | नि सांसां निनि रेंरें | गा– सानि –नि प
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
गं – गं रें | – सां रेंरें रेंरें | सां– सांनि –नि सांसां | नि– निध –ध मं
दा – दा रा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
रें गां नि सां | नि प
दा रा दा रा | दा रा

यह रजाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए हैं, उनके पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक तोड़े को पूरा बजाने के बाद सातवीं मात्रा से ही गत में मिल जाना होगा।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोडे सम से, ६ से १० तोडे खाली से, ११ से १३ -तोडे सम से।

१४ वाँ तोडा :—

यह तोडा भी सम से शुरू होगा।

तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×				२				०				३			
मं	धप	नि	सां	रें	–	मं	धप	नि	सां	रें	–	मं	धप	नि	सां
रें															

१५ वाँ तोडा :—

×				२				०				३			
सां	रेंरें	सां	सां	रेंरें	सां	नि	सां	नि	सांसां	नि	नि	सांसां	नि	ध	नि

ध निनि ध ध | निनि प मं ध | मं पप मं मं | पप मं ग मं
ग — — मं | ग रे सा — | सा — — नि | — सा ग मं
ग — — ग | — मं प नि | ध — — मं | — ध नि सा
रे |

राग बागेश्री

राग बागेश्री मे गांधार, निषाद कोमल और बाकी सब स्वर शुद्ध हैं, इसलिए यह राग काफी थाट के अन्तर्गत है। राग का वादी स्वर मध्यम और सवादी स्वर षड्ज है। मध्यम, धैवत और निषाद की सगति अच्छी लगती है। कुछ लोग आरोहावरोह दोनो मे पचम को वर्ज्य करते हैं। कुछ लोग सिर्फ अवरोह मे और कितने लोग आरोहावरोह दोनों मे पचम लगाते हैं। गाने का समय मध्य रात्रि सर्वमान्य है।

आरोह—सा, नि ध, नि सा, म ग, म ध नि सा।

अवरोह—सा, नि ध, म ग, म ग रे सा।

पकड—सा नि ध नि सा, म ध नि ध, म, ग रे, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि नि ध, नि सा, ध नि सा, सा म, ग ग म, म ध म, ग म ग रे सा, नि ध, म ध नि ध, नि सा, म, ग म, ध ध म, नि नि ध ध म, ग म ध नि सा, नि ध म, ग ग म, नि ध म ग, म ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—सा, म ग, म ध नि ध म ग, म ध नि सा, रें सां नि ध, ध नि सा म ग रें सां, नि नि ध, म ध नि सा म, ग ग म, गं, म गं रें सा, नि नि रें सा नि ध, म सा नि ध, नि ध म ग, म ग रे सा।

१८६
सितार-दर्पण
राग—बागेश्री
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
रेंरें । सां निनि धध ध
दिर । दा दिर दिर दा
नि ध म मम । ग मम ग म । ग रे सा सासा । नि सासा निध नि
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दिर दा
सा मम ग म । म धध नि सां । सांरें निसां धनि रेंरें ।
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दिर दिर दिर ।
अन्तरा—
मम । ग मम ध नि
दिर । दा दिर दा रा
सां सां सां सांसां । नि निनि सां रें । सां नि ध गंगं । रें सांसां नि ध
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
सां निनि ध म । नि धध म गम । ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा दिर । दा दा रा

सितार दर्पण
१८७
राग—बागेश्री
तोड़े मसीतखानी गत
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
रेंरें | सां निनि धप ध
१—नि ध म मम | ग मम ग म | मगग मग रेसा रेंरें | सा निनि धप ध
—नि ध म मम | ग मम ग म | मधध मग रेसा रेंरें | सा निनि धप ध
—नि ध म मम | ग मम ग म | मधध निसा रेसा रेंरें | सा निनि धप ध
—नि ध म मम | ग मम ग म | निधध मग रेसा रेंरें | सा निनि धप ध
५—नि ध म मम | ग मम ग म | मधध निसा रेंसा रेंरें | सा निनि धप ध
६—नि ध म मम | मगग मग रेसा निसा | मधध मग रेसा रेंरें
सां निनि धप ध |

× २ ० ३
७—नि ध म मम | सानिनि धनि मध मम | ममध निसा रेसा रेंरें
सां निनि धप ध |
× २ ० ३
८—नि ध म मम | धनिनि साग मग रेसा | मगग मग रेसा रेंरें
सा निनि धप ध |
× २ ० ३
९—नि ध म मम | सानिनि धनि साम गम | मधध मग रेसा रेंरें
सा निनि धप ध |
× २ ० ३
१०—नि ध म मग | सागग मध मग रेसा | ममम मग रेसा रेंरें
सां निनि धप ध |

सितार-दर्पण
१८९
× २ ०
११–धनिनि सागु मगु रेसा | गुमम धनि सानि धम | निधध मगु रेसा रेंरें
३
सा निनि धप ध |
× २ ०
१२–गुमम धनि धनि धम | सागुगु मध मध मगु | मगुगु गुगु रेसा रेंरें
३
सा निनि धप ध |
× २ ०
१३–धनिनि सानि सागु मध | सागुगु मध निध निसा | मधध मगु रेसा रेंरें
३
सा निनि धप ध |
× २ ०
१४–धनिनि धनि –सा गुम | सागुगु मध –ध निध | गुमम गुम –ध निसा
३ × २
मध निम धनि मध | नि ध म मम | गु मम गु म
० ३
गु रे सा रेंरें | सां निनि धप ध |

×　　　　　　　　　　　२　　　　　　　　　　　०
१५—सानिनि धनि साम गम | गमम धनि धम गम | गमम धनि सानि धनि

३　　　　　　　　　　　×　　　　　　　　　　　२
धगग गम गग रेसा | सानिनि धनि सा– गमम | धनि ध– मधध निध

०　　　　　　　　　　　३　　　　　　　　　　　×
सासा –रेंरें सानिनि धम | गरे सारेंरें सानिनि धपध | नि ध म मम

२　　　　　　　　　　　०
ग मग ग म | ग रे सा |

राग-बागेश्री

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

						ध	नि	सा	मम	ग	म	म	धध	प	ध
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नि	–	–	नि	ध	ध	म	म	ग	मम	गग	मम	ग–	गरे	–रे	सा
दा	–	–	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
सा	निनि	निनि	ध	–	नि	सा	सा	सा	मम	गग	मम	ग–	गरे	–रे	सा
दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
म	ग	म	ग	रे	सा										
दा	रा	दा	रा	दा	रा										

अन्तरा—

ग मम मम ध	– नि सा सा	नि सासा निनि रेंरें	सा– सानि –नि ध
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा

गं – गं रें	– सां रेंरें रेंरें	सा– सानि –नि सासा	नि– निध –ध म
दा – रा दा	– रा दिर दिर	दा– रदा –र दिर	दा– रदा –र दा

म ग म ग	रे सा	
दा रा दा रा	दा रा	

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए है उनके पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की जरूरत नही है। प्रत्येक तोड़े को पूरा बजाने के बाद सातवी मात्रा से ही गत मे मिल जाना होगा।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १३ तोड़े सम से।

१४ वें तोड़े में तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×	२	०	३
		म ध नि म	ध नि म ध
नि			

यह तोड़ा सम से ही शुरू होगा।

१५ वाँ तोड़ा :—

×	२	०	३
सा निनि ध नि	सा म ग म	ग मम ध नि	ध म ग म
ग मम ध नि	सां नि ध नि	ध मम ग म	ग ग रे सा

सा निनि ध नि | सा – ग मम | ध नि ध – | म धध नि सा

सां सां – रेंरें | सा निनि ध म | ग रे सा मम | ग मम ध ध

नि – – मम | ग मम ध ध | नि – – मम | ग मम ध ध

नि |

राग तिलंग

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न हुआ है। इसके आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद लेकर शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। ऋषभ और धैवत ये दो स्वर वर्जित है, इसलिए राग की जाति औडव-औडव है। ऋषभ वर्ज्य होने पर भी तानों में कभी-कभी कुशलतापूर्वक उसका उपयोग होता है। राग का वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। इस राग का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

आरोह—सा ग म प नि सां।

अवरोह—सां नि प म ग सा।

पकड—सा नि प, ग म ग, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, ग म ग, सा, सा ग म, प, ग म ग, सा।

ग ग प, नि प, ग म ग, ग म प नि, प नि, प, म, म ग, म ग, सा।

अन्तरा का स्वरूप—ग म प नि, प नि सां, नि प, ग म ग म ग, म ग, सा।

ग म प नि, सां, ग सां, म ग, सां, प म ग, म ग, सा, प नि सां रें, सां नि प, ग म ग, ग म ग, सा।

×
७—सां नि प मम | २ गमम पनि निप मग | ० गमम गम गसा निसा
३
ग मम प नि |
×
८—सा नि प मम | २ गमम पनि सानि सांसां | ० निपप गम गसा निसा
३
ग मम प नि |
×
९—गा नि प मग | २ गमम पनि गानि पनि | ० पनिनि पम गसा निसा
३
ग मम प नि |
×
१०—सा नि प मम | २ गमम पनि सागं सांनि | ० सानिनि पम गसा निसा
३
ग मम प नि |

× २ ०
११–निसासा गम गम गसा | सागग मप मप मग | पमम गम गसा निसा

३
ग मम प नि |

× २ ०
१२–निसासा गम पनि पम | गमम पम गम गसा | पनिनि पम गसा निसा

३
ग मम प नि |

× २ ०
१३–सानिनि पनि पम गम | पनिनि पम गम गसा | निसासा गम गसा निसा

३
ग मम प नि |

× २ ०
१४–गमम पनि सांग सानि | सानिनि पनि पम गम | पनिनि पम गम पनि

३ × २
सा– पनि सा– पनि | सा नि प मम | ग मम नि प

० ३
गम ग सा निसा | ग मम प नि |

× | २ | ०
१५–निसासा गम गम गम | गग गम गग गसा | सागग मप मम मप

३ | × | २
मम मप मग सासा | गमम पनि निनि पम | गमम पम गम गसा

० | ३ | ×
निसासा गम ग– गमम | पनि प– मपप निसा | सानिनि पम गमम पनि

२ | ० | ३
सा – सानिनि पम | गमग पनि सा – | सानिनि पम गमम पनि

× | २ | ०
सा नि प मम | ग मम नि प | गम ग सा

राग—तिलंग
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
ग म | प सासा निनि सासा | नि– निप –प गम
दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दिर
ग – – म | ग सा नि सा | नि सासा सासा ग | – म प नि
दा – – रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दा | – रा दा रा
सा निनि प नि | प म ग म | प सासा निनि सासा | नि– निप –प गम
दा दिर दा रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दिर
अन्तरा—
ग मम पप नि | – नि सा सा | सा गग गग मम | ग– मग –गं सा
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
मम गंम मम ग | – ग सा सा | नि सासा निनि गग | सा– सानि –नि प
दिर दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
सा निनि प नि | प म
दा दिर दा रा | दा रा

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए हैं, उनके पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की जरूरत नहीं है। प्रत्येक तोड़े को पूरा बजाने के बाद सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १३ तोड़े सम से।

१४ वाँ तोड़ा :—

×	२	०	३
ग मम प नि	सा ग सा नि	सां निनि प नि	ग म ग म
प निनि प म	ग म प म	ग – प म	ग – प म
ग			

१५ वाँ तोड़ा :—

यह तोड़ा भी सम से शुरू होगा। तिहाई इस प्रकार बजेगी :—

×	२	०	३
सा निनि प म	ग मम प म	ग – – –	सा निनि प म
ग मम प म	ग – – –	सा निनि प म	ग मम प म
ग			

विभाग तीसरा

१० राग

१ तोडी
२ पीलू
३ मारवा
४ मालकौंस
५ हिन्डोल
६ शुद्धकल्याण
७ कामोद
८ छायानट
९ गौडसारंग
१० श्री

राग तोड़ी

यह राग तोड़ी थाट का आश्रय राग है। इसमें ऋषभ, गांधार, धैवत कोमल; मध्यम तीव्र और पञ्चम, निषाद शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादी स्वर धैवत और सवादी स्वर गांधार है। आरोह में पञ्चम बहुत अल्प प्रमाण में लिया जाता है। गाने का समय दिन का दूसरा प्रहर है। राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है।

आरोह—सा, रे ग, मं प, ध, नि सा।

अवरोहः—सा नि ध प, मं ग, रे, सा।

पकड़—ध नि सा, रे ग, रे सा, मं, ग, रे ग, रे सा।

स्थाई का स्वरूप—गा, रे सा, ध प, मं प, ध, नि सा, सा रे, रे ग, ध सा रे ग, ध ग रे सा, रे ग मं ध प, प ध मं ग रे, रे ग, मं ग रे, रे ग रे ध रे सा। रे ग मं रे ग, रे सा, ध मं ग, रे ग, मं ध प, मं ग, रे ग रे सा, ध नि सा रे ग, रे ग रे सा, ध नि, मं ग, रे ग, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं ग, मं ध नि सा, रें सा, सा रें गं, रें ग, रें सा, रें नि ध प, मं ध नि सा, नि ध प, नि ध मं ग, रे ग मं ग, रें गं मं ग, रें ग रें सा, नि ध प, ध मं ग, रे ग रे सा।

राग—तोड़ी

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			सासा	ध निनि सा रे
			दिर	दा दिर दा रा
	ग ग ग गग	रे रेरे सा रे	ग रे सा सासा	नि निनि ध प
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	मं पप ध नि	ध निनि सा रे	ग रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	
अन्तरा—			मंमं	ग मंमं ध नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सां सां सां सांसां	नि निनि सां रें	सां नि ध गंगं	रें सांसां नि ध
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	ग मंमं प ग	नि धध प मं	ग रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

२०६
सितार-दर्पण
राग-तोड़ी
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १
स्थाई—
गग गग । रे– रेसा –सा नि । ध निनि सा रे
दिर दिर । दा– रदा –र दा । दा दिर दा रा
ग – – ग । ग ग रे ग । रे गग रेरे गग । सा– सानि –नि ध
दा – – रा । दा रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
मं पप पप ध । – नि सा सा । ध निनि सासा गग । रे– रेनि –नि सा
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
मं ग रे ग । रे सा गग गग ।
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर ।

अन्तरा—

ग मंमं मंमं ध | – नि सां सां | नि सांसां निनि रेंरें | सां– सांनि –नि ध

दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

गं – गं रें | – सां रेंरें रेंरें | सां– सांनि –नि सांप | नि– निध –ध प

दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा

नि ध प ध | प मं गग गग | रे– रेसा –सा नि | ध निनि सा रे

दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दा रा

ग |

द |

स्थाई—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
				गग	रे	सासा	धु	नि़	सा
				दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	ग	ग	ग	गग	रे	सासा	नि	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	सा	सासा	नि़	निनि	ध	ध	मं
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
मं	पप	ध	ध	नि़	सा	रेरे	ग	ग	मं
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	सा						
दा	रा	दा	रा						

अन्तरा—
मंमं | ग गग | मं मं ध
दिर | दा दिर | दा रा दा
नि नि | सां सां सांसां | रें सांसां | नि नि सा
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
नि ध | प प गंगं | रें सांसां | नि ध मं
दा रा | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
ग रे | सा सा |
दा रा | दा रा |

राग पीलू

यह एक क्षुद्र राग है। यह राग काफी थाट में रक्खा गया है। इसमें सप्तक के सब स्वरों का युक्ति से उपयोग होता है। तीव्र स्वरों का प्रयोग आरोह में तथा कोमल स्वरों का प्रयोग अवरोह में किया जाता है। राग का वादी स्वर कोमल गांधार तथा संवादी स्वर तीव्र निषाद है। इस राग का गाने का समय दिन का तीसरा प्रहर है।

आरोहः—नि़ सा, ग रे ग, म प, ध प, नि ध प, सां।

अवरोहः—सां नि ध प म ग, नि़ सा।

पकड़—नि़ सा ग, नि़ सा, प़ ध़ नि़, सा।

स्थाई का स्वरूप—नि सा ग, नि सा, नि़ ध़, प़, नि़ सा ग, प ग, ध प, म प ग, रे ग, म ग, ध प, ध म प ग, प ग, रे सा, नि, सा रे सा, सा, नि, ध नि, प ध नि, मं प ध नि, रे सा रे नि, ग रे ग, रे सा, नि, ध, प, ध म प ग, नि़ सा, रे नि, सा, रे नि, सा नि ध प, नि़ सा, ग, रे, सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प, नि ध प, प सां, ध प, रें सां, ध प, ध म प ग, गं रें सां, नि ध प म प ग, म, ग म प नि सां, नि ध प ग म प ग, रे सा, म प ग, नि़ सा।

राग—पीलू
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
धप ग़ु रेरे नि़ सा
दिर दा दिर दा रा
ग़ु रे सा सासा । प धुधु नि सा ग़ु रे सा सासा नि़ निनि़ धु़ प़
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर दा दिर दा रा
म़ पप नि़ सा । सा गग म प ग़ु रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा दा दा रा
अन्तरा—
सारे । नि सासा ग म
दिर । दा दिर दा रा
प प प पप । ग मप पधु मप । ग़ु रे सा ग़ुग़ु । रे सासा नि़ सा
दा दा रा दिर । दा दिर दिर दिर । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
प़ धुधु नि़ सा । सा गग म प । ग़ु रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा

राग—पीलू

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १

×	२	०	३
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १

स्थाई—

			नि़ सा रे ग॒
			दा रा दा रा
रे – रे ग॒	सा रेरे सासा मम	ग॒– ग॒रे –रे सा	नि़ सा रे ग॒
दा – दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा	दा रा दा रा
प़ धुधु प़ सा	नि सा प़ धुधु	प़ सा नि़ सा	नि़ सा रे ग॒
दा दिर दा रा	दा रा दा दिर	दा रा दा रा	दा रा दा रा

अन्तरा—

नि सासा ग म	प म प प	ग मम गग पप	ग॒– ग॒रे –रे सा
दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
सा ग॒ग॒ रे ग॒	– रे़ सा रे़	नि सासा नि़नि ग॒ग॒	रे– रेसा –सा नि़
दा दिर दा रा	– दा रा दा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
प़ धुधु प सा	नि़ सा प धुधु	प़ सा नि़ सा	नि़ सा रे ग॒
दा दिर दा रा	दा रा दा दिर	दा रा दा रा	दा रा दा रा

राग मारवा

'राग मारवा' मारवा थाट से निकलता है, इसमें ऋषभ कोमल तथा मध्यम तीव्र, बाकी सब शुद्ध स्वर लगते हैं। इस राग के आरोहावरोह दोनों में पञ्चम स्वर वर्ज्य है। राग की जाति षाडव–षाडव है। राग का वैचित्र्य रे, ग तथा धैवत पर निर्धारित है। इस राग में मींड का प्रयोग नहीं होता। राग का गाने का समय दिन का चौथा प्रहर है। राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर धैवत है।

आरोह— सा रे॒, ग, म॑ ध, नि ध, सां।

अवरोह—सां, नि ध, म॑, ग, रे॒, सा।

पकड़— ध, म॑ ग रे॒, ग म॑ ग रे॒, सा।

स्थाई का स्वरूप—नि़ रे॒ ग, रे॒ ग, म॑ ग रे॒ सा, म़॑ ध़ सा, रे॒, ग रे॒, म॑ ग रे॒, रे॒ ग, म॑ ग, ध म॑ ग रे॒, म॑ ग रे॒ सा, म॑ ग, म॑ ध म॑, ध म॑ ग रे॒, नि ध म॑ ग रे॒, ग म॑ ध, म॑ ग रे॒, ग रे॒, सा। सा ध़, नि़ ध़, म॑ ध़ नि़ ध, म॑ ग रे॒, ग म॑ ध, नि ध, म॑ ग, रे॒ ग, रे॒ सा।

अन्तरा का स्वरूप—म॑ ग, म॑ ध, म॑ सां, रे॒ं सां, नि रे॒ं गं म॑ गं रे॒ं सां, रे॒ं सां, रे॒ं नि ध, म॑ ध, नि ध म॑ ग, रे॒, ग म॑ ध म॑ ग, रे॒ ग रे॒ सा।

राग—मारवा

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

धध | में धध ग में

दिर | दा दिर दा रा

ध में ग गग | रे गग रे में ग रे सा सासा | नि रेरे नि ध

दा दा रा दिर | दा दिर दा रा दा दा रा दिर | दा दिर दा रा

में धध नि रे | नि रेरे ग में ग रे सा |

दा दिर दा रा | दा दिर दा रा दा दा रा |

अन्तरा—

गग | में मेंमें ध मेंत्र

दिर | दा दिर दा दिर

सा सा सा सासा नि निनि सां रें सा नि ध रेंरें | सा निनि में ध

दा दा रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर | दा दिर दा रा

नि रेंरें नि में | ध मेंमें गरे ग ग रे सा |

दा दिर दा रा | दा दिर दिर दा दा दा रा |

राग—मारवा
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
रेरे । नि रेरे ग मं
दिर । दा दिर दा रा
ध मं – ध । मं ग धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । सा निनि ध ध
दा रा – दा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा रा
मं धध धध सा । – सा धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । नि रेरे ग मं
दा दिर दिर दा । – रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा रा
अन्तरा—
ग मंमं मंमं ध । नि ध सा सा । नि सासा निनि रेरे । सा– सानि –नि ध
दा दिर दिर दा । रा दा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
रे – नि ध । – मं धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । नि रेरे ग मं
दा – रा दा । – रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा रा
ध –
दा –

२१४
सितार-दर्पण
राग—मारवा
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई— धध | मं धध ग मं
दिर | दा दिर दा रा
ध मं ग गग | रे गग रे मं | ग रे सा सासा | नि रेरे नि ध
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
मं धध नि रे | नि रेरे ग मं | ग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा
अन्तरा— गग | मं मंमं ध मंध
दिर | दा दिर दा दिर
सा सा सा सासा | नि निनि सा रें | सा नि ध रेंरें | सा निनि मं ध
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
नि रेंरें नि मं | ध मंमं गरे ग | ग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दिर दा | दा दा रा

सितार-दर्पण
२१५
राग—मारवा
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५
स्थाई—
रेरे । नि रेरे ग
दिर । दा दिर दा
ध मं – ध । मं ग धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । सा निनि ध
दा रा – दा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा र
मं धध धध सा । – सा धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । नि रेरे ग म
दा दिर दिर दा । – रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा र
अन्तरा—
ग मंमं मंमं ध । नि ध सां सां । नि सांसां निनि रेंरें । सां– सांनि –नि ध
दा दिर दिर दा । रा दा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
रें – नि ध । – मं धध मंमं । ग– गरे –रे रेरे । नि रेरे ग म
दा – रा दा । – रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा रा
ध –
दा –

राग—मारवा

झपताल — मात्रा १०

×		२			०		३		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

स्थाई—

				सासा	नि	रेरे	ग	ग	मं
				दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ध	मं	ग	ग	गग	रे	गग	रे	रे	म
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
ग	रे	सा	सा	सासा	नि	रेरे	नि	नि	ध
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
मं	धध	सा	सा	सासा	नि	रेरे	ग	ग	मं
दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा
धमंमं	धमं	धमं		गरे					
दादिर	दिर	दाग		दारा					

न्तरा—
| गग | ग मंमं | ध ध ध
दिर | दा दिर | दा रा दा
मं धध | सा सा सासा | नि रेंरें | नि नि ध
दा दिर | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
नि धध | मं मं गग | रें निनि | ध ध मं
दा दिर | दा रा दिर | दा दिर | दा रा दा
रे गग | मं मं ध | सा निनि | ध ध मं
दा दिर | दा रा दा | दा दिर | दा रा दा
धमंमं धमं | धमं गरे सासा |
दादिर दिर | दिर दिर दिर

राग मालकौंस

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल

मात्रा १६

× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

| सासा | नि सासा ध नि

१—सा म म म | म मम ग म | सामम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

२—सा म म म | म मम ग म | गमम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

३—सा म म म | म मम ग म | धमम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

४—सा म म म | म मम ग म | ममम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

५—सा म म म | म मम ग म | निनिनि धम गसा सासा | नि सासा ध नि

× २ ०
६—सा म म म | ममम गम गम गसा | ममम गम गसा सासा

३
नि सासा ध नि |

× २ ०
७—सा म म म | गुमम धुनि धुम गुम | धुमम गुम गुसा सासा
३
नि सासा धु नि |
× २ ०
८—सा म मं म | सानिनि धुम धुनि सासा | निसासा गुम गुसा सासा
३
नि सासा धु नि |
× २ ०
९—सा म म म | धुनिनि सागु मगु मम | गुमम धुम गुसा सासा
३
नि सासा धु नि |
× २ ०
१०—सा म म म | गुमम धुनि धुनि धुम | धुमम गुम गुसा सासा
३
नि सासा धु नि |

राग मालकौंस

यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में ऋषभ व पंचम आरोह एवं अवरोह में वर्ज्य होते हैं, तदर्थ इसकी जाति औडुव-औडुव है। वादी स्वर मध्यम एवं संवादी स्वर षड्ज है। इस राग को रात्रि के तीसरे प्रहर में गाने का व्यवहार है। मालकौंस राग की प्रकृति गम्भीर मानी जाती है।

आरोह —नि सा, ग म, ध, नि सां।

अवरोह —सां नि ध, म, ग म ग सा।

पकड़ —म ग, म ध नि ध, म, ग, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, ध नि ध म, म ध, ध नि, ग सा, ध नि सा सा ग, ग म, म ग, ग म ग सा, सा म, म ग, म ध म, म ध नि, ध नि ध म, ग म ध नि सां, ध नि ध म, ग म, सा ग ग, ध नि, नि ध म, ध ग म, ग सा।

अन्तरा का स्वरूप—नि सा, म, ग म, ध म, नि ध म, म ध नि सां, ध नि सां, ग सां, ध नि सां गं मं, गं मं गं सां, सां ग सां, ध नि ध सां, सां नि ध, नि ध म, ग म ध नि सां, गं म, ग म ग सा।

राग—मालकौंस

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			सासा	नि सासा ध नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सा म म म	म मम ग म	ग ग सा सासा	नि निनि ध म
	दा दा रा दा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	म धध नि सा	सा मम ग म	ग ग सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	
अन्तरा—			मम	ग मम ध नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सा सा सा सासा	नि निनि ध म	नि ध म गग	सा निनि ध म
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
	ग मम ध नि	सा निनि ध म	ग ग सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

राग मालकौंस

तोड़े : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

| सासा | नि सासा ध नि

१—सा म म म | म गम ग म | सामम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

२—सा म म म | म मम ग म | गमम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

३—सा म म म | म मम ग म | धमम गम गसा सासा | नि सासा ध नि

४—सा म म म | म मम ग म | ममम गम गमा सासा | नि सासा ध नि

५—सा म म म | म मम ग म | निनिनि धम गसा सासा | नि सासा ध नि

६—सा म म म | ममम गग गम गसा | ममम गम गसा सासा

नि सासा ध नि |

× | २ | ० | ३
११-गमम गम धनि धम | धमम गम गसा निसा | निसासा गम गसा सासा
नि सासा ध नि |
× | २ | ० | ३
१२-धनिनि साग मग मम | निसासा गम धम धध | ममम गम गसा मामा
नि सासा ध नि |
× | २ | ० | ३
१३-गमम धनि धम गम | गमम धनि सानि धम | निनिनि धम गमा सासा
नि सासा ध नि |
× | २ | ० | ३
१४-गमम धनि साग सानि | धनिनि सानि धम गसा | सामम गम गसा सासा
नि सासा ध नि |

राग-मालकौंस

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

						सा	सा	नि	सासा	नि	सा	-	नि	ध	नि
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	-	दा	रा	दा
सा	-	म	-	म	मम	म	म	ग	मम	गग	मम	ग-	गसा	-सा	सा
दा	-	रा	-	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा
सा	निनि	निनि	ध	-	ध	म	म	म	धध	निनि	सासा	म-	मग	-ग	म
दा	दिर	दिर	दा	-	रा	दा	दा	दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा
म	म	ग	म	ग	सा										
दा	रा	दा	रा	दा	रा										

यह रज़ाखानी गत सातवीं मात्रा से शुरू होती है, इसलिए मसीतखानी गत के लिए जो तोड़े दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक तोड़ा पूरा बजाकर सातवीं मात्रा पर ही गत से मिल जाना होगा। तोड़ों के पश्चात् गत का कोई टुकड़ा लगाने की आवश्यकता नहीं है।

तोड़े शुरू करने के स्थान :—

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोड़ा :—

×	२	०	३
ध निनि सा ग	म ग सा ग	म – म –	नि सासा ग म
ध म ग म	ध – ध –	सा गग म ध	नि ध म ध
नि – नि –	ध निनि सा ग	म ग म –	नि सासा ग म
ध म ध –	सा गग म ध	नि – नि ध	नि – नि ध
नि – नि –	नि सासा ग म	ध – ध म	ध – ध म
ध – ध –	सा निनि ध नि	सा – ध नि	सा – ध नि
सा			

राग हिन्डोल

हिन्डोल राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। ऋषभ व पंचम वर्ज्य होने के कारण इस राग की जाति औडुव औडुव मानी गई है। यह राग उत्तराङ्ग प्रधान है। बादी धैवत व सवादी गाधार है। दिन के प्रथम प्रहर मे बजाया जाता है। इस राग मे निषाद दुर्बल है। निषाद आरोह मे वक्रत्व पाता है। निषाद के अल्प प्रयोग से ही हिन्डोल राग सोहनी राग की छाया से बच पाता है। यह एक गम्भीर प्रकृति का राग है।

आरोह— सा ग, मं ध नि ध, सा।

अवरोह—सा, नि ध, मं ग, सा।

पकड़— सा, ग, मं ध नि ध मं ग, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, ग, सा, सा ध, मं ध सा, ग, सा, नि ध, सा, ग मं ग सा, मं ग, ध मं ग, मं ध मं ग, मं ग, सा। सा ध, नि ध, मं ग, मं ध, मं नि ध, मं ग, ग सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं ध सां, सां, ग सां, सा मं ग सा, सां ध, ग सा, ध, सा ग मं ग, सा ध, नि मं ध सां, सां ध, मं ग सा। सा ध, मं ध सा, सा सा गं सां, ग मं ग सां, ध, ग मं ग सा, ध, सा, मं ध मं ग, मं ग, सा।

राग—हिन्डोल
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई— निध | सा गग मंधध मंध
दिर | दा दिर दादिर दिर
सां सां सां सांसां | नि निनि ध मं | सांनिनि धमं गग मंमं | ग सासा नि ध
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दादिर दिर दिर दिर | दा दिर दा रा
मं धध सा सा | सा गग मं ध | सांनिनि धमं गसा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दादिर दिर दिर
अन्तरा— गग | ग मंमं ध नि
दिर | दा दिर दा रा
मं ध सां सांसां | नि निनि ध मं | नि ध मं गग | सा निनि ध मं
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
सा गग मं ध | सां निनि ध मं | सांनिनि धमं गसा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दादिर दिर दिर

राग–हिन्डोल
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई— | धध मंमं | ग– गग –ग ग | सा – नि ध
दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा – दा रा
सा – – नि | ध नि मं ध | मं धध धध सा | – सा ग मं
दा – – रा | दा रा दा रा | दा दिर दिर दा | – रा दा रा
ध मं ग मं | ग सा धध मंमं
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर
अन्तरा—
ग मंमं मंमं ध | – ध सा सा | ध सासा धध सासा | सा– सानि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
ध सासा सासा गं | – ग मंमं मंमं | गं– गसा –सा सासा | नि– निध –ध मं
दा दिर दिर दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
ध मं ग मं | ग सा धध मंमं
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर

राग शुद्धकल्याण

कल्याण थाट से प्रयोजित इस राग के आरोह में मध्यम व निषाद वर्जित होने के कारण इसकी जाति औडुव-सम्पूर्ण मानी गई है। वादी-सम्वादी क्रमशः गंधार और धैवत हैं। रात्रि के प्रथम प्रहर में इस राग को गाने का व्यवहार है।

सामान्य स्वरूप की दृष्टि से शुद्धकल्याण राग भूपाली से मिलता-जुलता है। किन्तु भूपाली की अपेक्षा इस राग में मन्द्र सप्तक में ज्यादा चलन है। अवरोह में पंचम से गांधार लेते समय मींडयुक्त तीव्र मध्यम के प्रयोग से भी इस राग का स्वरूप स्पष्ट होता है व भूपाली से भिन्न होता है। प रे की संगति सुन्दर प्रतीत होती है। भूपाली की अपेक्षा इस राग में धैवत का प्रयोग अल्प है।

आरोह—सा, रे ग, प ध सा।

अवरोह—सा नि ध प, मं ग, रे, सा।

पकड़—ग, रे सा, नि ध प, सा, ग रे, प रे, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, ध प, प ध प, सा, ध सा, रे, रे ग, रे, सा, रे ग, सा रे ग, प ग, (ग) ध प ग, रे, रे ग, रे, सा रे सा। सा ग, ग ग, प ध प, प ग, रे, ग प, ध प ग, रे, प रे, सा रे सा। ग प, ध प, नि ध प, प ग, प रे, सा रे ग प, रे, सा।

अन्तरा का स्वरूप—प ध प, सां, सां नि ध प, प प सां रें सां, सां रें ग रें सां, रें सां, ध प सां ध प, प ग, ग प, प रे, सा। सा ग, ग रें, रें ग, सां रें, ग प सां, सां रें ग प रें सां, प रें, सां, (नि) ध प, प ग, रे ग, रे, सा।

राग-शुद्धकल्याण

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

											गग	रे	सानि	ध	प
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	रे	सा	ग	रे	सा	रे	सासा	ध	नि	प	पप	ध	सासा	रे	सा
दा	दा	रा	दा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
सा	रेरे	ग	प	रे	गग	प	मं	ग	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

अन्तरा—

											रेरे	ग	पप	ध	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	धध	सां	गं	रें	सांसां	रें	सां	निनि	ध	प	गंगं	रें	सांनि	ध	प
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	धध	प	ग	ध	पमं	ग	रे	ग	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

राग—शुद्धकल्याण
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
गग गग रे- रेसा -सा नि । ध - मा रे
दिर दिर । दा- रदा -र दा । दा - दा रा
ग- - - ग । रे ग रे ग । रे गग रेरे गग । सा- सानि -नि ध
दा - - रा । दा रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा- रदा -र दा
रेरे रेरे रेरे सा । - नि ध प । प धध सासा रेरे । ग- गग -ग ग
दिर दिर दिर दा । - रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा- रदा -र दा
प मं ग प । ग र
दा रा दा रा । दा रा

अन्तरा—

ग पप पप सा | – सा सा सा | ध सासा धध रेंरें | सा– सानि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

गग गग गग रें | – सा रेंरें रेंरें | सा– साध –ध सासा | नि– निध –ध प
दिर दिर दिर दा | – दा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा

प मं ग प | ग रे |
दा रा दा रा | दा रा |

राग कामोद

कामोद राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में तीव्र व शुद्ध दोनों ही मध्यम का प्रयोग होता है। इनमें से तीव्र मध्यम केवल आरोह में लिया जाता है। इस राग की जाति सम्पूर्ण है। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर तथा वादी-सम्वादी क्रम से पंचम तथा ऋषभ हैं।

केदार, छायानट तथा हमीर इस राग के सम स्वरूप हैं। किन्तु इन रागों के रक्तिदायक स्वरूप की ओर दृष्टि रखने तथा राग नियमों के ठीक-ठीक पालन से वे एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इन सभी रागों में निषाद तथा गांधार की वक्रत्व है। इस राग में 'रे प' स्वर-संगति रक्तिदायक तथा राग सूचक है। निषाद का प्रयोग बहुत अल्प है और गांधार भी दुर्बल है। 'ग म प ग म रे सा' यह स्वर-समुदाय इस राग में अधिक आता है।

आरोह —सा रे, प, मं प, ध प, नि ध, सा।

अवरोह —सा, नि ध, प, मं प ध प, ग म प, ग म रे सा।

पकड़ —रे, प, मं प, ध प, ग म प, ग म रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, ग म रे सा, ग म प ग म रे सा, रे प, मं प, ध प, ग म प, ग म रे सा, ध प, प सा, रे सा, ग म रे सा, प, ग म रे सा, प, ग म रे सा, रे प, ग म रे सा, प ध प, सा, ग म प, ग म रे सा, प, ध प, ग म ध प, ग म रे सा रे प।

अन्तरा का स्वरूप—प, मं प, ध प, नि ध प, सा नि ध प, मं प ध प, ग म प, ग म रे सा। प ध प, सां, रें सां, नि ध प, प सां, ग म रें सां, ग म प, ग म रें सां, सां रें सां, नि ध प, मं प, ध प, ग म प, ग म रे सा।

राग—कामोद

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			पप	गम रेरे सारे सा
			दिर	दिर दिर दिर दा
	रे प प मं	प प ध प	गम रे सा सासा	रे सासा ध़ प़
	दा दा रा दा	दा रा दा रा	दिर दा रा दिर	दा दिर दा रा
	सा रेरे प प	मं पप ध प	गम रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दा रा	
अन्तरा—			पप	प धप सां सां
			दिर	दा दिर दा रा
	सां सांसां रें सां	नि धध सां रें	सां निनि ध प	म रेंरें सा प
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा
	सां निनि ध प	रे पप मं प	गम रे सा	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दा रा	

राग कामोद
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
धध पप | गम रे रे नि | रे सा – सा
दिर दिर | दिर दा रा दा | रा दा – रा
रे – रे प | – प धध पप | गम रे रे नि | रे सा – मा
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दिर दा रा दा | रा दा – रा
ध – ध प | – प सा मा | रे रेरे प प | मं पप ध प
दा – रा दा | – रा दा रा | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा
ग म प ग | म रे
दा रा दा रा | दा रा
अन्तरा—
प पप पप सां | – सां सां सां | सां सांसां सांसां सांसां | रें– रेंनि –नि सां
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
ध – ध मं | – प धध पप
दा – रा दा | – रा दिर दिर

राग छायानट

कल्याण थाट से उत्पन्न, इस राग मे दोनो मध्यम का प्रयोग होता है। इनमे से तीव्र मध्यम केवल आरोह मे लिया जाता है, जबकि शुद्ध मध्यम आरोह-अवरोह दोनो मे लिया जाता है। इस राग की जाति सम्पूर्ण है। छायानट राग रात्रि के प्रथम प्रहर मे गाया जाता है। इस राग का वादी स्वर पचम तथा संवादी स्वर ऋषभ है। इस राग के आरोह मे निषाद तथा अवरोह मे गाधार को वक्र रूप से लिया जाता है। पचम तथा ऋषभ की संगति रक्तिदायक है। क्वचित कोमल निषाद का प्रयोग विवादी रूप से गायक लोग इस राग मे करते हैं।

आरोह— सा, रे, ग म प, नि ध, सां।

अवरोह—सां नि ध प, मं प ध प, ग म रे सा।

पकड़— प, रे, ग म प, ग ग, म रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, ध प, सा, रे सा, ग म रे सा, सा, रे, ग, म प, प रे, सा, ध प, सा, ध नि प, प सा, रे सा, ग म प, प रे, सा। प रे, ग ग, म, प, ध प, प सां, ध प मं प ध प, प रे, रे ग, म ध प, रे, प रे, सा।

अन्तरा का स्वरूप—प, ध प, सां, सां रें सां, ध नि प, प रे, ग, म प, प ध प, सां, ग म रें सां, प, म ग, म रे, सा, प रें, सां, प, सां रें सां, ध प, प रे, रे ग, ग म प, रे सा।

२३८
सितार-दर्पण
राग—छायानट
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई—
गम | म पप रेग मप
दिर | दा दिर दिर दिर
म रे सा सासा | रे गग म प | गम रे सा सासा | रे सासा ध़ प़
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दिर दा रा दिर | दा दिर दा रा
प़ पप़ सा सा | रे गग म प | गम रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा
अन्तरा—
पप | प पप सां सां
दिर | दा दिर दा रा
सां सांसां रें सां | रें गग म प | गम रें सां सांसां | रें सांसां ध प
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा दिर | दा दिर दा रा
प रेरे रे ग | रे गग म प | गम रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा

राग—छायानट
(रजाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

×	२	०	३
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६

स्थाई—

	म ग	म धध धध धध	प– परे –रे गम
	दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दिर
प – गम रे	सा रे सा सा	नि़ साsा निनि रेरे	सा– साध़ –ध़ प़
दा – दिर दा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
प़ पप़ पप़ ध़	– ध़ सा सा	रे गग रेरे गग	म– मप –प प
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
ग म रे ग	– म ग ग		
दा रा दा रा	– दा दा रा		

अन्तरा—
प पप पप सां | – सां नि सां | ध निनि सांसां रेंरें | सां– सांध –ध प
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
मं – रें ध | – प धध पप | प– पमं –मं पप | ग– मरे –रे सा
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
ग म रे ग | – म म ग |
दा रा दा रा | – दा दा रा |

राग गौड़सारंग

कल्याण थाट से उत्पन्न, इस राग की जाति सम्पूर्ण है। इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है। गांधार व निषाद को वक्रत्व है। यह राग वक्र स्वरूप का है। ग रे, म ग इस स्वर-समुदाय से राग स्पष्ट होता है। वादी गांधार व सम्वादी धैवत है। गान-समय दोपहर का माना जाता है। विवादी रूप से क्वचित् कोमल निषाद का प्रयोग इस राग में होता है।

आरोह— सा, ग रे म ग, प म॑ ध प, नि ध सां।

अवरोह—सां ध, नि प, ध म॑ प ग, म रे, प, रे सा।

पकड़— सा, ग रे म ग, प रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, ध प सा, ग रे, म ग, प, म॑ प, ध प, ग म, रे ग रे, म ग, प, ध प, म॑ प, ध प, सां ध, नि प, ध म॑ प, ग म, रे ग रे म ग, प, रे सा। प म॑ ध प, नि ध नि प, ध म॑ प, म ग, रे ग रे म ग, प, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—प ध प, नि ध नि प, प प सां, रें सां, सां गं रें मं गं, मं रें सां, नि ध नि प, सां नि ध प, ध म॑ प, म ग, रे ग रे म प, प, रे सा। सां गं रें मं गं, प, रें सां, सां, ध प, प प सां, नि ध नि प, ध प, म॑ प ध प, म ग रे म ग, प रे सा।

राग—गौड़सारंग
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई— गग | रे सारे सा सा
दिर | दा दिर दा रा
गरे म ग ग | ग ग प मंप | गरे म ग पप | रे सारे सा सा
दिर दा दा रा | दा रा दा दिर | दिर दा रा दिर | दा दिर दा रा
सा गरे म ग | प मंप ध प | गरे म ग
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा
अन्तरा— पप | प पप सां सां
दिर | दा दिर दा रा
सां रें सां सांसां | ध धध सां रें | सांनि ध प गग | रें सांनि ध प
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दिर दा रा दिर | दा दिर दा रा
नि धध मं प | गरे म ग ग | प रे सा
दा दिर दा रा | दिर दा दा रा | दा दा रा

राग—गौड़सारंग
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
ग | रे नि नि सा
दा | रा दा रा दा
ग रे म ग | ग ग पप पप | रे– रेसा –सा ग | रे नि नि सा
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा रा दा
प पप मं प | ध निनि ध नि | प पप मं प | ग म रे ग
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा रा दा रा
ग रे म ग | ग ग पप पप | रे– रेसा –सा ग | रे नि नि सा
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा रा दा
अन्तरा—
प पप पप सां | – सां सां सां | ध निनि सांसां रेंरें | सां– सांध –ध निप
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दिर
ग मम मम प | – प पपपप | रे– रेसा –सा ग | रे नि नि सा
दा दिर दिर दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा रा दा

राग श्री

यह राग पूर्वी थाट से निकलता है। इसमें ऋषभ-धैवत कोमल, मध्यम तीव्र और बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य हैं। इसलिए राग की जाति औडुव-सम्पूर्ण मानी जाती है। ऋषभ-पंचम की संगति रागवाचक है। इसमें चढ़ा कोमल ऋषभ लगता है। यह राग दिन के चौथे प्रहर में गाया जाता है। वादी स्वर ऋषभ और सम्वादी स्वर पंचम है।

ग ग
आरोह—सा रे रे सा, रे, मं प, नि सां।

अवरोहः—सां, नि ध, प, मं ग रे, ग रे, रे सा।

पकड़—सा, रे, रे सा, प, मं ग रे, ग रे रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, सा रे, ग रे, मं रे, ध मं ग रे, रे प, ग रे, ग रे, सा। रे प, नि ध प, मं प ध रे, मं रे, ग रे, रे सा, रे प, मं प ध प, नि ध प, सां नि ध प, रें नि ध प, रे प, मं प ध, प मं ग, रे, ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—रे प, ध प, प सां, रें सां, ग रें सां, मं ग रें सां, ग रें सां, मं प नि सां रें, रे सा। सा सा प, ध प, मं ध, मं ग, रे, रे प, सा रें, नि ध प, मं रे, ग रे, सा।

राग—श्री
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
रे रेरे मं प । ध प मं प । प मं रे गग । रे रेरे रे सा
दा दिर दा रा । दा रा दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
मं पप नि सा । रे सा सा रे । प मं रे गग । रे रेरे रे सा
दा दिर दा रा । दा रा दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
अन्तरा—
रे मंमं प नि । रें सां नि सां । रें रें सां सांसां । नि धध प मं
दा दिर दा रा । दा रा दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
मं पप नि सां । रें रें सां सांसां । प सांसां नि ध । मं गग रे सा
दा दिर दा रा । दा रा दा दिर । दा दिर दा रा । दा दिर दा रा

राग—श्री

(रजाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—													मं	पप	नि	सा
													दा	दिर	दा	रा
	रें	–	सां	सां	नि	सांसां	निनि	सांसां	नि–	निध	–ध	प	मं	पप	मं	ध
	दा	–	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा
	मं	ग	रे	सा	सा	पप	मंमं	गरे	ग–	गरे	–रे	सा				
	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा				
अन्तरा—													मं	पप	नि	नि
													दा	दिर	दा	रा
	सां	–	सां	सां	नि	सांसां	निनि	रेंरें	सां–	सांनि	–नि	धप	मं	पप	नि	सां
	दा	–	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा	दिर	दा	रा
	रें	–	सां	सां	मं	पप	धध	मंमं	ग–	गरे	–रे	सा	मं	पप	नि	सां
	दा	–	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा

राग पटदीप

यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है। इस राग में गाधार कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ-धैवत वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पूर्ण है, इसलिए राग की जाति औडव-सम्पूर्ण है। राग का वादी स्वर पचम और सम्वादी षड्ज है। यह राग दिन के चौथे प्रहर में गाया जाता है।

आरोह —सा ग़ म प नि सां।

अवरोह —सां नि ध प म ग़ रे सा।

पकड —ध प, ग़ म प, नि।

स्थाई का स्वरूप—सा, ग़ म प, नि, ध प, म प, ग़, म ग़, रे, सा नि सा, ग़ म प, नि ध प, म प ग़, म ग़ रे सा।

सा, ग़ म प, ध प, ग प, नि ध प, ग़, म प नि, प नि, ध, प, म, ग़ म ग़ रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—ग़ म प नि, प नि सां, प नि सां, रें सां, नि ध प, म प नि, ध प, ध प म, प म ग़, म ग़ रे, सा।

प नि सां, प नि सां गं, रें नि सां, ध प, म प नि सां, म ग़ रें सां नि ध प, म प नि ध प, ध प, ग़ म प, नि, सा नि ध प, म, ग़, रे, सा।

२४८
सितार-दर्पण
राग—पटदीप
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
पप । म पप ग़ म
दिर । दा दिर दा रा
प नि सां सांसां । नि निनि नि सां । नि ध प पप । ग़ ग़ग़ रे सा
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
नि़ सासा ग़ म । प निनि नि सां । नि ध प
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा
अन्तरा—
पप । ग़ मम प नि
दिर । दा दिर दा रा
प नि सा सासा । नि निनि सा ग़ं । रें सा नि रेंरें । सा निनि ध प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
ग़ मम प नि । नि धध प म । ग़ रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा

राग-पटदीप

तोडे : मसीतखानी गत

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६

पप | म पप ग़ म

१—प नि सा सासा | नि निनि नि सा | पनिनि सानि धप पप | म पप ग़ म

२—प नि सा सासा | नि निनि नि सा | पनिनि धप मप पप | म पप ग़ म

३—प नि सा सासा | नि निनि नि सा | पमम पनि धप पप | म पप ग़ म

४—प नि सा सासा | नि निनि नि सा | सानिनि धप मप पप | म पप ग़ म

५—प नि सा सासा | नि निनि नि सा | सारेंरें सानि धप पप | म पप ग़ म

६—प नि सा सासा | ग़मम पनि धप मप | पनिनि सानि धप पप | म पप ग़ म

७—प नि सा सासा | निसासा मग़ रेसा निसा | ग़मम पनि धप पप | म पप ग़ म

८—प नि सा सासा | मपप ग़म पनि सानि | सानिनि धप मप पप | म पप ग़ म

९—प नि सा सासा | मपप निसा निध पप | पनिनि धप मप पप | म पप ग़ म

	×				२				०			
१०—	र	नि	सां	सासा	मपप	निसा	रेंसां	निसा	पमम	पनि	धप	पप
	३											
	म	पप	ग	म								
	×				२				०			
११—	धपप	गम	पनि	सांनि	धपप	मप	गग	रेसा	गमम	पम	पप	पप
	३											
	म	पप	ग	म								
	×				२				०			
१२—	गमम	पनि	सांनि	सासा	पनिनि	सानि	धप	गप	पमम	गम	पप	पप
	३											
	म	पप	ग	म								
	×				२				०			
१३—	निसासा	गम	गग	रेसा	गमम	पनि	धध	पप	पनिनि	सानि	धप	पप
	३											
	म	पप	ग	म								
	×				२				०			
१४—	गमम	पनि	सांगं	रेंसा	सांरेंरें	सांनि	धप	मप	सांनिनि	धप	मप	पप
	३											
	म	पप	ग	म								

	×				२				०			
१५—	गुमम	पनि	धप	पनि	धपप	मप	मगु	मप	नि–	सारें	सांनि	धप
	३				×				२			
	गुमम	पम	गुरे	निसा	पनिनि	सांनि	धप	मप	निध	पगु	–म	पम
	०				३				×			
	प–	–गु	–म	पम	प–	–गु	–म	पम	प	नि	मा	सांसा
	२				०							
	नि	निनि	नि	सा	नि	ध	प					

राग-पटदीप

(रजाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| | | ध | पप ग म प
| | | दा | दिर दा रा दा

नि — नि नि | प निनि सांसां निनि | ध— धप —प पप | ग— गग रे सा
दा — दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दिर | दा— दिर दा रा

नि सासा मामा ग | — म पप निनि | ध— धप —प ध | पप ग म प
दा दिर दिर दा | — रा दिर दिर | दा— रदा —र दा | दिर दा रा दा

अन्तरा—

ग मम पप नि | — नि सां सां | प निनि सांसां गंगं | रें— रेंसां —सां नि
दा दिर दिर दा | — रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा

सां निनि ध प | ग ग मम गग | रे— रेसा —सा ध | पप ग म प
दा दिर दा रा | दा रा दिर दिर | दा— रदा —र दा | दिर दा रा दा

नि |
दा |

मसीतखानी गत के तोडो के पश्चात् लगाने के लिए गत का टुकड़ा —

×	२	०	३
	सासा निनि	ध– धप –प ध	पप ग़ु म प

तोड़े शुरू करने के स्थान —

१ से ५ तोड़े सम से, ६ से १० तोड़े खाली से, ११ से १४ तोड़े सम से।

१५ वाँ तोडा —

×	२	०	३
ग़ु मम प नि	ध प प नि	ध पप म प	म ग़ु म प
नि – सा रे	सा नि ध प	ग़ु मम प म	ग़ु रे नि सा
प निनि सा नि	ध प म प	नि ध प ग़ु	– म प प
नि – – ग़ु	– म प प	नि – – ग़ु	– म प प

नि

विभाग चौथा

१५ राग

१ शंकरा
२ देशकार
३ जयजयवन्ती
४ रामकली
५ वसन्त
६ परज
७ पूरिया
८ पूरियाधनाश्री
९ ललित
१० गौडमल्हार
११ अड़ाना
१२ दरबारी
१३ मीयामल्हार
१४ बहार
१५ मुलतानी

राग शंकरा

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इस राग के दो प्रकार प्रचार में हैं। एक प्रकार में मध्यम तथा दूसरे में ऋषभ व मध्यम दोनों वर्ज्य करते हैं। वैसे भी ऋषभ इस राग में दुर्बल ही है। इस राग का वादी स्वर गांधार एवं सम्वादी निषाद है। कोई विद्वान् इसमें षड्ज-पंचम को वादित्व-संवादित्व देते हैं। इन दो मतों के अनुसार इस राग का गान-समय क्रमशः रात्रि का दूसरा प्रहर व मध्यरात्रि माना जाता है।

बिहाग से स्वरूप-साम्य होने पर भी बिहाग में मध्यम स्वर स्पष्ट होने से भिन्नता हो सकती है। 'प नि ध, सा नि' यह स्वर-समुदाय रागवाचक है।

आरोह—सा ग, प, नि ध, सा।

अवरोह—सा, नि प, नि ध, सा नि प, ग प, ग सा।

पकड़—सा, नि प, नि ध, सा, नि प, ग प, ग सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, ग प ग, सा, प, सा, सा ग प,
रे रे
ग, सा, प ग, प ग सा। सा रे सा, ग प, नि, प, ग प, ग सा ग प,
नि प, ग प, नि ध सा, नि, प, ग प, ग सा। प नि ध सा, नि, प, ग प,

नि ध, सा नि, प, ग प, नि प, ग प, ग सा।

अन्तरा का स्वरूप—प प गा, सा, रें सा, ग सा, ग प ग सा,
नि प, प नि ध सा, नि प, सा रें सा, नि प, ग प रें सा, नि प,

नि ध सा, नि प, सा प, ध प, ग प, ग सा। सा, रें सा, सां ध प, ग प

ग, सा, सा ग रे सा, नि प, प नि ध सा नि, प, ग प, सा, प, ग प, ग सा।

राग–शंकरा

(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			
स्थाई—												सासा	ग	गग	प	निध
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
	सा	नि	प	पप	ग	गग	ग	प	ग	रे	निरे	सासा	प	सासा	निरे	सा
	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दा
	सा	सासा	ग	ग	प	पप	ग	प	ग	रे	निरे					
	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर					
अन्तरा—												पप	प	पप	सां	सां
												दिर	दा	दिर	दा	रा
	निध	सां	सां	सां	नि	प	ग	प	ग	ग	सा	गग	सा	निनि	प	ग
	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
	सा	गग	प	प	निध	सा	नि	प	ग	रे	निरे					
	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	दा	रा	दा	रा	दिर					

२५८
सितार-दर्पण
राग-शंकरा
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सां । नि ध – सां
दा । रा दा – रा
नि – – नि । ग पप नि ध । सां नि – पप । ग रेरे नि सा
दा – – रा । दा दिर दा रा । दा रा – दिर । दा दिर दा रा
प पप पप नि । – सा नि सा । सा गग गग पप । नि– धसां –नि रेंसां
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दिर
रें सां नि सां । नि ध रेंरें रेंरें । सां– सांनि –नि सां
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दा

अन्तरा—

ग पप पध सां | – सां सां सां | सां गंगं गंगं गंगं | गं– गंरें –रें सां

दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

सांसां गंगं रेंरें नि | – रें सां सां | सां– सांनि –नि सांसां | नि– निनि -नि प

दिर दिर दिर दा | – रा दा रा | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा

रें सां नि सां | नि ध रेंरें रेंरें | सां- सांनि –नि सां | नि ध – सां

दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा

नि |

दा |

राग देशकार

यह राग विलावल थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में मध्यम व निषाद वर्जित है, तदर्थ जाति औडुव है। इस राग का वादी धैवत व सम्वादी गांधार है। गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है। धैवत स्वर के प्रयोग में बड़ा कौशल्य है। पूर्वाङ्ग प्रधान भूपाली राग से उत्तराग प्रधान देशकार राग को विभिन्न बताने के लिए इसी धैवत को यथा उचित स्थानों पर निर्देशित करना होता है। देशकार राग की प्रकृति गम्भीर मानी गयी है।

आरोह— सा रे ग, प, ध सां।

अवरोह—सां, ध, प, ग प ध प, ग रे सा।

पकड़— ध, प, ग प, ग रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, सा ग रे सा, ग प, ध प, ग रे सा। ध सा, रे सा, ग प, ध, ग प, ग ग ध प, प, ध प, ध ग प, ग रे सा। प, ग प, सा ग प, प सा, सा ग प, ग ध, प, प ध सा, ध प, ध ग प, ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—प, ध प, सां ध प, ग प ध सां, रें सां, ध प, प ध सां, ध सां, रें सां, ग रें सां, रें सां, ध प, सा ग प, ग रे सा, सा रें सां, रें ध, प, ग प ध सां, रें सां ध प, सा प, प ध प, ग, प, ध ग प, ग रे सा।

सितार-दर्पण
२६१
राग—देशकार
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ६ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
धध । ध पध साप ध
दिर । दा दिर दिर दा
सा ध प ध । प ग प ग । ग रे सा सासा । सा रेरे रे ग
दा दा रा दा । दा रा दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
रे गग ग प । ग पप ध सा । सा ध प
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा
अन्तरा—
पप । ग पप ग प
दिर । दा दिर दा रा
ध ध ध पप । ध पप ध सां । ध ग रें रेंरें । सां धध प ग
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
सा रेरे रे ग । ग गग प ध । सां ध प
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा

राग–देशकार
(रजाखानी गत)

त्रिताल | मात्रा १६

	×				२				०				३			
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—													ग	पप	ध	प
													दा	दिर	दा	रा
	ध	–	प	प	ग	पप	धध	पप	ग–	गरे	–रे	मा	मा	रेरे	रेरे	ग
	दा	–	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दिर	दा
	–	ग	प	प	ग	पप	धध	पप	ग-	गरे	-रे	सा	ग	पप	ध	प
	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा
अन्तरा—																
	ग	पप	पप	ध	–	ध	मा	सा	ध	सासा	धध	रेंरें	सा–	साध	–ध	प
	दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
	ध	ध	प	ध	प	ग	धध	पप	ग–	गरे	–रे	मा	ग	पप	ध	प
	दा	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा	दा	दिर	दा	रा
	ध															
	दा															

राग जयजयवन्ती

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। जाति सम्पूर्ण है। इस राग में दोनों गांधार व निषाद का प्रयोग होता है। 'ग नि' आरोह में तीव्र तथा अवरोह में कोमल प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर ऋषभ एवं सम्वादी पंचम माना जाता है। इस राग को रात्रि के दूसरे प्रहर में गाने का व्यवहार है। प नि़ रे, रे ग़ु रे, सा, यह एक सामान्य रागवाचक स्वर-समुदाय है। इसी प्रकार मन्द्र पञ्चम तथा ऋषभ की स्वर-संगति प्रचलित है।

राग-गान-समय सिद्धान्त के अनुसार तीव्र रे, ग तथा ध लेने वाले राग के पश्चात् कोमल ग नि लगने वाले रागों का स्थान है। इन दोनों वर्गों के बीच परमेल प्रवेशक राग जैजैवन्ती माना जाता है। कोमल गांधार के कारण इसे यह स्थान प्राप्त हुआ है। खमाज थाट के रागों से काफी थाट के रागों में यह राग प्रवेश कराता है।

आरोह —सा रे रे, रे ग़ु रे सा, नि़ ध प रे, ग म प नि सां।

अवरोह —सां नि़ ध प, ध म, रे ग़ु रे सा।

पकड़ —रे ग़ु रे सा, नि़ ध प, रे।

स्थाई का स्वरूप—सा, ध नि़ रे, रे ग, ग म, रे ग़ु रे, सा। सा नि़ ध प, प रे, रे ग, ग म, म प, म ग, रे ग म प, म ग, म, रे ग़ु रे, प नि़ प रे, सा। नि सा, रे ग़ु रे सा, रे नि़ ध प, प रे, रे ग म ग रे, म प, नि़ ध प, म ग, म रे, ग म प, म ग म रे, ग़ु रे, सा, ध नि़ रे।

अन्तरा का स्वरूप—म प सां, नि सां, नि़ ध प, प रें, रें सां, सां नि ध प, ध नि़ रें, रें ग, म ग रे, ग़ रें, सां, रें नि़ ध प, म ग म रे, ग म प, म ग म रे, रे ग़ु रे सा। ध म प सां, रें ग़ं रें सां, रें नि सां, ध नि़ रें, रें ग म प, म ग रें, ध नि़ रें, प रें, ग़ं रें सां, नि़ ध प, म ग म रे, रे ग़ु रे, सा, ध नि़ रे।

राग—जयजयवन्ती

(मसीतखानी गत)

राग-जयजयवन्ती
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
। नि सासा नि सा । – नि ध नि
दा दिर दा रा – दा रा दा
रे – ग म रे गग रे सा । नि सासा निनि रेरे । सा निनि ध प
दा – दा रा । दा दिर दा रा । दा दिर दिर दिर । दा दिर दा रा
प रेरे ग म । रे गग रे सा । नि सासा नि सा – नि ध नि
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । – दा रा दा
अन्तरा—
म पप पप नि । – नि सां सां । रें गग मम गग रें– गरें –रें सां
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
प रेंरें रेंरें सां । – नि ध प ध मम रेरे गग । रे– रेनि –नि सा
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
रे गग म ग । रे ग रे सा ।
दा दिर दा रा । दा रा दा रा ।

राग रामकली

—— ❁ ——

राग रामकली भैरव थाट से उत्पन्न होता है एवं सामान्य स्वरूप भी भैरव राग के समान ही है। इस राग के स्वरूप के सम्बन्ध में कुछ मत प्रचलित हैं। १—म और नि आरोह में वर्ज्य करने वाला अप्रचलित प्रकार। २—सम्पूर्ण जाति का प्रकार, जिसे भैरव से भिन्न दिखलाना कष्टसाध्य है और ३—दो मध्यम व दो निषाद लगने वाला प्रकार। तीसरा प्रकार अधिक प्रचलित है। यह प्रयोग एक खास ढङ्ग से किया जाता है—मं प धु नि धु प, ग, म ग, रे सा इस प्रकार के स्वरों के द्वारा यह प्रयोग किया जाता है। रामकली राग प्रात:काल को गाया जाता है। इस राग का वादी स्वर पंचम है और संवादी स्वर षड्ज है। भैरव की अपेक्षा रामकली राग में ऋषभ व धैवत पर आन्दोलन कम है।

आरोह—सा ग, म प, धु, नि सां।

अवरोह:—सां नि धु, प, मं प धु नि धु, प ग, म रे सा।

पकड़—धु प, मं प, धु नि धु प ग, म, रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे सा, ग म रे सा, धु सा, सा सा, म प, ग म, धु धु प, मं प, ग म प, ग म रे सा, सा सा धु धु प, मं प धु नि धु प, मं प, ग ग म, धु धु प ग म रे सा। सा ग म प, ग म प, मं प धु नि धु प, मं प, ग म, धु प, ग, म प ग म रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—प प धु, सां, रें सां, ग म रें सां, नि सां धु प, मं प धु नि धु प, ग म धु सां, सां ग म प, ग म रें सां, रें सां धु प मं प, ग म, सा धु, धु प, मं प धु नि धु प, ग म रे सा।

राग–रामकली
(मसीतखानी गत)
मात्रा १६
ताल
२ ० ३
२ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
थाई—
मम | नि धप प मंप
दिर | दा दिर दा दिर
ग प म पप | ग मम ग म | रे रे सा निनि | सा गग म प
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
मं पप ध प | नि धध प म | गम रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा
अन्तरा—
गग | म पप ध नि
दिर | दा दिर दा रा
सा सा सा सासा | रें सासा नि सा | नि ध प पप | ध पप मं प
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
नि धध प म | ग मम ग म | गम रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दा रा

राग-रामकली

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| प प | मं धुधु मम मग | म- मप -ग प
| दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा

धु - - प म प ग म | ग मम गग मम | ग- गरे -रे सा
दा - - रा दा रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा

सा - सा सा | - सा रेंरें रेंरें | सा- सानि -नि सासा नि- निधु -धु प
दा - रा दा | - रा दिर दिर | दा- रदा -र दिर दा- रदा -र दा

मं पप धु नि | धु प प प |
दा दिर दा रा | दा रा दा रा |

अन्तरा—

ग्र मम मम धृ	– नि सां सां	नि सांसां निनि रेंरें	सां– सांनि –नि धृ
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
ग – ग रें	– सां रेंरें रेंरें	सां– सांनि –नि सांसां	नि– निधृ –धृ प
दा – रा दा	– रा दिर दिर	दा– रदा –र दिर	दा– रदा –र दा
मं पप धृ नि	धृ प		
दा दिर दा रा	दा रा		

राग वसंत

यह राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। बसन्त राग में दो प्रकार प्रचार में हैं। एक में दोनों मध्यम तथा धैवत शुद्ध लेकर पचम वर्ज्य किया जाता है, जबकि दूसरा प्रकार सम्पूर्ण है। इन दोनों प्रकारों में वादी स्वर तार षड्ज तथा सम्वादी स्वर पंचम माना जाता है। उपर्युक्त प्रथम प्रकार में पचम वर्ज्य होने से शुद्ध मध्यम को सवादित्व दिया जाता है। गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है।

इस राग के गीतों में प्रायः वसंत ऋतु का वर्णन होता है, तदर्थ बसंत ऋतु में गाने का अधिक व्यवहार है।

वसंत राग में पचम स्वर का प्रयोग सही प्रमाण में ही करना उचित है, क्योंकि प्रमाण बढ़ जाने पर परज राग की छाया आजाना सम्भव है। परज की अपेक्षा यह राग अधिक गम्भीर प्रकृति का है। यह राग उत्तरांग में विशेष रूप से प्रभाव डाल सकता है। म॑ ग, म॑ ग, सा, नि ध॒, नि ध॒; म॑ ध॒, रें, स नि ध॒, प इत्यादि स्वर-समुदाय राग के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

आरोह—सा, ग, म॑ ध॒, रें, सां।

अवरोह—रें नि ध॒, प, म॑ ग, म॑ ग, म॑ ध॒ म॑ ग, रे॒ सा।

पकड—म॑ ध॒, रें, सां, रें नि ध॒ प, म॑ ग, म॑ ग।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे॒ सा, नि सा ग, म॑ ग, ग म॑ ध॒, ग म॑ ग म॑ ग रे॒ सा, सा प, म॑ ग, म॑ ग, म॑ ध॒ नि ध॒ प, ध॒ प, म॑ ग म॑, ग, नि ध॒ म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा, म॑ ध॒ सां, नि ध॒ प, म॑ ध॒ प, म॑ ग, म॑ ग, रें नि ध॒ प, म॑ ग म॑, ग, ग म॑ ध॒ म॑ ग रे॒ सा।

अन्तरा का स्वरूप—म॑ ध॒ सां, रें सां, सां ग रें सां, नि ध॒ रें, नि ध॒ प, म॑ ध॒ सां, नि रें, सां, ग रें सां, नि रें ग, म॑ ग रे॒ सा, नि रें नि ध॒ प, म॑ ध॒ नि रें नि ध॒ प, म॑ ग म॑, ग, नि, म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा।

राग—बसंत
(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

			निनि | ध पप मं ग
			दिर | दा दिर दा रा
मं ध सा सांसां	नि निनि सां रें	सां नि ध पप	मं पप मं ग
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
ग मंमं नि ध	प मंमं ग मं	ग रे सा सासा	म मम म ग
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
मं धध रें सां	रें सांसां नि सां	नि ध प	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

अन्तरा—

गग | ग मंमं धु धु
दिर | दा दिर दा रा
रें सां गं सांगं | नि निनि सां रें | सां नि धु मंमं | गं रेंरें नि सां
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
ग मंमं धु रें | सां निनि धु प | मं प मंग |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा रा दिर |

राग–बसन्त
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सा । नि ध – प
दा । रा दा – रा
प – प – । र्म प मम पप । र्म– र्मग –ग र्मर्म । ग रेंरें नि सा
दा – रा – । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दिर । दा दिर दा रा
सा सासा सासा म । – म म म । र्म धध रेंरें सांसां । रें– रेंनि –नि सा
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
रें सा नि सा । नि ध साधा सासा । नि– निध –ध सा । नि ध – प
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दा । दा दा – रा

अन्तरा—

सा गासा सागा ग | – म म म | मं धुधु सांसां सांगां | रें– रेंनि –नि सां
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

मंमं मंमं मंमं गं | – गं रें सां | मं धुधु रेंरें सांसां | रें– रेंनि –नि सा
दिर दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

रें सां नि सां | नि धु |
दा रा दा रा | दा रा |

राग परज

पूर्वी मेल जन्य इस राग मे दोनो मध्यम का प्रयोग होता है। इस राग
ी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर व वादी-
म्वादी क्रमश षड्ज-पचम है। उत्तराग प्रधान होने से तार षड्ज वैशिष्ट्य-
ण है। बसन्त की अपेक्षा इस राग का चलन चपल है। निषाद पर तान
माप्ति से राग-स्वरूप स्पष्ट होता है जैसे—सा रें, सा रें, नि ध नि। ध प,
ा म ग, मं ध, नि सा यह स्वर-समुदाय राग को स्पष्ट करता है।

आरोह—नि, सा ग, मं ध नि सा।

अवरोह—सा, नि ध प, मं प ध प, ग म ग, म ग रे सा।

पकड—सा, नि ध प, मं प ध प, ग म ग।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, ग, मं ग, ध प, ग म ग, मं ग, मं ध
नि, ध प, ग म ग, सा नि ध प, रें नि सा, सा नि ध प, ध प, ग म ग, रे ग,
मं ग रे सा। प, ध प, ध नि ध प, सा, रें नि सा, ध प, ग म ग, मं ग रे सा।
नि, ध नि, मं ध नि, रे ग मं ध नि, सा रें नि सा, नि, ध प, ग म ग, रे ग
मं ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं ध नि, सां, रें सां, नि रें ग, मं ग रें सां,
प रें सा, रें सा, ध प, ग म ग, ग मं ध नि सां ध नि सा रें नि सा, ग मं ग,
मं ग रें सां, ध रें सा रें नि, सा, ध प, ध नि रें ग, रें सां, ध प, ग म ग,
रे ग, मं ग रे सा।

राग–परज
(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई— सासा । नि धध में ध

दिर । दा दिर दा रा

नि नि सां सांसां । रें सासा नि सां । नि ध म पप । ध पप गम ग

दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दिर दा

सा सासा ग ग । में धध नि सां । सारें निसा धनि ।

दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दिर दिर ।

अन्तरा— गग । ग मंमं ध नि

दिर । दा दिर दा रा

सां सा सां सासा । नि निनि सा रें । सां नि ध पप । ध पप गम ग

दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दिर दा

सा सासा ग ग । में धध नि सां । सारें निसा धनि ।

दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दिर दिर दिर ।

सितार-दर्पण
२७७
राग—परज
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
| सां सां | नि रेंरें सांसां निनि | ध— धमं —मं ध
| दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा रदा—
सा नि सा — | ध प ध — | मं ग म — | ग रे सा —
दा रा दा — | दा रा दा — | दा रा दा — | दा रा दा —
नि सासा सासा ग | — ग मं ध | नि सांसां निनि रेंरें | सां— सांनि —नि ध
दा दिर दिर दा | — रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा
रें सां नि सा | नि ध | |
दा रा दा रा | दा रा | |

अन्तरा—
ग गग गग मं | – ध नि सां | सां रेंरें सांसां रेंरें | सां– सांनि –नि ध
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा
गं – ग रें | – सां रेंरें रेंरें | सां– सांनि –नि धसा | नि– निध ध प
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
रें सां नि सां | नि ध |
दा रा दा रा | दा रा |

राग पूरिया

मारवा थाट से यह राग निकला है। इस राग में पंचम वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है। पूरिया का चलन ज्यादातर मन्द्र व मध्य स्थानों में अधिक होने से इसके समस्वरूप राग सोहनी से यह भिन्नता होती है। निषाद मध्यम स्वर-संगति वैचित्र्य बढ़ाती है। सा, निधनि, म॑ ग यह स्वर-समुदाय रागवाचक है। ऋषभ कोमल तथा ग नि शुद्ध होने से यह एक संधिप्रकाश राग है। वादी स्वर गान्धार तथा संवादी स्वर निषाद है।

आरोह— नि रे॒ सा, ग, म॑ ध, नि रें॒ सां।

अवरोह—सां नि ध, म॑ ग, रे॒, सा।

पकड़— ग, नि रे॒ सा, नि ध नि, म॑ ध, रे॒ सा।

स्थाई का स्वरूप—नि रे॒ सा, नि ध नि, रे॒ सा, म॑ ध नि रे॒ सा, नि ध नि, म॑ ग, म॑ ध नि रे॒ सा। नि रे॒ ग, सा ग, रे॒ ग, नि रे॒ ग, म॑ ग, रे॒ ग, रे॒ सा, नि रे॒ सा, नि, म॑ ग, म॑ ध नि रे॒ सा, रे॒ सा, ग, नि म॑, ग, म॑ ग, रे॒ सा, ग म॑ ग, ग म॑ ध ग म॑ ग, नि रे॒ सा। नि रे॒ ग म॑ ध नि म॑ ग, म॑ ध म॑ ग, म॑ ग, नि रे॒ सा।

अन्तरा का स्वरूप—म॑ ध सां, नि रें॒ सां, नि रें॒ ग, रें॒ ग, म॑ ग रें॒ सां, रें॒ सां, नि नि, रें॒ नि, म॑ म॑ ग, म॑ ध नि म॑ म॑ ग, नि म॑ ग, रें॒ सां, नि नि, म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा।

राग–पूरिया
(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—											मंमं	ग	रेरे	मा	निध
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
नि	रे	मा	रेनि	मा	गग	ग	मं	ग	रे	मा	सासा	नि	निनि	ध	मं
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
मं	धध	नि	रे	नि	रेरे	ग	मं	ग	रे	मा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा—											गग	मं	मंमं	ध	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
रें	गां	गां	सांसां	नि	धध	मं	ग	नि	ध	मं	गंगं	रें	सांसां	नि	ध
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	मंमं	ध	नि	सां	निनि	ध	मं	ग	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

राग—पूरिया
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
मंमं मंमं । ग– गरे –रे मं । ग रे – नि
दिर दिर । दा– रदा –र दा । रा दा – रा
सा – – नि । ग नि मं ध । मं धध निनि सांसां । रें– रेंनि –नि सा
दा – – रा । दा रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
मं ग रे ग । रे सा
दा रा दा रा । दा रा
अन्तरा—
ग मंमं मंमं ध । – नि रें सां । नि सांसां निनि रेंरें । सां– सांनि –नि ध
दा दिर दिर दा । – रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
मं मं ग मं । मं ग मंमं मंमं । ग– गरे –रे मं । ग रे – नि
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दा । रा दा – रा
सा
दा

राग पूरियाधनाश्री

पूर्वी मेल जन्य यह राग सम्पूर्ण जाति का है। वादी स्वर पञ्चम व सम्वादी ऋषभ है। सन्ध्याकाल के समय इस राग को गाने का व्यवहार है। मं रे ग, व रें नि ध प इन स्वरसमुदायों का उपयोग रागवाचक है। पूर्वी राग से इस राग का स्वरूप मिलता-जुलता है, किन्तु एक तीव्र मध्यम के प्रयोग से भिन्नता बताई जा सकती है।

आरोह —नि रे ग मं प, ध प, नि सां।

अवरोहः—रें नि ध प, मं ग, मं रे ग, रे सा।

पकड —नि रे ग, मं प, ध प, मं ग, मं, रे ग, ध, मं ग, रे सा।

स्थाई का स्वरूप—नि रे सा, रे नि ध प, ध प, मं ध ध प, प सा, नि रे सा, ग, रे सा, ग मं प, मं ग, मं रे, ग, मं ग रे सा। नि रे ग रे सा, मं ग रे सा प, मं ग, मं रे, ग, नि रे ग मं ध मं ग, मं रे ग, रे सा। प, ध प, नि ध प, मं ध नि, रें नि ध प, मं ध नि ध प, ध प, मं ग, मं रे ग, ध मं ग, मं ग रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मं ध प, सां, रें सां, नि रें ग रें सां, रें नि ध प, मं ध नि, ध प, नि रें ग रें सा, मं रें ग, मं ग, रें सा, नि रें नि ध प, मं ध नि, ध प, मं ग, मं रे ग, मं ग रे सा।

राग—पूरियाधनाश्री
(मसीतखानी गत)
त्रिताल मात्रा १६
X २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई— पप | मं गग मं ध
दिर | दा दिर दा रा
रें नि ध पमं | ध मंमं गरे ग | ग रे सा सासा | नि रेंरे ग रे
दा दा रा दिर | दा दिर दिर दा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
मं रेरे ग रे | मं पप ध मं | ग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा
अन्तरा— मंमं | ग गग मं ध
दिर | दा दिर दा रा
सां सां सां सांसां | रें सांसां निरें निध | नि ध प गगं | रें सांसां नि ध
दा दा रा दिर | दा दिर दिर दिर | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा
रें निनि ध प | ध मंमं ग रे | ग रे सा
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा

२८४
सितार-दर्पण
राग—पूरियाधनाश्री
(रजाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
मं । ग मं रे ग
दा । दा रा दा रा
ध — प — । मं रेरे गग मंमं । ग— गरे —रे मंमं । ग रेरे नि सा
दा — रा — । दा दिर दिर दिर । दा— रदा —र दिर । दा दिर दा रा
नि रेरे रेरे ग । — मं प प । मं धध मंमं निनि । ध— धप —प मं
दा दिर दिर दा । — रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा— रदा —र दा
नि ध प ध । प मं धध पप । मं— मंग —ग मं । ग मं रे ग
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा— रदा —र दा । दा रा दा रा
अन्तरा—
ग मंमं मंमं ध । — नि सा सा । नि सासा निनि रेरे । सा— सानि —नि ध
दा दिर दिर दा । — रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा— रदा —र दा
रें — नि ध । — प धध पप । मं— मंग —ग मं । ग मं रे ग
दा — रा दा । — रा दिर दिर । दा— रदा —र दा । दा रा दा रा

राग ललित

मारवा मेल जन्य इस राग में पंचम वर्जित होने से इसकी जाति षाडव-षाडव है। वादी स्वर शुद्ध मध्यम व सम्वादी षड्ज है। इस राग में दोनों मध्यम लगते हैं। ध में ध में म इस प्रकार के प्रयोग अक्सर दृष्टिमान होते हैं। गायन-समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। नि़ रे॒ ग म, में ग ग यह स्वर-समुदाय राग वाचक है। कोई-कोई ग्रन्थकार कोमल धैवत युक्त ललित राग का निर्देश करते हैं। यह एक उत्तरांग प्रधान राग है।

आरोह—नि रे॒ ग म, में म ग, में ध सां।

अवरोह.- रें॒ नि ध, में ध में म ग, रे॒, सा।

पकड़.—नि़ रे॒ ग म, ध में ध में म, ग।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे॒ सा, ग, म, ग म, में म, ग, में ध में म, ग म, में म ग, में ग रे॒ सा, नि रे॒ ग म। ध़ नि़ सा, रे॒ सा, ग रे॒, ग म, में म, ध में म ग, में ग रे॒ सा, नि़ ध़ नि़, में ध में म, ग, मंध, सा। सा ग म, ध में म, नि ध, में ध, में म, रे॒ ग, में ग रे॒ सा।

अन्तरा का स्वरूप—में ग, में ध, सां, रें॒ सां, नि रें॒ सां ग रे॒ सा, नि रें॒ नि ध, में ध, में म, में ध सा। नि ध, में ध में म, ग, में ग रे॒ सा।

राग-ललित
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सासा । नि रेरे ग मं
दिर । दा दिर दा रा
मं म ग मंमं । ध मंमं म ग । ग रे सा सासा । नि निनि ध मं
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
मं धध नि रें । नि रेंरें ग मं ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा दा दा रा
अन्तरा—
मंमं । म गग मं धं
दिर । दा दिर दा रा
सां सां सां सांसां । रें निनि ध मं । नि ध मं गगं । रें सांसां नि ध
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
रें निनि ध मं । नि धध मं म । ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा

राग–ललित

(रज़ाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| | | म | ग नि – रे
| | | दा | रा दा – रा

रे – म – | ग ग मंमं मम | ग– गरे –रे धध | मं मम ग मं
रा – रा – | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा दिर दा रा

ग मंमं मंमं ध | – ध सां सां | नि रेंरें निनि धध | मं– मंमं –मं म
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा

ध मं म म | म ग मंमं मंमं | ग– गरे –रे मं | ग नि – रे
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | रा दा – रा

अन्तरा—

ग मंमं मंमं प | — ध सां सां | रें सांसां निनि रेंरें | सां— सांनि —नि ध

दा दिर दिर दा | — रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा— रदा —र दा

ग — ग रे | — सां रेंरें रेंरें | सां— सांनि —नि सांसां | नि— निध —ध मं

दा — रा दा | — रा दिर दिर | दा— रदा —र दिर | दा— रदा —र दा

प मं म म | म ग गग मग | ग— गरे —रे मं | ग नि — रे

दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा— रदा —र दा | रा दा — रा

मं |

दा |

राग गौड़मल्हार

राग गौडमल्हार विभिन्न मतानुसार काफी व खमाज थाट का माना जाता है। गांधार स्वर के सम्बन्ध मे मतान्तर होने के कारण ये दो प्रकार प्रचार मे आये हैं। खासकर ख्यालिये अपनी गायकी मे शुद्ध गांधार तथा ध्रुपदिये कोमल गांधार का प्रयोग करते हैं। इस राग की जाति सम्पूर्ण मानी गई है। वादी-सम्वादी क्रमशः मध्यम व षड्ज है। यह राग मौसमी है और इसे वर्षा ऋतु मे गाने का व्यवहार है।

आरोहः—सा रे म, प, ध सां।

अवरोहः—सां नि प, म प ग म, रे सा।

पकड़:—रे ग रे म ग रे सा, प म प ध सां, ध प म।

स्थाई का स्वरूप—सा, रे ग, म, म, रे रे प, ध नि प, ग प,
रे
म ग, रे ग रे सा, सा, रे ग म, ग म। रे रे प, म प, ध ध नि प,
म प ध सां, ध ध नि प, सां, ध प, ध प म ग, रे ग, म, ध प,
रे
म ग, रे ग, सा, रे ग, म। म प, ध नि प, ध नि सां, ध नि प,
ग रे
रें सां, ध नि प, म ग, रे, रे सा। सा, रे ग म, ग म।

अन्तरा का स्वरूप—म, प ध सां, रें सां, ध, नि प, म, प ध नि सां,
सां रें सां, रें गं मं गं रें सां, मं मं रें सां, ध सां, म प सां, ध नि प, म प,
रे रे
ध नि प, ग प म ग, ग रे सा, सा, रे ग म, ग म।

राग—गौड़मल्हार
(मसीतखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

×	२	०	३
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६

स्थाई—

		मम	ग रेग गा रे
		दिर	दा दिर दा रा
म म म गग	म पप म प	म ग रे रेरे	रे पप म प
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
ध सांसां नि प	ग गग म ग	म ग रे	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

अन्तरा—

		पप	म पप म प
		दिर	दा दिर दा रा
ध ध सां सांसां	रें सांसां सां ध	नि प प मंमं	रें सांसां नि प
दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा
रे पप ध सां	सां धध नि प	म ग रे	
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा	

राग—गौड़मल्हार

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

X				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

स्थाई—

								रे	गग	रेरे	मम	ग–	गरे	–रे	सा
								दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
रे	गग	रे	ग	म	पप	म	ग	रे	रेरे	रेरे	प	–	प	म	प
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा
ध	सांसां	धध	पप	म–	पम	–म	ग								
दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा								

अन्तरा—

								प	पप	पप	ध	–	ध	सां	सां
								दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा

सां सांसां सांसां सांसां | सां– सांरें –रें सां | सां निनि धध सां | – सां सां सां
दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दिर दा | – रा दा रा

सां रेंरें सांसां निनि | ध– धनि –नि प | रें रेंरें रेंरें प | – प म प
दा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दिर दा | – रा दा रा

प सांसां धध पप | म– पम –म ग |
दा दिर दिर दारा | दा– रदा –र दा |

राग अडाणा

यह राग आसावरी थाट से निकला है। तीव्र धैवत का प्रयोग स्वीकारते हुए कुछ ग्रन्थकार इसे काफी मेल-जन्य भी मानते हैं।

अडाणा राग एक कानडा प्रकार का राग है। आरोह मे गाधार तथा अवरोह मे धैवत वर्ज्य होने के कारण इस राग की जाति षाडव-षाडव बताई जाती है। अवरोह मे वक्र गाधार का उपयोग है। आरोह मे गाधार स्वर नही लेने से यह सारग-अग होता है। और इस राग का चलन सामान्यतः सारग अग से ही होता है। इसी कारण गाधार तथा धैवत स्वर दुर्बल होते हैं। मध्य व तार स्थानो मे इस राग का विस्तार अधिक होता है। इस कृत्य से दरबारीकानडा राग से भिन्नता होती है।

अडाणा राग का वादी तार-षड्ज व सम्वादी पंचम है। गायन-समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना गया है।

आरोह—सा रे म प, ध नि सां।

अवरोहः—सा ध नि प म प, ग म, रे सा।

पकड़—सा, ध, नि सां, ध, नि प म प, ग म रे सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, रे म प, ध, सा, ध, नि प, मं प, सां, नि प, म प ग, ग म, रे सा, रे म प, ध, नि रें सा, नि सा, नि प, म प ग, ग म रे, सा। सा, ग म रे सा, नि प, म प, ग म, रे सा, सा ध, नि प, म प, ग, म, रे सा, नि सा, रे म, प, ध, नि, रें सा, नि प, ग, म रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प, ध, नि सा, नि रें, सां, ध नि प, म प नि सां गं, मं रें सा, नि सा, रें ध, नि प, म म, नि प, सां, नि प ग, ग म प ग, ग म, रे सा।

राग–अठाणा
(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

	×	२	०	३
	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
स्थाई—			रेंरें	सा निप म प
			दिर	दा दिर दा रा
	सा धनि प पप	म पप म प	गम रे सा सासा	सा रेंरें म प
	दा दिर दा दिर	दा दिर दा रा	दिर दा रा दिर	दा दिर दा रा
	ध धध नि सां	रें सांसां नि सां	सांरें निसां निप	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दिर दिर	
अन्तरा—			मम	म पप ध नि
			दिर	दा दिर दा रा
	सां सां सां सांसां	रें सांसां नि सां	रें धनि प मम	रें सांसां नि सां
	दा दा रा दिर	दा दिर दा रा	दा दिर दा दिर	दा दिर दा रा
	म पप ध नि	रें सांसां नि सां	सांध नि प	
	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दिर दा रा	

राग—अड़ाणा

(रजाख़ानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३

१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

		नि	म प – प
		दा	रा दा – रा
सा – धु –	नि प म प	गु गुगु गुगु मम	रे– रेरे –रे सा
दा – रा –	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
नि सासा सासा रे	– ग म प	ध धुधु निनि सासा	रें– रेंनि –नि सा
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
रें सा नि सा	नि प रेंरें रेंरें	सा– सानि –नि नि	म प – ध
दा रा दा रा	दा रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	रा दा – रा

अन्तरा—

म पप पप धु	– धु रें सा	नि सांसां निनि रेंरें	सा– साधु –नि प
दा दिर दिर दा	– रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दा– रदा –र दा
गुं – गुं म	रें सा रेंरें रेंरें	सा– सानि –नि नि	
दा – दा रा	दा रा दिर दिर	दा– रदा –र दा	

राग दरबारीकानड़ा

यह राग आसावरी थाट से निकलता है। अवरोह में धैवत वर्ज्य होने से इस राग की जाति सम्पूर्ण-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर ऋषभ व सम्वादी स्वर पंचम है। इस राग का चलन सामान्यतः मन्द्र व मध्य स्थान में अधिकतर है। गान-समय मध्य रात्रि है। इस राग को गम्भीर प्रकृति का माना गया है। गान्धार स्वर का आन्दोलन इस राग में वैशिष्ट्य पूर्ण है। निषाद पंचम की स्वर-संगति रंजकता बढ़ाती है।

आरोह—नि सा, रे ग, रे सा, म प, ध, नि सां।

अवरोह—सां, ध, नि, प, म प, ग, म, रे, सा।

पकड़—ग, रे रे, सा, ध, नि सा, रे, सा।

स्थाई का स्वरूप—सा, नि सा, रे सा, ध ध, नि प, म प ध, नि, सा, नि रे, सा, रे ध, म प ध, सा ध रे रे सा ध, नि सा, म प, ध, सा ध, नि प, रे, सा। सा र, रे ग, र सा रे रे सा, रे ग, म प ग, म रे सा, ध नि रे, सा। म प, नि नि प, म प ग म, प ग म, रे सा, म प ध, ध नि प, म प ध, नि सा, ध नि प, म प, नि ग, म, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—मा रे म प ध, नि प, म प, ध, नि प, सा ध, नि प, म प ध, नि प, सा ध, नि प, रें सा, मा ध, नि प, म म प, ध, नि सा, म प नि सा रें, रे ग, रे र सा, गं, म रें, सा, प, ग, म रें, ध नि रें, सा, नि प, म प, ग, म रे सा।

राग—दरबारी
(मसीतखानी गत)

राग–दरबारी

(रजाखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६

स्थाई—

| | | | रे । सा ध़ु नि़ प़ |
| | | | दा । रा दा रा दा |

सा – सा सा । नि़ सासा नि़ सा । नि़ सासा नि़नि़ रेरे । सा– साध़ु –नि़ प़प़
दा – दा रा । दा दिर दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दिर

म पप पप ध़ु । – नि़ सा सा । रे रेरे रेरे रेरे । ग़– ग़ग़ –ग़ ग़
दा दिर दिर दा । – रा· दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा

म म रे रे । रे सा रेरे रेरे । रे– रेसा –सा रे । सा ध़ु नि़ प़
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दा । दा रा दा रा

अन्तरा—

म	पप	पप	ध	|	–	नि	सा	सा	|	नि	सासा	निनि	रेंरें	|	सा–	साध	–नि	प
दा	दिर	दिर	दा	|	–	रा	दा	रा	|	दा	दिर	दिर	दिर	|	दा–	रदा	–र	दा
ग	–	ग	म	|	रें	सा	रेंरें	रेंरें	|	सा–	सानि	–नि	सासा	|	नि–	निनि	–नि	प
दा	–	दा	रा	|	दा	रा	दिर	दिर	|	दा–	रदा	–र	दिर	|	दा–	रदा	–र	दा
ग	–	ग	ग	|	रे	सा	रेरे	रेरे	|	रे–	रेसा	–सा	रे	|	सा	ध	नि	प
दा	–	दा	रा	|	दा	रा	दिर	दिर	|	दा–	रदा	–र	दा	|	दा	रा	दा	रा

सा |

दा |

राग मियाँमल्हार

यह राग काफी थाट में निकलता है। इस राग के अवरोह में धैवत वर्ज्य होने से जाति सम्पूर्ण-षाडव है। वादी-सम्वादी के बारे में मतान्तर हैं—कोई सा प तो कोई म सा को क्रमशः वादी-सम्वादी मानते हैं। यह मौसमी राग है तथा वर्षा ऋतु में गाया जाता है। गायन-समय मध्यरात्रि का है।

इस राग में दोनों निषाद लिये जाते हैं। दोनों निषाद एक के बाद दूसरा—इस प्रकार लेने से भी राग हानि नहीं होती। विलम्बित लय व मन्द्र सप्तक में यह राग अधिक खिलता है।

आरोह—रे म रे सा, म रे, प, नि ध, नि सां।

अवरोह—सां नि प, म प, ग म, रे सा।

पकड—रे म रे सा, नि प म प, नि ध, नि सा, प, ग म रे सा।

स्थाई का स्वरूप—म प, नि, नि सा, रे सा, नि नि, नि, सा, नि ध, नि प म, प नि ध, नि सा। सा, रे प, नि ग म, ग म, प, ग म, रे सा, म प, नि नि ध नि सा। रे रे प, म रे प, ग, ग म, रे सा, म प, नि ध, नि प, म प, ग ग म, रे सा।

अन्तरा का स्वरूप—म प, नि ध, नि सां, सां रें सां, नि ध, नि, नि ध, नि सां, सां रें नि सां, नि ध, नि, म प, नि, नि, सा, गं मं रें सां, नि नि

सा

ध, नि सां, रें प, ग म रे सा, नि नि ध, नि सां, नि प म प, ग ग म, रे सा।

राग–मियाँमल्हार
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
मम । रे निसा धनि पप
दिर । दा दिर दिर दिर
नि धध निसा ध । नि सासा रे सा । म रे सा सासा । सा निसा धनि प
दा दिर दिर दा । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दिर दा
म पप ध नि । सा रेरे ग ग । म रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा
अन्तरा—
मम । म पप निध नि
दिर । दा दिर दिर दा
सा सा सा सांसां । रें सांसां नि सां । ध नि प मंमं । रें सांसां नि प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
रे पप म प । धनिसा निसा नि प । गम रे सा
दा दिर दा रा । दिरदा दिर दा रा । दिर दा रा

१०२
सितार-दर्पण
राग—मियाँमल्हार
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ | १३ १४ १५ १६
स्थाई— | | रे मम रेरे सासा | नि- निध -ध मप
दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दिर
नि - ध नि | सा रे नि सा | - नि ध नि | सा रेरे नि सा
दा - दा रा | दा रा दा रा | - दा दा रा | दा दिर दा रा
रे पप गग मम | रे- रेनि -नि सा | रे मम रेरे सासा | नि- निध -ध मप
दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दिर
अन्तरा—
म रेरे रेरे प | - प नि ध | नि सासा निनि सासा | रें- रेंनि -नि सा
दा दिर दिर दा | - रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा
नि धध धध सा | - सा रें सा | सा रेंरें निनि सासा | नि- निध नि प
दा दिर दिर दा | - रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दा
रे प - ग - म रे सा | रे मम रेरे सासा | नि- निध -ध मप
दा रा - दा - रा दा रा | दा दिर दिर दिर | दा- रदा -र दिर

राग बहार

काफी मेल जन्य यह राग यावनिक प्रकार का माना गया है। इस राग में आरोह में शुद्ध निषाद व अवरोह में कोमल निषाद लिया जाता है। आरोह में ऋषभ तथा अवरोह में धैवत वर्ज्य होने से जाति षाडव षाडव है। वादी मध्यम व सम्वादी षड्ज है। इस मौसमी राग को वसन्त ऋतु में, मध्य रात्रि के समय गाने का व्यवहार है।

मध्यम तथा धैवत की स्वरसंगति राग को प्रभावित करती है। अनेक रागों के साथ संयोग से दूसरे राग-स्वरूप निकल पाते हैं—जैसे कि बसंत बहार, भैरव-बहार, अडाणा-बहार इत्यादि। नि ध प, म प ग म, ध, नि सा, यह एक राग-वाचक भाग है।

आरोह—नि सा, ग म, प ग म, ध, नि सा।

अवरोह- सा, नि प, म प, ग म, रे सा।

पकड—म प ग म, ध, नि सा।

स्थाई-स्वरूप—नि सा, म, प, ग म, (नि), प, म प, ग म, ध नि सा, प नि प, म प, ग, म, ध, नि प, म प, ग म, रे, सा। प, ग म, नि ध, म, प ग म, नि ध, नि सा, रें नि सा, नि प, म प ग, ग म, ग म रे सा, म रे सा, प ग, म रे सा, नि ध, म प ग, ग म रे सा।

अन्तरा-स्वरूप—ग म, नि प, ग मं, ध नि सा, नि प ग, म, नि ध, नि सा। नि ध नि प म प, ग म, प, ग म, रें सा, ग, म ध, नि सा, रें सा, गं म रें सा, नि प, म ग, म, नि ध, नि सा, नि प, म प, ग, म रे सा। म ध, नि सा, रें सा, गं, म प, गं, म रें सा, नि, प, म, प ग, नि ध, नि सा, नि प, ग म, रे सा।

राग-बहार

(मसीतखानी गत)

त्रिताल मात्रा १६

सा मम गु म | प निनि धा सा | सारें निसा निप |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दिर दिर दिर |

अन्तरा—

मम | गु मम गु म
दिर | दा दिर दा रा

ध नि सां सांसां | रें सांसां नि सां | नि प प गुंम | रें सांसां नि प
दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा दिर | दा दिर दा रा

गु मरें सा नि | रें सासा नि सा | सां नि प |
दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | दा दा रा |

राग–बहार
(रज़ाखानी गत)

त्रिताल — मात्रा १६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
स्थाई—						नि	सा	नि	पप	पप	पप	म	पप	ग	म
						दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	–	ध	नि	सा	रेंरें	नि	सा	रें	रेंरें	रेंरें	रेंरें	गं–	मरें	–रें	सा
दा	–	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
रें	सा	नि	सा	नि	प	नि	सा	नि	पप	पप	पप	म	पप	ग	म
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
अन्तरा—															
ग	मम	मम	ध	–	नि	सा	सा	नि	सांसां	निनि	रेंरें	सां–	सांनि	–नि	प
दा	दिर	दिर	दा	–	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दा
गं	–	गं	म	रें	सां	रेंरें	रेंरें	सां	सांनि	–नि	सांसां	नि–	निनि	–नि	प
दा	–	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा–	रदा	–र	दिर	दा–	रदा	–र	दा
रें	सां	नि	सां	नि	प										
दा	रा	दा	रा	दा	रा										

राग मुलतानी

तोडी मेल जन्य इस राग में आरोह में ऋषभ व धैवत वर्ज्य होने से जाति औडुव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर पंचम व संवादी स्वर षड्ज है। गान-समय दिन का चतुर्थ प्रहर है। तोडी राग के आभास से बचाने के लिये इस राग में रे, ग ध प, इन स्वरों का प्रयोग *कौशल्यपूर्ण* होता है। प ग संगति रतिदायक है।

मुलतानी राग परमेल प्रवेशक माना गया है। काफी थाट के रागों से सधिप्रकाश रागों के बीच यह एक परमेल प्रवेशक राग है। षड्ज, पंचम, निषाद इन स्वरों की विश्रांति बढ़ेलाव के समय होती है।

आरोह —नि सा, ग मं प नि सा।

अवरोह —सा नि ध प, मं ग, रे सा।

पकड़ —नि सा, मं ग, प ग, रे सा।

स्थाई का स्वरूप—नि सा, ग रे सा, नि ध प, मं प, नि ध प, ग मं, प नि, सा, नि सा, मं ग, मं प, ध प, प ग, रे सा, नि सा, ग मं प, ध प, मं ग, ग मं प नि ध प, मं प ग, नि सा, ग मं प,
मं
ग रे सा। ग मं प नि, ध प, मं प नि सां। -

अन्तरा का स्वरूप—ग मं प नि, सां नि सां गं, सां गं रें सा, नि सां ग मं प, गं, रें गं, रें सा, सा गं रें सा, नि सां, नि ध प, ग मं प नि, सा, रें सां, नि ध प, ग मं प नि सा नि ध प, मं प ग, रे सा।

राग—मुलतानी
(मसीतखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
सासा । नि सासा ग मं
दिर । दा दिर दा रा
प प प पप । मं गग मं प । ग रे सा सासा । नि निनि ध प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
मं पप नि सा । सा गग मं प । ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा
अन्तरा—
पप मं पप ग मं
दिर । दा दिर दा रा
प नि सां निनि । नि निनि सा गं । रें सा नि रेंरें । सा निनि ध प
दा दा रा दिर । दा दिर दा रा । दा दा रा दिर । दा दिर दा रा
ग मंमं प नि । सां निनि ध प । ग रे सा
दा दिर दा रा । दा दिर दा रा । दा दा रा

३०८
सितार-दर्पण
राग–मुलतानी
(रज़ाखानी गत)
त्रिताल
मात्रा १६
× २ ० ३
१ २ ३ ४ । ५ ६ ७ ८ । ९ १० ११ १२ । १३ १४ १५ १६
स्थाई—
नि सासा ग मं
दा दिर दा रा
प – प मं । ग मंमं पप मंमं । ग– गरे –रे सा । नि सासा ग मं
दा – दा रा । दा दिर दिर दिर । दा–रदा –र दा । दा दिर दा रा
प – प ध । मं प ग मं । प निनि निनि सांसां । नि– निध –ध प
दा – दा रा । दा रा दा रा । दा दिर दिर दिर । दा– रदा –र दा
नि ध प ध । प मं पप पप । ग– गरे –रे सा । नि सासा ग मं
दा रा दा रा । दा रा दिर दिर । दा– रदा –र दा । दा दिर दा रा

अन्तरा—
प गग मम प | – नि सां सां | रिं सांसां निनि रेंरें | सां– सांनि –नि धुरु
दा दिर दिर दा | – रा दा रा | रा दिर दिर दिर | दा– रदा –र दिर
गं – गं रें | – गं रेंरें रेंरें | सां– सांनि –नि सांसां | नि– निधु –धु प
दा – रा दा | – रा दिर दिर | दा– रदा –र दिर | दा– रदा –र दा
नि धु प धु | प मं पप पप | ग– गरे –रे सा | नि सासा ग मं
दा रा दा रा | दा रा दिर दिर | दा– रदा –र दा | दा दिर दा रा
प |
दा |

परिशिष्ट

तोड़ों के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

सितार की गतो के साथ तोडे जिस लय मे सामान्यत बजाये जाते हैं, उससे दुगुनी लय में उन्हे बजाने का कार्य जितना कठिन लगता है, वास्तव मे इतना कठिन नही है। इस पुस्तक म दिये हुए तोडे मसीतखानी गत के साथ बजाते हुए गत की लय से दुगुनी लय मे बजते हैं और विशेष सूचना के अनुसार उन्हे रजाखानी गत के साथ बजात समय गत की लय जितनी ही लय मे बजते हैं।

मसीतखानी गत के साथ उन तोडो को चौगुन की लय मे बजाना चाहे तो कैसे बजाया जाय, यह बात यहाँ पर स्पष्ट कर रहे हैं।

मसीतखानी गतो के साथ दिए हुए तोडे गत की लय से दुगुनी लय मे हैं। उदाहरणार्थ—राग यमनकल्याण की मसीतखानी गत का प्रथम तोडा देखें। यह तोडा ऐसे बताया गया है —

० मंधध निध निरे गग	३ रे सासा नि सा	× रे

इस तोडे को गत की लय समान लय मे बजाना चाहे तो तोडे का स्वरूप मंधध निध निरे इस प्रकार का न रहेगा परन्तु मं धध नि ध नि रे इस प्रकार होगा।

चौगुन की लय मे यह तोडा इस प्रकार बजेगा —

३ मंधधनिध निरेगग रेसासा निसा	× रे

मतलब कि नवीं मात्रा से शुरू होने वाला यह तोड़ा चौगुन में बजाते समय तेरहवीं मात्रा से शुरू होगा। यमनकल्याण राग के १ से ५ तोड़े, जो तीन-तीन मात्रा के हैं, चौगुन की लय में बजाते समय तेरहवीं मात्रा से शुरू होंगे।

यमनकल्याण राग का छठा तोड़ा चौगुन की लय में बजाते समय ग्यारहवीं मात्रा से शुरू होगा। यह तोड़ा इस प्रकार बजेगा:—

११	१२	२ १३	१४	१५	१६	× १
निरेरेगरे	निधनिरे	निरेरेगमं	गरेगग	रेसासा	निसा	रे

सात से दस तक तोड़े, जो सात-सात मात्रा के हैं, चौगुन की लय में (मसीतखानी गत के साथ) बजाते समय ग्यारहवीं मात्रा से शुरू होंगे।

यमनकल्याण के ११ से १४ तोड़े चौगुन में बजाते समय नवीं मात्रा से शुरू होंगे। उदाहरणार्थ ग्यारहवां तोड़ा देखें:—

०
मंधधनिध निरेसासा निरेरेगमं गरेगमं | ३
पधधपमं गरेगग रेसासा निसा

×
रे |

पन्द्रहवां तोड़ा चौगुन मे बजाते समय पहली मात्रा से ही शुरू होगा। यह तोड़ा इस प्रकार बजेगा —

×
निरेरेगरे गगरेग रेगगमंग मंमंगमं | २
गमंमंपमं पपमंप निरेरेगरे ग–रेगग

०				३			
मंगमं-	गमंमंधप	नि--नि	-रेंगरें	सांनिनिधप	मंगरेसा	निसारेनि	सारेनिग

×		
रे	रे	ग

इस पुस्तक मे दिए हुए तोडो को मसीतखानी गत के साथ चौगुन मे बजाना चाहें तो कौनसी मात्रा से उन्हे शुरू किया जाये, यह स्थान सरल गणित से प्राप्त हो सकता है। यह रीत देखें:—

(१) जितना भाग हम असल से दुगुनी लय मे बजाना चाहते हैं, उसकी असल लय मे कितनी मात्राएँ हैं, यह गिनलें।

(२) प्राप्त सख्या को आधी करें।

(३) फलस्वरूप संख्या को ताल की पूरी मात्राओ की सख्या से कम करें।

(४) जो उत्तर आये, ठीक उस मात्रा तक गत का भाग, या तोडा असली लय मे बजाया जाये, उसके बाद तुरत आने वाली मात्रा से तोडा असली लय से दुगुनी लय मे शुरू करके जितने भाग के लिये यह गणित किया है, इतना भाग पूरा होने पर असली लय से मिल जायें।

उपरोक्त विधि का प्रात्यक्षिक कर देखें। यमनकल्याण राग की मसीतखानी गत के साथ दिए हुए १ से ५ तोडे ३ मात्रा के, ६ से १० तोडे ७ मात्रा के और ११ से १४ तोडे ११ मात्रा के हैं।

हम इन्हे चौगुन में बजाकर सम पर असली लय से मिलना चाहते हैं। इसका मतलब यह है कि तोडे के साथ उनके पश्चात् १६ वी मात्रा तक आने

वाला गत का भाग भी असल लय से दुगुनी लय मे बजेगा। अर्थात् चौगुन की लय में बजने वाला भाग असली लय में १ से ५ तोड़ों में ८ मात्रा का, ६ से १० तोड़ो में १२ मात्रा का और ११ से १४ तोड़ों में १६ मात्रा का रहेगा।

इन संख्याओं को आधी करने पर उत्तर इस प्रकार पाये जायेंगे —

१ से ५ तोड़े ४ मात्रा, ६ से १० तोड़े ६ मात्रा और ११ से १४ तोड़े ८ मात्रा में (चौगुन की लय मे बजाते समय) बजेंगे। और इन तोड़ो को शुरू करने के स्थान प्राप्त करने के लिये उपरोक्त संख्याओं को १६ (ताल की पूरी मात्राओं की संख्या) से कम करें। उत्तर इस प्रकार होंगे.—

१ से ५ तोड़ों के लिए—१६–४=१२

६ से १० तोड़ों के लिए—१६–६=१०

११ से १४ तोड़ो के लिए—१६–८=८

इसका मतलब यह है कि १ से ५ तोड़ो को चौगुन मे बजाते समय १२ मात्रा तक का भाग असल लय मे बजाकर १३वी मात्रा से चौगुन में बजाना आरम्भ करके सम पर असल लय से मिल जाना होगा। इसी प्रकार ६ से १० तोड़ों को चौगुन में बजाते समय ११ वी मात्रा से और ११ से १४ तोड़ो को चौगुन मे बजाते समय ९ वी मात्रा से शुरू किया जाए। प्रकरण के आरम्भ मे ही चौगुन में बजने वाले तोड़ो को स्वरलिपिबद्ध करके बताया गया है।

१५ वाँ तोड़ा ३२ मात्रा का है। उसे चौगुन में बजाकर सम पर असल लय से मिलना है तो यह तोड़ा सम से ही शुरू किया जायेगा।

(३२÷२=१६; १६-१६=०; ०+१=१ ली मात्रा या सम)

३२ मात्रा से अधिक मात्राओं के तोडो को चौगुन मे बजाते समय कहाँ से (कौनसी मात्रा से) शुरू किया जाय, वह स्थान यहाँ पर बताई गई गणित पद्धति मे किंचित् मात्र फरक करने पर पाया जा सकेगा।

इस मार्गदर्शन का अभ्यास करने पर विद्यार्थीवर्ग को एक विशेष लाभ यह रहेगा कि किसी भी तोडे को किसी भी ताल मे मनचाही लय मे बजाकर गत के मुखडे से या समसे असल लय मे मिल जाना आसान हो जाएगा। केवल यहाँ पर निर्दिष्ट रीति के अनुसार भिन्न-भिन्न ताल और लय के हिसाब से मात्राओं का सम्बन्ध समझ लेना, यही आवश्यक है।

दुगुनी लय मे मसीतखानी गतो को मुखडा केवल एक बार बजाकर या तीन बार बजाकर सम से असल लय मे मिल जाना है, तो यह बात ऐसी ही गणित-पद्धति की सहायता से आसान बन सकती है।

राग यमनकल्याण की मसीतखानी गत गग रे सासा—इस मुखडे से

दुगुनी लय में शुरू करके अन्त मे यही मुखडा एक बार बजाकर सम पर असल लय से मिलना है, तो यह गत दुगुनी लय मे ५½ मात्रा के बाद शुरू होगी। गग रे सासा नि सा रे इतना भाग तीन बार बजाकर रे पर सम आने ही

असल लय से मिल जाना है, तो १२½ मात्रा के बाद तुरत ही गत को दुगुनी लय मे बजाना शुरू करना होगा।

अल्हैयाबिलावल राग की मसीतखानी गत को मुखडे से शुरू करके पूरी गत बजाने के बाद एक ही बार मुखडा बजाकर सम पर असल लय से मिलना है तो यह गत दुगुनी लय मे १३½ मात्रा के बाद तुरन्त ही शुरू

करनी होगी। मुखड़ा तीन बार बजाकर सम पर असल लय से मिलता है तो ७३ मात्रा के बाद प्रारम्भ करना होगा।

इन स्थानों को इस रीत से पाया जा सकता है :—

(१) जितना भाग दुगुनी लय में बजाना चाहते हैं, उसकी मात्रायें गिनलें।

(२) प्राप्त संख्या को आधी करें।

(३) उत्तर रूप संख्या को ३२ में से कमी करें। उत्तर रूप संख्या ३२ से अधिक हो तो ४८ से कमी करें। जो उत्तर आए, ठीक इतनी संख्या की मात्रा के बाद दुगुनी लय में बजाना आरम्भ करें।

(१) राग यमन कल्याण की मसीतखानी गत पूरी बजाकर अन्त में एक बार मुखड़ा बजाकर सम पर असल लय से मिलना है। इतना भाग असल लय में ४८+५=५३ मात्रा में बजता है।

५३ को आधा करने से उत्तर आया २६३, उसे ३२ से कमी करने पर फलस्वरूप संख्या ५३ आयेगी। अर्थात् ५३ मात्रा के बाद आरम्भ करना होगा।

(२) मुखड़े का भाग तीन बार बजाकर सम पर असल लय से मिलना है। इतना भाग असल लय में ४८+१७=६५ मात्रा में बजता है।

६५ को आधा करने से उत्तर आया ३२३, उसे ४८ से कमी करने पर फलस्वरूप संख्या १५३ आयेगी, अर्थात् १५३ मात्रा के बाद आरम्भ करना होगा।

अल्हैया बिलावल की गत के साथ अन्त में एक बार मुखड़ा बजाकर सम पर असल लय से मिलना है। तो यह भाग की असल लय में ६६ मात्रायें हैं, उसे आधा करके फलस्वरूप संख्या को ४८ से कमी करने पर उत्तर आया १३३, अर्थात् १३३ मात्रा के बाद आरम्भ करना होगा। और अगर गत के

अन्त में मुखड़ा तीन बार बजाना है, (रेरे ग पप निध नि सां, रेरे ग पप निध नि सां, रेरे ग पप निध नि), तो असल लय में उसकी मात्राएँ १७ हैं और गत की मात्राएँ ६४ हैं, दोनो मिलकर ८१ मात्रायें हुई । ८१÷२= ४०½; ४८–४०½=७½, मतलब कि ७½ मात्रा के बाद दुगुनी लय में बजाना आरम्भ करना होगा । अगर तीनताल के स्थान पर अन्य कोई ताल है, तो ३२ और ४८ के स्थान पर उस ताल की मात्रा संख्या को दुगुनी या तीनगुनी करके जो संख्या आये, वह संख्या रखनी चाहिए । यह हिसाब अभ्यास से सरल हो सकता है । इतने विवरण के बाद रजाखानी गतो के साथ तोडो को असल लय से दुगुनी लय मे बजाने के बारे मे सूचना करना आवश्यक नहीं है । वह कार्य विद्यार्थी वर्गको उपर्युक्त सिद्धान्तों के अनुसार मार्गदर्शन मिलने पर कठिन नही रहेगा ।

इस पुस्तक मे मसीतखानी गतो के साथ दिये गये तोडो को ही रजाखानी गत के साथ बजाने की विधि स्पष्ट की गई है । और वह तोडे भी प्राथमिक स्वरूप के ही हैं । फिर भी विद्यार्थी वर्ग को दोनों प्रकार की गतों के लिये भिन्न-भिन्न तोडे न मिलने पर इस पुस्तक मे किये गये मार्गदर्शन के अनुसार दोनो प्रकार की गतो मे वही तोडे बजाने की सरलता प्राप्त होती है । इस मार्गदर्शन के अनुसार केवल मामूली अभ्यास के बाद विद्यार्थी वर्ग नये तोडे बनाकर दोनों प्रकार की गतों मे बजाने की दिशा में प्रगति कर सकता है और भिन्न-भिन्न लयो मे भी उन्हे बजा सकता है । लेखक के इस विधान की सत्यता के बारे मे लेखक को किंचित् मात्र भी सन्देह नही है, लेकिन विद्यार्थी वर्ग को इस मार्गदर्शन के बाद इस कार्य मे प्राप्त होने वाली सफलता ही केवल वह समाधान लेखक को दे सकती है, कि जो इन अल्प से परिश्रम के बाद फलस्वरूप अपेक्षित किया जा सकता है ।

झाला-वादन

सितार वादन के क्षेत्र में 'झाला' एक महत्त्वपूर्ण अंग है। सितार के ६ और ७ नम्बर के तार—जो अनुक्रम से मध्य सप्तक के षड्ज स्वर में और तार सप्तक के षड्ज में मिलाये जाते हैं, उन्हें मिज़राब लगाई हुई दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली से 'रा' के बोल में छेड़ने की विधि को 'झाला' या 'चिकारी' बजाना कहते हैं।

आलाप के समय एक स्वर बजाकर उस स्वर की सांस खत्म होजाने के बाद दूसरा स्वर बजाने के पहले, दोनों स्वरों के बीच जो खाली जगह रहती हैं, उसे भरने के लिए चिकारी के तार बजाये जाते हैं।

आलाप के बाद जोड़ और तत्पश्चात् विविध स्वरों के समूह में मध्य और द्रुतलय में भी झाले का काम बताया जा सकता है। मसीतखानी और रज़ाखानी गतों के साथ फिरत में विविध प्रकार के झाले बजाये जाते हैं।

झाले दो प्रकार के हैं—(१) सीधा झाला (२) उलटा झाला।

(१) सीधा झाला

प्रथम बाज के तार पर षड्ज (मध्यसप्तक) के पर्दे पर बायें हाथ की अंगुली रखकर *दाहिने हाथ की मिज़राब लगाई हुई तर्जनी अंगुली से बाज के* तार पर 'दा' बोल बजाकर बाद में तुरत ही छठे और सातवें चिकारी के तारों पर उसी अंगुली से रारारा बोल बजाने से 'दा रा रा रा' इस प्रकार का सीधा झाला बनेगा। इस प्रकार से 'दा' बोल प्रथम आने से जिसे सीधा झाला कहा जाता है।

झाले में दा रा रा रा के बोल मिज़राब के प्रहार से बजाये जाते हैं, उन सबको एक ही सरखी मात्रा में बजाना चाहिये।

(२) उल्टा झाला

प्रथम बाज के तार पर मध्यम के पर्दे पर 'रा' बोल बजाकर बाद में तुरंत ही चिकारी के तारों पर दा रा रा बोल बजाने से 'रा दा रा रा' इस प्रकार का उलटा झाला बनेगा। इस प्रकार में 'रा' बोल प्रथम आने की वजह से इस प्रकार को उलटा झाला कहा जाता है।

इस प्रकार में भी मिजराब के सब ही बोल एक ही सरखी मात्रा में बजाना चाहिये।

कुछ विद्वान् लोग ऊपर बताये हुये प्रथम प्रकार को उलटा झाला और दूसरे प्रकार को सीधा झाला कहते हैं।

झाले बजाने के और भी कई प्रकार हैं, जैसे—दादारारा, रारादारा, रादादारा, दारारादा, इत्यादि। ये कठिन प्रकार हैं। ऊपर बताये हुये दो प्रकार मुख्य हैं। उनमें से भी प्रथम प्रकार का उपयोग ज्यादा दिखाई देता है।

स्वरलिपि में झाले का चिह्न

झाले को स्वर-लिपि बनाने में भिन्न-भिन्न ग्रन्थकर्ताओं ने भिन्न-भिन्न चिह्नों का उपयोग किया है। इस पुस्तक में चिकारी के 'दा' और 'रा' बोलों का चिह्न एकसा ही रखा है। चिकारी के दोनों बोल एक आड़ी लकीर से बताये जायेंगे। प्रत्येक झाले के नोटेशन के नीचे मिजराब के बोल लिखे गये हैं।

इस पुस्तक में केवल सीधे झाले के कुछ प्रकार बताये हैं, इस वजह से बाज के तार के स्वर 'दा' बोल से बजेंगे, और चिकारी के चिह्न पर रा बोल बजेंगे। उलटे झाले इस पुस्तक में बताये नहीं हैं, किन्तु सीधे झाले के विषय में इतनी विस्तृत जानकारी पाने के बाद उलटे झाले के विषय में पूरा समझ कर अभ्यास करना आसान रहेगा।

सीधा झाला बजाने के कुछ प्रकार:—

(१) सा— रे— ग— म— प— ध— नि— सां— | सां— नि— ध—
दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा | दारा दारा दारा

प— म— ग— रे— सा—
दारा दारा दारा दारा दारा

(२) सा— रे— ग— म— प— ध— नि— सां—
दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा

सां— नि— ध— प— म— ग— रे— सा—
दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा दारारा

(३) सा— — — रे— — — ग— — — म— — — प— — — ध— — —
दारारारा दारारारा दारारारा दारारारा दारारारा दारारारा

नि— — — सां— — — | सां— — — नि— — — ध— — — प— — —
दारारारा दारारारा | दारारारा दारारारा दारारारा दारारारा

म— — — ग— — — रे— — — सा— — —
दारारारा दारारारा दारारारा दारारारा

४) सा – सा – सा – – – रे – रे – रे – – – ग – ग – ग – – –
दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा
म – म – म – – – प – प – प – – – ध – ध – ध – – –
दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा
नि – नि – नि – – – सां – सां – सां – – – | सां – सां – सां – – –
दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा | दारा दारा दारा रारा
नि – नि – नि – – – ध – ध – ध – – – प – प – प – – –
दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा
म – म – म – – – ग – ग – ग – – – रे – रे – रे – –
दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा दारा दारा दारा रारा
सा – सा – सा – – –
दारा दारा दारा रारा

५) सा – सा – – – रे – रे – – – ग – ग – – – म – म – – –
दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारादारारारा दारादारारारा
प – प – – – ध – ध – – – नि – नि – – – सां – सां – – –
दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा

सां – सां – – – नि – नि – – – ध – ध – – – प – प – – –
दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा

म – म – – – ग – ग – – – रे – रे – – – सा – सा – – –
दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा दारा दारा रारा

(६) सा – – सा – – सा – रे – – रे – – रे – ग – – ग – – ग –
दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा

म – – म – – म – प – – प – – प – ध – – ध – – ध –
दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा

नि – – नि – – नि – सां – – सा – – सा – | सां – – सा – – सा –
दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा | दारा रा दारारा दारा

नि – – नि – – नि – ध – – ध – – ध – प – – प – – प –
दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा

म – – म – – म – ग – – ग – – ग – रे – – रे – – रे –
दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा दारा रा दारा रा दारा

सा – – सा – – सा –
दारा रा दारा रा दारा

(७) सा – – सा रे – – रे ग – – ग म – – म प – – प ध – – ध

दारारादा दारारादा दारारादा दारारादा दारारादा दारारादा

नि – – नि सां – – सां | सां – – सां नि – – नि ध – – ध

दारारादा दारारादा | दारारादा दारारादा दारारादा

प – – प म – – म ग – – ग रे – – रे सा – – सा

दारारादा दारारादा दारारादा दारारादा दारारादा

(८) सा – – सा सा – – – रे – – रे रे – – – ग – – ग ग – – –

दारारादादारारारा दारारादादारारारा दारारादादारारारा

म – – म म – – – प – – प प – – – ध – – ध ध – – –

दारारादादारारारा दारारादादारारारा दारारादादारारारा

नि – – नि नि – – – सां – – सां सां – – – | सां – – सां सां – – –

दारा रादा दारा रारा दारारादादारारारा | दारारादादारारारा

नि – – नि नि – – – – ध – – ध ध – – – प – – प प – – –

दारारादादारारारा दारारादादारारारा दारारादादारारारा

म – – म म – – – ग – – ग ग – – – रे – – रे रे – – –

दारारादादारारारा दारारादादारारारा दारारादादारारारा

सा– – सासा– – –

दारारादारारारा

(६) सासा– –रेरे– –
दादारारादारारारा

गग– –मम– –
दादारारादादारारा

पप– –पध– –
दादारारादादारारा

निनि– –सांसां– –
दादारारादादारारा

सांसां– –निनि– –
दादारारादादारारा

धध– –पप– –
दादारारादादारारा

मम– –गग– –
दादारारादादारारा

रेरे– –सासा– –
दादारारादादारारा

(१०) सा– –सा– –सा–सा– – – – – – –
दारारादारारादारादारारारारारारारा

रे– – रे– –रे–
दारारादारारादारा

रे– – – – – – –
दारारारारारारारा

ग– –ग– –ग–ग– – – – – – –
दारारादारारादारादारारारारारारारा

म– –म– –म –म– – – – – – –
दारारादारारादारादारारारारारारारा

प– –प– –प–
दारारादारारादारा

प– – – – – – –
दारारारारारारारा

ध– –ध– –ध–ध– – – – – – –
दारारादारारादारादारारारारारारारा

प– – – – – – –   प– –प– –प–प– – – – – – –

दारारारारारारा   दारादारादारादारारारारारारारा

म– –म– –म–म– – – – – – –   ग– –ग– –ग–

दारादारादारादारारारारारारारा   दारादारादारा

ग– – – – – – –   रे– –रे– –रे–रे– – – – – – –

दारारारारारारा   दारादारादारादारारारारारारारा

सा– –सा– –सा–सा– – – – – – –

दारादारादारादारारारारारारारा

आगे के अभ्यास में, धुन में भाले में बोल (दाराराराः इत्यादि) धीमी लय में प्रत्येक बोल को एक-एक मात्रा के हिसाब से मिजराब प्रहार करके बजाना चाहिए।

उपरोक्त धीमी लय में बोल साफ स्पष्ट और जोरदार माने लगने पर भाले की लय दुगुनी करके भाला बजाने का अभ्यास करना चाहिए। इसका मतलब है कि प्रत्येक बोल एक मात्रा के बदले आधी मात्रा में बजाना।

दुगुनी लय में भाला स्पष्ट और जोरदार आने लगने पर प्रत्येक बोल के लिए ¼ मात्रा लेकर झाला बजाने का अभ्यास करना चाहिए।

आरोह और अवरोह के सब स्वरों पर समान अभ्यास करना आवश्यक है। अधिकतर अभ्यास के पश्चात् ही सुन्दर, स्पष्ट और जोरदार भाला बजाना शक्य हो सकता है।

'भाला' शब्द 'झूला' शब्द से सादृश्य रखता है और उसी प्रकार के आ का सूचन करता है। भाले के 'दारारारा' बोलो में किसी राग के विवि स्वरों को तालबद्ध रीति से बाँधकर बजाने पर झूले जैसा स्वरूप व्यक्त होता है, इसी वजह से प्राचीन विद्वानों ने सितार-वादन के इस अंग को "भाला नाम दिया है।

पूर्वजों से ज्ञान पाकर, सितार-वादन के इस महत्त्वपूर्ण अंग को सितार-वादन के क्षेत्र में अधिकतर प्रचलित करने का श्रेय इटावा-घराने के प्रखर उस्ताद सितारनवाज इमदाद खाँ और उनके सुपुत्र इनायत खाँ को है। उनके पश्चात् सब सितार-वादक इस अंग का आविष्कार कररहे हैं।

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	६	दादिर	दा दिर
२२	१२	निरेरे	निरेरे
२२	१५	निधध निरे गर गग	निधध निरे गरे गग
२५	१४	मं– मंरे –र गग	मं– मंरे –रे गग
३४	१५	प पप पप प	प पप पप ध
३५	१०	मिलाना	मिलनो
४१	१०	ध पप म ग	ध पप म ग
४२	१५	गं रेंरें सांसां नि	गं रेंरें सां नि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७	११	दिर दा रा	दिर दा रा
५२	११	दा दिर	दा दिर
६१	१४	निगासा रेम गुरे मासा	निसासा रेम गुरे सागा
६४	६	– दा रा दा	– रा दा रा
८६	१२	सा निनि धु प	सां निनि धु प
९७	७	गा मम ग	सा मम ग प
११२	१२	निसासा मगु रेसा निसा	निसागा मगु रेगा निगा
११२	१४	गुपप निसा मगु रेसा	मगप निगा मगु रेसा
१२०	९	गमम् धनि सां सानि	गमम धनि सां– सानि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२२	१२	दा दिर दिर दा	दा दिर दिर दा
१३०	६	म- मरे -र नि	म- मरे -रे नि
१३०	७	दा- रदा दा	दा- रदा -र दा
१३५	२	धुपप मप गुरे मग	धुपप मप गुरे मम
१३८	७	नि ध	नि ध
१४१	१४	सां निनि	सां निनि ध प
१४१	१५	दा दिर	दा दिर दा रा
१४३	२	रे मम प नि	रे मम प नि
१५४	१२	प निनि सांसां मंगं	प निनि सांसां गंगं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	५	रेंरें गं सां नि	रेंरें गं सां नि
१५६	६	रेंरें गं सा नि	रेंरें ग मा नि
१६२	२	गमम पधु पधु पम	गमम पधु पधु पम
१६५	१	प मम ग रे	प मम ग रे
१६६	८	पनिनि पम रेंसा रेंम	पनिनि पम रेंगा रेंम
१७०	५	रेंमम पनि पम रेंम	रेंमम पनि 'पम रेंम
१७०	७	मगप निसा रेंसा निसा	मगप. निसां रेंसां निरां
१८०	३	गमम रेंगग सारेंरें निसां	गमम रेंगग सारेंरें निरां
१८२	६	दा – दा दा | – रा	दा – रा दा | – रा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२००	२	निगासा गम गम गम	निसासा गम गग गम
२०१	११	दा- ददा -र दिर	दा- रदा -र दिर
२०१	१५	मंमं मंमं मंमं गं	मंमं मंमं मंमं गं-
२०२	१०	ग म ग म	प म ग म
२०५	१६	ग मम प ग	ग मम प ध
२२८	१२	दा दिर दिर दा | -रा दा दा	दा दिर दिर दा | -रा दा रा
२३१	९	दा रा दा दिर | दा रा दा दिर	दा रा दा दिर | दा दा रा दिर
२३२	६	-दा दिर दिर	-रा दिर दिर
२५१	अन्तिम	दा दा -रा	रा दा -रा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७७	८	दा– रदा रदा –	दा– रदा –र दा
२८१	८	रे– रेनि –नि सा	रे– रेनि –नि सा
२९२	अन्तिम	दा दिर दिर दारा	दा दिर दिर दिर
३०५	१५	सां– सांनि –नि सांसां	सां– सांनि –नि सांसां
३२०	११	जिसे	जिसे
३२१	१५	झाले को	झाले की
३२४	५	दारा दादा रारा	दारा दारा रारा